सूर्यकरण पारीक

मूलचन्द 'प्राणेश'

RJ
817.509 2
P 217 M

भारतीय
साहित्य रो
निर्माता

RJ
817.509 2
P 217 M

अस्तर माथै छप्योड़ी मूरतां री छिब में राजा सुद्धोदन रै दरबार रौ दरसाव : ज्यां में तीन जोसी, भगवान बुद्ध री मां, रांणी माया रै सुपना नै अरथावै। दारै हेटै बैठौ मुंसी अरथाव रौ ओलियौ मांडै। भारत में लिखावट री हटोटी रौ कदास औ सब सूं जूंनौ प्रमांण।

नागारजुनकोंडा, दूजौ सईकौ ई.
पसाव : रास्ट्रीय संग्रहालय, नवी दिल्ली

भारतीय साहित्य रा निर्माता

सूर्यकरण पारीक

मूलचन्द 'प्राणेश'

साहित्य अकादेमी

Suryakaran Parikh : A monograph in Rajasthani by Mool Chand 'Pranesh' on the Rajasthani author. Sahitya Akademi, New Delhi (1995), Rs. 15.

© साहित्य अकादेमी
पैली खेप १९९५

साहित्य अकादेमी

प्रधान कार्यालय

रवीन्द्र भवन, ३५, फ़ीरोज़साह मारग, नवी दिल्ली ११० ००१
विक्रय विभाग : 'स्वाति', मन्दिर मारग, नवी दिल्ली ११० ००१

क्षेत्रीय कार्यालय

जीवनतारा बिल्डिंग, २३ ए/४४ एक्स, डायमंड हार्बर रोड, कलकत्ता ७०० ०५३
१७२, मुम्बई मराठी ग्रंथ संग्रहालय मारग, दादर, बम्बई ४०० ०१४
३०४-३०५, अन्ना सलाई, तेनामपेठ, मद्रास ६०० ०१८
१०६, जे. सी. मारग, बंगलौर ५६० ००२

RJ
817.5092
P217M

मोल : पन्दरां रिपिया
ISBN 81-7201-791-X

115859
1/11/2004

लेज़रसैटिंग : पैरागान एन्टरप्राइसेज़, नवी दिल्ली ११० ००२
मुद्रक : सुपर प्रिंटर्स, दिल्ली ११० ०५१

Library IIAS, Shimla
RJ 817.509 2 P 217 M
00115859

प्राक्कथन

श्री सूर्यकरणजी पारीक आपरो विद्यार्थी जीवन पूरो कर परार जद कर्म-क्षेत्र में उतरिया तो उणां राजस्थानी भाषा अर साहित्य रै उद्धार रो लक्ष्य बणायो। इण सूं पैला राजस्थानी भाषा अर साहित्य री थिति कोई वखाण जोग नहीं ही। पाठकां नै राजस्थानी रै नांव ऊपर साळी-जीजा रा गीत, उमराव, रसिया, देवर-भाभी रो ख्याल, काकी-जेठूते रो ख्याल, मामा भाणेजी रो ख्याल, हेड़ाऊ-मेहर री रम्मत, फागण री धमालां, ब्याव में गाईजणआळा लुगायां री गाळियां (सीठणा) इत्यादि सस्तो साहित्य मिळतो। इण साहित्य नै सुणर भलै आदम्यां री आंख्या सर्म सूं झुक जावती। दूसरै प्रदेश रै रैवासी विद्वानां इणतरै रै साहित्य नै ही राजस्थानी साहित्य माना लियो अर इणरी खिल्ली उडाई।

राजस्थानी-भाषा रै साहित्य में वातां, ख्यातां, पट्टां, परवानां, बहियां, प्रबंध-काव्य अर खंड-काव्य रै रूप में अथाह सामग्री भरी पड़ी ही, पण बा ही वस्ता-बुगचियां में बंद। इण सामग्री तांई साधारण पाठक तो कांई बडा-बडा विद्वानां तक री पहुंच नहीं ही।

श्री पारीकजी संगळां सूं पैला राजस्थानी भाषा, साहित्य अर उण रै कवियां रै बारै में मोटा-मोटा लेख लिखर उण दिनांरी नामी पत्र-पत्रिकावां हिन्दुस्तानी, काशी नागरी प्रचारिणी, माधुरी, सरस्वती, चांद इत्यादी में प्रकाशित करवाया। इण प्रयत्न सूं विद्वानां रै सामनै राजस्थानी री सही तस्वीर उभरी, राजस्थानी भाषा रै बारै में एक भ्रम औ फैल्योड़ो हो कै—राजस्थानी हिन्दी री एक उपभाषा (बोली) है। इण भ्रमरो प्रभाव ओ हुयौ कै अनेक हिन्दी विद्वानां राजस्थानी नै बिना समझ्या-बुझ्यां ग्रंथांरी टीकावां लिखदी अथवा मूळ ग्रंथा नै संपादित करर प्रकाशित करवा दिया। इण प्रयत्न सूं अर्थ री जागा अनर्थ री सृष्टि हुयगी अर आगै आवण आळी पीढ़ी इण अर्थां नै देखर चकराय गी। आज भी इण तरै रा ग्रंथ बडै-बडै विद्यालयां में पढाईजे है। पढाणिया कितरो कोई सही समझ सकै है, आप खुद भी इणरो अंदाज लगाय सको हो।

श्री पारीकजी रै संपादन अथवा सहसंपादन में जिकै अणमोल ग्रंथ प्रकाश में आया, उणां में वेलि श्रीकृष्ण रुकिमणीरी, ढोला मारूरा दूहा, राजस्थानी रा

लोकगीत, भाग २, राजस्थान री प्राचीन वातां, राजस्थानी रा दूहा इत्यादि प्रमुख है। इणां प्रकाशनां सूं राजस्थानी री सही तस्वीर लोगां रै सामनै आई। श्री पारीकजी मै काम करणै री अपूर्व क्षमता ही। साथै ही वै आपरै संपादनां नै ऊंची-ऊंची जगावां सूं प्रकाशित भी कराय देवता पण दुर्भाग औ कै ऊमर बहुत थोड़ी लाया।

म्हैं इण पोथी में श्री पारीकजी रै जीवण अर साधना रै बारे में थोड़ै में घणी वात कैवणै रो प्रयत्न करियो है। म्हारै इण प्रयत्न सूं पाठकां नै श्री पारीकजी रै बारे में जाणणै सारू थोड़ो-बहुत ही सहारो मिळसी तो हूं अपणै-आपनै धन्य मानसूं।

झझू (बीकानेर)
गांधी जयंती, १९९४

– मूलचन्द 'प्राणेश'

अनुक्रम

भूमिका	६
पारीकजी रो वंश-परिचय अर कुळ परंपरा	१२
पारीकजी री कार्य-प्रणाली अर कार्य	१६
नाटककार अर रंगमंचीय रुचि आळा पारीकजी	२६
पारीकजी रै नाटकां में वीररस अर लोक संसकृति	३१
पारीकजी रो संपादक स्वरूप	६०
उपसंहार	६१

भूमिका

भारतीय साहित्याकाश में श्री सूर्यकरण पारीक रौ उदय अेक धूमकेतु रै रूप में हुयौ। उणां आपरी प्रतिभारी चमक सूं साहित्य सेवियाँ रा हिड़दाभर दिया। छोटी सी उमर में उणाँ जिकै ही काम में हाथ घाल्यौ, बौ पूरौ हुवतौ ही दीस्यौ। श्री पारीक खुद सर्जक, समालोचक, नाटककार, चित्रकार, तथा गायन-विद्या पारंगत हा। ऊपर लिखी सगळी विद्यावां उण दिनां रै ख्यातिप्राप्त विद्वानां रै चरणां में बैठर उणां विधिवत सीखी ही। अेक तरह सूं बै सर्वजाण हुवता थकां ई कोई काम अेकला नीं करणौ चावता। उणांनै मित्र बणावणै री अर मित्रता नै निभावणै री पूरी कळा याद ही। ठा. श्री रामसिंहजी जैहड़ा मित्र तौ दोय देह अेक प्रांण हा। बीजा लोग ई जिका उणांरै सम्पर्क में आया, ता उमर श्रीपारीक नै नीं भूल्या

भा. वि. मं. शोधप्रतिष्ठान, वीकानेर आपरी शोधत्रैमाासिकी 'वैचारिकी' रौ स्वातन्त्र्योत्तर राजस्थानी साहित्य अंक श्री सूर्यकरण पारीक री ओळूं नै भेंट करियौ। उणरै संपादक श्री सत्यनारायण पारीक आपरै संपादकीय में लिख्यो-" आधुनिक राजस्थांनी-साहित्य रै इतिहास में सन् १६२८ ई. में राजस्थांनी त्रय-स्व. सूर्यकरण पारीक, ठा. रामसिंह व स्वामी नरोत्तमदास-रौ उदय अेक प्रमुख युगान्तकारी घटना ही। संदेहातीत गुणां सूं समन्वित अै राजस्थांनी रा नेता, प्रदेश री बहुत बडी जनता नै आप रै गौरवपूर्ण अतीत व साहित्य रै प्रति अनुप्रांणित करता रह्या। इणां रै कांम करणै रै ढंग में पर्याप्त ओज हौ। राजस्थांनी साहित्य नै सामंतां रौ बुद्धि विलास मात्र को विषय अर गंवारू तथा अश्लील गीतां रौ साहित्य समझण आळै लोगां नै इणां आपरै अभूतपूर्व कांम सू देखणै परखणै री अेक नूंवी दीठ दीवी, जो जनपदीय भाषावां रै आंदोलन रै इतिहास रै अेक स्वर्णिम पृष्ठ है। वै वास्तव में सिंहपुरुष हा। इणां में ई केई बातां में स्व. पारीकजी रौ व्यक्तित्व सगळां सू घणा आकर्षक हौ। बै भावुकता सूं ओत-प्रोत हा अर वांरी बुद्धि मौलिकता सूं भरीपूरी ही। अंग्रेजी, हिन्दी अर राजस्थांनी तीनां में उणांरी अपार गति ही। बै अेक गहन अर मौलिक विचार पद्धति व क्रिया-विधि रा प्रवर्तक हा।

स्व. पारीकजी रौ योगदान राजस्थानी आंदोलन री प्रारंभिक अवस्था में अल्प विदित हुवणै रै उपरांत बहुत महत्वपूर्ण अर विशेष अध्ययन जोगौ है। बौद्धिक अर साहित्यिक दीठ सूं प्रसिद्ध आपरै सहयोगियां में बै कितरा प्रतिभा सम्पन्न हा, आ बात उणांरै ही सहृदय-सुहृद मित्र ठा. रामसिंह जी रै संस्मरणात्मक लेख सूं जांणी जा सकै। स्व. पारीकजीरी शिक्षा-दीक्षा स्वतन्त्रता रै प्रेरक गढ, वाराणसी में हुवणै रै कारण उणां में साहित्यिक अभिरुचि रै साथै-साथै देशप्रेम री अेक अपूर्व लौ जागी ही। गया में आयोजित अखिल भारतीय कांग्रेस महासम्मेलन में अेक स्वयंसेवक रै रूप में स्व. पारीकजी रौ उणमें सांमल हुवणौ, इण बात रौ पुख्ता प्रमांण हौ। (राजस्थानी में अनुवादित)

श्रीपारीकजी नै देश-भक्ति अर समाज सेवा तो विरासत में मिल्या हा। "बै गांधी-युग रा व्याख्याकार हा। वां दिनां रै राष्ट्रीय-आंदोलनां री छिंया आपरै निबंधां में दीसै। "शून्यग्राम" में सूतकातणौ, विदेशी चीजां रौ बहिष्कार, खद्दर पैरणो आद बातां ऊपर पाठकां रौ ध्यांन खींचीज्यौ है। "चित्तौड़ के संस्मरण", "पराधीन सुपनै हूं सुख नांही"। "शून्यग्राम" आद निबंधां में पारीकजी अतीत रै गौरव नै याद करणै रै साथै-साथै उण दिनांरी दुर्दशा कांनी संकेत करियौ। बै परम पावनी, सत्यव्रता, धनधान्य-संपन्ना, वीर भोग्या वसुंधरा" री संताना री दुर्दशा ऊपर दुखी हुय जाता हा। उणांरौ धीरज अर विश्वास टूटतौ सौ लागै। "पतन की निमन्तम दशा" उणां रै मानस नै बराबर कचोटती रैवै। प्रलय रा नारकीय देखाव उणांरी आंख्यां रै सामनै बराबर घूमता रैवै, किन्तु बै उण करुण-कथा ने भूलर, अकिंचन बोध नै परै हटाय'र, नैराश्य रै अंधकार में आशा रौ दीयौ जगाय'र, आत्मग्लानि रै ग्रियमांण भावां में नूंवी दीप्ति भर'र स्वतंत्रता री बात सोचै है –"भारत अबार भी वोही भारत है, उणरा भीषण बलिदान कदेई निष्फळ नहीं हुसी"। (चित्तौड़कं संस्मरण); (सू. क. पा. नि. सूं अनुवादित)

पारीकजी मित्र वणावणै में अर मित्रता निभावणै में भी सिद्ध-हस्त हा। उणांरै ठा. रामसिंह जी रै नांव सूं लिख्यै अेक कागद सूं ठा पड़ै कै पारीकजी आपरी मित्रता निभावण खातर कितरी सावधानी राखता। राजस्थानी भाषा री प्रसिद्ध-रचना "श्री कृष्ण रुक्मिणी री वेलि" उण दिनां छपती ही। पारीकजी उण दिनां पिलाणी में रैया करता तथा वेलि रा प्रूफ भी बै खुद ही देखता। वेलि री पाद टिप्पणियां रौ काम उणां स्वामी नरोत्तमदासजी नै सूंप्यौ हो। पण स्वामी जी उणनै चलताऊ काम करै ज्यूं करनै भेज दियो। प्रूफ पढ़ती बेळा श्री पारीकजी नैं ठा लाग्यौ कै काम तो गलत हुयग्यो अर उण रै सुधार करणै में मूळरूप नै तैयार करणै सूं भी ज्यादा समय लागण लाग्यौ। इण काम सूं दुखी हुयर उणां ठा. रामसिंह जी नै कागद लिख्यौ । कागद वेलि री छपाई सूं संबधित है। इण प्रसंग रो उल्लेख करता पारीक जी लिख्यौ" ...... अेक साची शिकायत म्हनै भी है। जैड़ी पादटिप्पाणियां स्वामीजी तैयार करी है, उणसूं तो आछो हुवतो कै बै

बणावता ही नहीं। म्हनै पादटिप्पणियां रो प्रूफ देखण में जितरो परिश्रम अर कष्ट उठावणौ पड़यौ है, उतरौ आज तांई कोई भी मानसिक काम करणै में नहीं उठावणौ पड़यौ। पादटिप्पाणियां नै स्वामीजी टैसीटोरी रै अेडिसन सूं बंणाई है, जिणरै प्रत्येक दोहलै सूं म्हारै अेडिसन रा दोहला कुछ न कुछ भिन्नता राखै है। अतएव शब्दां री पादटिप्पाणिरां ५०% तो गलत है ही। आ तो कुछ नहीं। ज्यादा मगज खपावण आळी गळतियां दोहलां रा नम्बर देवण री है। प्रायः ८०% नम्बर गलत लगाईज्या है, ... इणरौ नतीजौ ओ हुयो कै हरेक शब्द रै नम्बर री जांच-पड़ताळ करण खातर म्हारै. अेडिसन रै पेजां नै अठीनै-उठीनै उळटणा पड़ै है अर अेक-अेक शब्द नै फकत याददास्त रै आधार ऊपर अठीनै-उठीनै टंटोळणो पड़ै। कदै-कदै तो अेक-अेक शब्द खातर १५-२०-मिनट लाग जावै, फिरभी जद वो शब्द नहीं मिळै (क्यूं कै समझ लैवो कै नम्बर तो लाग्या है-६२, १२१, ३३, १२ अर वो शब्द मिलै क्रमश : १६६, २४, ३७, २८ में) तद तो अकल हैरान हुय जावै। अेहड़ा पचासूं काटणा पड़ै। बहुत सारै शब्दां रा शब्दार्थ स्वामीजी आपरी बुद्धि सूं अलटप्पू करिया है। शब्दार्थ लिखती वेळा उणां आपांरै अन्वयार्थ नें नहीं देख्यौ। इण खातर म्हनै शब्दार्थ भी बदळणा पड़िया है। सारांश औ है के म्हनै जे खुद नै पादटिप्पणियां बणावणी पड़ती तो कम मैहणत पड़ती, पण प्रूफ देखण में उणसूं चौगुणी मैहणत पड़ै । फेर भी पादटिप्पणियां गळत रैय ही जासी। कठै तांई सुधार कर सकूं हूं। ८ पेज रौ पैलोप्रूफ देखण में ६ घंटा लाग जावै, जिणमें करीब २०० शब्द हुवै है। खैर, जो कुछ हुयौ सो तो हुयौ। स्वामीजी नै भी दोष कोनीं। उणां जल्दी में पादटिप्पणियां बणायदी आपांतो उणांनै पादटिप्पणियां बणावण खातर काफी समय दियौ हो। पण बां उण काम नै पड़यौ राख्यो अर फेर जद बहुत बार मांग्यौ तो जल्दी-जल्दी करकरार दे दियौ। म्हैं इण बात नै बधायर नहीं लिखी है। बिलकुल साची लिखी है । पण आप स्वामीजी नै मापूली तरीकै सूं कैय दीजौ उणांरौ चित्त क्षुब्ध नहीं हुवै। बै जे फील करसी तौ आपांनै अगलै सम्पादकीय काम में सहयोग देवता संकोच करसी। अै बातां सिर्फ आपनै हीज लिखी गई है। " (दि. ४/१२/१६३१ रै कागदरौ" अनुवाद)

इण कागद रै पढणै सूं पतौ चालै के श्री पारीकजी खुद दुख पायर भी स्वामीजी नै साची बात लिखर उणांरौ जी नहीं दुखावणौ चायौ। कागद में भी ठा. रामसिंहजी नै विशेष रूप सूं भोळावण दी है कै-"अै वातां फकत आपनै हीज लिखी है"। मित्रता जद ही निभ सकै।

पारीकजी रै जीवन-विकास अर विचार-परिपक्वता में वाराणसी रौ बहुत बडौ हाथ रैयौ है। उणां दिनां रै अंग्रेजी-राज्य रै कसीजतै सिकंजै में जिकौ देशप्रेम, राष्ट्रीयता, सनातन-धर्म अर वैदिक-विज्ञान कानी पारीक जी री आस्था पनपी, बा वाराणसी निवास रै समय जिका स्वनामधन्य विद्वान अर राष्ट्रीय-विचारधारा ऊपर मजबूत रैवणियै गुरुवांरी ही कृपा ही।

पारीकजी रो वंश-परिचय अर कुळ परंपरा

पारीकजी उपनांव सूं ही पतौ चाल जावै है कै अै ब्राह्मणाँ री छह-न्यात-गौड, गूजरगौड़, दाहिमा, खंडेलवाल, शिखवाळ अर पारीक-मांय सूं पारीक न्यात रा हा। इणां छहू न्याता में रोटी-व्यवहार तो आपौपरी में है पण वेटी-व्यवहार आप-आपरी न्यात में ही हुवे। ब्राह्मणां से आ छह-न्यात मध्यकालीन राजपूत-सभ्यता री पोषक है। राजपूत, ओसवाळमहाजन अर छह-न्यातिया ब्राह्मण सनातन धर्म नै मानै, पंचदेव री पूजा-अर्चना करै अर वैदिक-कर्म-कांडां में आस्था राखै। अै लोग शराब अर मांस रो तो परहेज राखै, पण तम्बाखू रौ सेवन करणौ खुलौ है। इणांसूं अलावा राजस्थान में पुष्करणा ब्राह्मण रौ भी जाड है। अै लोग तम्बाखू नै पीवै तो कोनी, पण सूंघै अर खावैं जरूर है।

कैवै है कै-पारीकां रा बडेरा पुराणी शास्त्रकार-परीक्षा रा परीक्षक हा। कोई भी नूंवौ शास्त्र तद तांई प्रामाणिक नहीं मानीजतौ, जद तांई बो शास्त्रकार परीक्षा में सफल नहीं हुवतौ। अकबर रै शासन-काल में आ शास्त्रकार-परीक्षा चालू ही। इण परीक्षा में ग्रन्थ-लेखक आपरौ ग्रन्थ, बादशाह, राजा-महाराजा, ठिकाणै तालुकैदार अथवा काशी जैहड़ी विद्वान-सभा रै सामनै राखतौ तथा परीक्षकां रै सामने सुणावतौ। उणनै सुणर सगळा-विद्वान अेकै सुर सूं उणनै मान्यता दे देवता। ता पछै उण मान्यता-प्राप्त ग्रंथ रौ विद्वानां में चलण हुय जावतौ। 'परीक्षक' नै राजस्थानी-भाषा में 'पारखी' कैवै अर 'परीक्षा' नै 'परख'। कालान्तर में औ 'पारखी' शब्द ही 'ई' स्वर री अदला बदली सूं 'पारीख' अथवा 'पारीक' हुयग्यौ। ओसवाळ महाजना में भी पैला रै जमानै रा रत्न-परीक्षक आज 'पारख' अथवा 'पारीख' कैयीजै है। पारख अथवा पारीख गुजराती-समाज में भी है। इणसूं उपरलै 'परीक्षक' उपाधि री सच्चाई में संदेहरी गुंजाइश नहीं रैवै।

पारीकजी रौ जलम पारीकां री पुरोहित उपशाखा में हुयौ। इणांरा दादौसा आपरै पुश्तैनी गांव श्री मिलकपुरा रा रैवासी हा। औ गांव उणाँरै बडैरां नै जयपुर राज री तरफ सूं पुरोहितां नै शासण दियोड़ौ हो। इण गांव में पुरोहितां रौ काफी मोटौ धड़ौ है। पारीकजी रा दादौसा पं मनिरामजी आपरै मोटियांरगाळै में गांव

श्री मिलकापुरै नै छोडर कमावण-खावण खातर बीकानेर आयर बसग्या। बीकानेर में आपरौ व्यापार-तिजनेस चाल पड़यौ अर चोखी आमदनी हुई। इणां आपरी एक बेटी अर पांच बेटां रा विवाह संबंध बीकानेर रै पारीकां में कर लिया। इणसूं आपरी प्रतिष्ठा तो बधी ही, साथै ही सदा रै खातर बीकानेर नगर रा रैवासी बणग्या। माता लिछमी री पूर्ण कृपा अर आपरै टाबरां रै भाग्योदय सूं औ पुरोहित परिवार पारीकां में प्रमुख बणग्यो अर इण समाज में नेता (पंच) रै रूप में ओळखीजण लाग्या।

इंयां तो पं. मुनीरामजी रा सगळा बेटा प्रतिभा संपन्न हा, पण मोभी उदयलाल आपरी प्रतिभा अर बुद्धि-बलसूं बीकानेर नगर में एक सार्वजनिक नेता रै रूप में प्रसिद्ध हुयग्या। अै बीकानेर नगर रा पैला मैट्रिक-छात्र हा। बाद में इणां दरबार हाई स्कूल (वर्तमान डूंगर कालेज), बीकानेर में अध्यापक बणग्या। आप अंग्रेजी से साथै-साथै संस्कृत रा भी आछा विद्धान हा। बचपन सूं ही इणांरी वृत्ति सार्वजनिक कामां में लाग्यौड़ी ही। बाद में संस्कृत-भाषा रै सांगोपांग उद्धार सारू कमर कसली। इणांरै सद्-प्रयत्न सूं गुणप्रकाश सज्जनालय जैहड़े वाचनालय अर नागरी-भंडार जैहड़ी साहित्य सेवा आळी संस्थावां जलमी अर आगै सूं आगै बधी। इणांरै प्रयत्न सूं नगर में और भी छोटा-मोटा वाचनालय अर पुस्तकालय थरपीज्या। अै बीकानेर नगर मै व्यापोड़ी अशिक्षा नै साचै मनसूं हटावणी चावताहा और उणरी जागा अेक पढ़ियै-लिखियै समाज री कल्पना करता। पारीवारिक मतभेद रै कारण उणां आपरै जीवन रै छेकड़लै दिनां में घर छांड दियौ अर आपरै एक जजमान रै अठै जायर रैवण लागग्या। अठै भी उणां साहित्य, भाषा अर संसकृति रै उत्थान सारू काम चालू राख्यौ, पण ऊमर थोड़ी लाया सो सगळै कामां नै अधूरा ही छोड़र सन् १९१६ रै फागण में काळ करग्या। इण समय पं. उदयलालजी री ऊमर फकत पैंतीस वर्षां री ही। अै पंडितजी श्री सूर्यकरणजी पारीक रा पिता हा।

श्री सूर्यकरण पारीक रौ जलम सावण बदि १४ सं. १९५९ (तदनुसार २ अगस्त, १९०२ ई.) में हुयौ। इणारै पिता पं उदयलालजी रौ स्वर्गवास हुयौ तद इणांरी ऊमर फकत तेरह वर्ष री ही अर हाई स्कूल री सातवीं क्लास में पढता हा। इणांरौ विवाह हुयां, अजै कोई घणां दिन नहीं हुया हा। आपरै कमजोर कांधां ऊपर तीन छोटा भाई, अेक बैन, पत्नी अर मां कुल मिलायर सात आदमियां रै परवार रो भार आ पड़ियौ। आपरै पिताजी रौ पारीवारिक-मतभेद अर सार्वजनिक कामां में जीवन लगाय देवण सूं घर में धन रै नांव ऊपर फूटी कौड़ी तक नहीं छोडी। भयंकर अर्थ-संकट। पण आपरा दादोसा पं. मुनीरामजी जितरै जीवता रैया, इणांनै आर्थिक-सहयोग मिलतौ रैयौ दुर्भाग्य सूं दो वर्ष बाद दादो सा भी रामशरण हुयग्या। उणांरै जावतां ही आर्थिक-सहयोग तो बन्द हुय ही गयौ, पण

साथै ही काकां इण परिवार ऊपर अत्याचार करणा पैळाय दिया। बै तरै-तरै सूं इण परिवार नै दुख देवता। उणां खुद आपरै श्री मुखसूं अेक जीवनी-लेखक नै बतायौ कै दरखतां रै छोडां रै साथै लप-दोय लप बाजरी रळायर पीस्योड़ै आटै री रोटी मिल जावती, उण दिन ने अै धन्य मानता। इणं तरै दोरौ-सोरौ काळक्षेप हुवतौ। निस्वार्थ समाज सेवा री झक में पिता एक रातौ पईसो भी घर में नहीं छोडयौ, खुदरी कमावण री ताकत नहीं अर साथै ही पारिवारिक सम्पति नै इणांरी नाबाळगी नै देखर इणा रै काकां आपोपरी में बंदर-बांट कर'र घर में धरली। अब करै तो कांई ! च्यांरूकानी अंधकार ! प्रकाश री एक किरण तक नहीं सूझै ! लोगां पारीकजी नै सलाह दी कै-पढाई-वढाई नै तो इस्तीफौ देवौ अर कोई छोटी-मोटी नौकरी करलो, जिकैसूं परिवार में आटौ बापरै। एक करीबी रिश्तैदार एक सात रूपिया आळी चपरासी री नौकरी भी खोज काढी। पण हुवंतकार पारीकजी रै मन में गुलामी करण आळी बात नहीं जची। इण ओळया रै लेखक नै पारीकजी रै एक निजी रिश्तैदार बतायौ कै उण दिनां घर रौ आधौ पारीकजी री माताश्री रै आटे री पीसाई सूं चालतौ। जरूर ही अै दिन पारीकजी रै विखै रा दिन हा।

पारीकजी दृढ-व्रती मिनख हा। अवस्था छोटी हुई तो कांई हुयौ। ससम्मान जीवणै री हिम्मत तो उणांनै विरासत में मिली ही। ज्यूं-त्यूं करनै पारीकजी सन् १६२० में इलाहाबाद विश्वविद्यालय सूं मैट्रिक री परीक्षा पास करली। आगै पढणै सारू बै बनारस गया परा। मिनख में मिनख री पैचाण करण आळा तत्कालीन बीकानेर नरेश महाराजा गंगासिंहजी आपरी प्रतिभा नै देखर पच्चीस रूपिया महिणै री छात्र वृति बांधदी, इणसूं आपरौ आर्थिक-संकट घणकरौ सोक दूर हुयग्यौ। अब बै अेकाग्रचित्त हुयर पढाई में लाग ग्या। सन् १६२१ ई. मै बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय सूं 'विशारद' री उपाधि प्राप्त करी। सन् १६२२ ई. इटंर मीडियेट, सन् १६२४ में प्रतिष्ठा रै साथै बी. अे अर सन् १६२६ ई. में अेम.अे (अंग्रेजी) पास करी। आप इण विद्यार्थी-जीवन में आपरौ चरित्र अनुकरणीय मानीज्यौ तथा जिकां अध्यापकां उणांनै पढ़ाया बे सब पारीकजी रा प्रशंसक बणग्या।

आप कानून री पढ़ाई अेल. अेल. बी. भी शुरू करी, अर पैलौ खंड पास भी करियौ, पण आर्थिक-संकट अर रूचि-शैथिल्य रै कारण आगै पढ़ाई जारी नहीं राखीजी।

आप आपरी छोटी सी ऊमर में स्वाध्यायि रै बळ ऊपर, अंग्रेजी, हिन्दी तथा संस्कृत साहित्य रौ गहरौ अध्ययन करियौ। आप पाश्चात्य अर भारतीय दर्शन रौ भी आछौ अध्ययन करियौ। काशी रै संगीत विद्यालय में जायर नियमित रूप सूं प्रसिद्ध संगीत शास्त्रियां सूं संगीत-शास्त्र रौ भी अध्ययन करियौ तथा

साधना भी करी। आप एक सुप्रसिद्ध चित्रकळा अध्यापक रै चरणां में बैठर चित्रकळा रो भी अभ्यास करियौ।

वाराणसी-प्रवास में रैयर विद्याभ्यास पूरौ करर पारीकजी पाछा बीकानेर आया। आवतां ही मोहता मूलचन्द विद्यालय, बीकानेर में प्रधानाध्यापक रै पद ऊपर नियुक्त हुयग्या। अठै सूं बै बीकानेर रै राजस्व मंत्री रै कार्यालय में अधीक्षक पद ऊपर थरपीज्या ! इण नौकरी में आपनै स्वास्थ्य रौ साथ नहीं मिल्यौ तथा थोड़ी-बहोळी चिण-पिण रैवण लागी। पं. मालवीयजी रै कैवण सूं पारीकजी आ नौकरी छोड दी। पण्डितजी आपनै साहित्य-सेवा रौ व्रत झलायौ । केई दिन स्थानीय डूंगर कालेज, बीकानेर में अध्यापक भी रैया। पारीकजी इण पीरियड में हिन्दी में अेम. अे परीक्षा पास करी। ता बाद सन् १६२६ ई में बिड़ला कालेज, पिलानी में प्राध्यापक नियुक्त हुया। जीवन पर्यंत बै बिड़ला कालेज, पिलानी नै ही आपरी सेवावां देवता रैया। वि. सं. १६६६ री फागण बदि १३ नै पारीकजी इण नश्वर देही नै छोडर यश-देही धारण करी। उण वखत बै बिड़ला कालेज, पिलाणी में वाइसप्रिंसीपल हा।

पारीकजी री कार्य-प्रणाली अर कार्य

पारीकजी सहकारिता में विश्वास राखता। हलां कै बै प्रत्येक काम नै अेकला ही मूर्त-रूप देवण में समर्थ हा, पण बै कोई भी काम अेकला ही सिध चाढर उणरौ जस नहीं लेवणौ चावता। उणमें आपरै इष्ट-मित्रां रो भी बराबर रौ हिस्सौ राखण में उणांरी प्रवृति ही। इण हीज कारण पारीकजी रा खुदोखुद रा लिखर छपायौड़ा ग्रन्थ बहुत थोड़ा है। वेलि अर ढोला मारू रा दूहा जैहड़ा यशस्वी ग्रन्थां रौ संपादन उणां सहकारिता रै आधार ऊपर करियौ है।

श्री सूर्यकरणजी पारीक अर ठा. रामसिंहजी रै बचपणै में ठा. रामसिंहजी री बैन पूज्या श्री कृष्णाकुमारीजी (धर्मपत्नी बीकानेर नरेश महाराजा श्री गंगासिंहजी री) री शिक्षा-उपदेशां रौ विशेष प्रभाव रैयौ। मानव हिड़दै री सबसूं कोमळ वा सुषुप्त भावनावां नै उणां सूं ही प्रवाह मिल्यौ। उणांरै असामयिक रामशरण हुय जावण सूं इणां दोनुवां रै जीवण ऊपर बहुत गैरौ आघात लाग्यौ। इणां दोनुवां री साहित्य-साधना में बै ही सरस्वती-स्वरूप हा। (वैचारिकी भा. २ अंक ३-४ सूं)

सन् १९२० ई. में पारीकजी आपरै इष्ट-मित्रां नै साथै लेयर "प्रेमाश्रम" नांव री संस्था री थरपणा करी। इण संस्था रै माध्यम सूं "कानन कुसुमांजळी" नांव री पोथी भी प्रकाशित कराई। इणी दिनां "प्रेमाश्रम" नांव री अेक ऊंचै दर्जे री हस्त-लिखित पत्रिका भी काढी, जिण में हिन्दी, राजस्थानी अर अंग्रेजी रा ऊँचै दर्जे रा लेख दिरीजता। इण पत्रिका रै काढण में ठा. रामसिंहजी अर स्वामी श्री नरोत्तमदासजी रो सक्रिय सहयोग मिल्यौ। आ हस्तालिखित पत्रिका "हिन्दू-विश्वविद्यालय, वाराणसी" में अेक ठावी पत्रिका रै रूप में ओळखीजी (इण पत्रिका रो पैलौ अंक स्वामी श्री नरोत्तमदासजी रै पुस्तकालय में सुरक्षित है)

वाराणसी रै विद्यार्थी जीवन में जद श्री पारीकजी अर ठा. रामसिंहजी गंगा रै कनारै मिळ-बैठता तद अनेका अनेक साहित्यिक योजनावां बणती अर बिखरती। पण, हिन्दी-साहित्य नै सर्वोच्च पद ऊपर पहुंचावणै री चिंता हरदम सालती रैवती। उणा दिनां रै अंग्रेजी राज में हिन्दी-भाषा री थिति डगमग ही। सगळौ काम अंग्रेजी में हुया करतौ। सभा-सोसायटी में जिकौ कोई वक्ता हिन्दी में बोलतौ, उणनै

संभ्रात लोग उज्जड अर गंवार ही गिणता। जदपि हिन्दी री उन्नति रौ मूळ-मंत्र आर्य समाज रा संस्थापक स्वामी दयानन्दजी बहुत-पैला फूक चुक्या हा अर महात्मा गाँधी जैहड़ै तपस्वियां उण रौ समर्थनपण करियौ, फेर भी जितरै विश्वविद्यालयां अर राज रै काम-काज में हिन्दी नै प्रमुखता नहीं मिळै तद तांई सगळौ काम अधूरौ ही हो। पारीकजी आपरी मातृ-भाषा राजस्थानी नै हिन्दी री पूरक भाषा रै रूप में मानता। इणांरौ दृढनिश्चय हो कै जै सही मानै में हिन्दी भाषा नै पनपावणी है तो राजस्थानी-भाषा रा महत्वपूर्ण ग्रन्थ बस्ता-बुगचियां में पड़िया, प्रकाश री किरण नै उडीकै है, उणांनै आछै ढंग सूं संपादित करर साहित्य-समाज रै सामनै लावणा चाहीजै।

जठै चाह हुवै, बठै राह निकळ आवै। पारीकजी री भेंट प्रज्ञाचक्षु (जळम सूं आंधा) बारहठ रामदान जी खिड़िया सूं हुई। इणां दोनूं मित्रां नै "वेलि" रा प्रथम हिन्दी टीकाकार तथा अनन्य-भक्त महाराज श्री जगमालसिंहजी सूं मिलवाय दिया। महाराज कनै वेलि री हिन्दी टीका लिख्यौड़ी तैयार ही, पण उणनै आधुनिक पोथी रै रूप में संपादित कर'र प्रकाशित करणै खातर जोग विद्वानां री जरूरत ही। पारीकजी अर ठा. रामसिंहजी सूं मिळर बै घणा राजी हुया अर आश्वास्त भी। उणां वेलि ऊपर जितरौ काम करियौ हो, पूरौरपूरौ इणां दोनूं मित्रां नै सूंप दियौ। पारीकजी अर ठा. रामसिंहजी वरसां पैली बैठर राजस्थांनी री प्रतिष्ठा खातर जिका सुपना संजोया हा, बै इण वेलि री मार्फत पूरा हुवता लाग्या।

पारीकजी प्रेमाश्रमी भावना रा पुजारी हा। "काननकुसुमान्जली" में इणांरै साथै तीन-च्यार सहयोगी हा, "रतिराणी" में फकत तीन ही रैया अर वेलि रै कामकरण में घटर फकत दोय हीज रैया। इणरौ पारीकजी नै बडौ दुख हो। बिना सहयोगियां रै जिको कोई काम हुवतौ, उणांनै अधूरौ-अधूरौ सो लागतौ। पण बणीरा किसा बखाण ! पारीक अर ठा. रामसिंहजी वेलि रै काम में जुटग्या। पैलो-पैलो ही काम हो, इण खातर इण काम नै साज-संवार र साहित्य-जगत रै सामनै राखणौ हो। वेलि रौ सम्पादन बिल्कुल आधुनिक पद्धति सूं करीज्यौ। उपलब्ध प्रतियां रा पाठान्तर, विस्तृत हिन्दी टीका, महत्वपूर्ण कोश अर पादटिप्पाणियाँ रै साथै बहुत बडी समालोचनात्मक प्रस्तावना लिखी। परिशिष्ट में ढूंढाड़ी अर संस्कृत टीकावां हूबहू दी। इण तरै वेलि रौ अेक सांगो-पांग संस्करण तैयार हुयग्यौ।

जितरौ बढिया संपादन हुयौ, उण प्रकाशित करणै आळी संस्था भी अेक प्रतिष्ठित संस्था हुवणी चाहीजै। पारीक जी अर रामसिंहजी दौड़-धूप करर "हिन्दुस्तानीअकेडमी, प्रयाग" नै वेलि रै प्रकाशन रौ जुम्मौ भोळाय दियौ। इण रो प्रकाशन सन् १६३१ ई. में हुयौ।

वेलि रै इण तरै रै फूटरै सम्पादन रौ साहित्य-जगत बहुत बडौ आदर करियौ। इण प्रकाशन री शोभा करणियै विद्वानां में–मुंशी अजमेरी जी, महामहोपाध्याय

डा. गौरीशंकर हीराचन्दजी ओझा, श्री विश्वेश्वरनाथजी रेऊ, पं. श्री हरिनायाणजी पुरोहित, पं. रामकरणजी आसोपा, श्री सुनीति कुमार चाटुर्ज्या, श्री ग्राहम टी बेलि, सर जार्ज ग्रीयर्सन, प्रो. श्री गुसेपातुची आद विश्वविश्रुत विद्वान हा।

सर जार्ज ग्रियर्सन तो अठै तांई कैयो कै – "वर्तमान भारतीय भाषा में कोई ग्रंथ अेहड़ौ फूठरौ सम्पादित हुयर शायद ही आयो देख्यो हुवै"।

ओझाजी महाराज वेलि री सम्पादित प्रेस कापी देख चुक्या हा। जद अकेदमी इणरै प्रकाशन री हां भरी तद उणां लिख्यो कै जे ठीक तरै सू आ पोथी निकळै तो साहित्य री बहुत-बडी सेवा हुसी अर अकादमी तथा लेखकां रौ परिश्रम सार्थक हुसी अर अकादमी रौ नांव हुय जासी"

श्री विश्वेश्वरनाथजी री सम्मति रौ अंश–"प्रयाग री हिन्दुस्तानी अकेडेमी राठौड़ महाराज पृथ्वीराजकृत "वेलि श्रीकृष्णरूकमणी री" रौ अनोखी सज-धज रै साथै प्रकाशन करर राजस्थांनियां अर उणांरी भाषा रौ बहुत-बडौ उपकार करियौ है। .... इण वेलि रा अनुवादक महाराज श्री जगमालसिंहजी अर सम्पादक ठा. रामसिंहजी अर सूर्यकरणजी पारीक रै उत्साह, परिश्रम अर विद्वंता री जितरी प्रशंसा करी जावै, थोड़ी है।

इणी तरै अनेक विद्वानां वेलि री मुक्त-कठां सूं प्रशंसा करी अर विभिन्न पत्र-पत्रिकावां में समालोचनावां छपी। इण अेक ही राजस्थांनी-ग्रन्थ प्रकाशित हुवतां ही साहित्य-समाज नै चमत्कृत कर दियौ। जिण सूं मित्र दोनुवा रौ होसलौ बधियौ अर वेलि रै प्रस्तुतिकरण में जिकौ श्रम करियौ उण नै भूलर आगै रै काम में लाग्या।

पारीकजी अर ठा. रामसिंहजी रौ दूसरौ काम हो ढोला मारू रौ सम्पादन। ढोला मारू जदपि अेक जातीय लोक-गाथा-काव्य है। पण उण दिनां रा विद्वान, जिकां में ओझाजी महाराज अर मुंशी अजमेरीजी प्रमुख हा इण काव्य नै आछी निजर सूं नहीं देखता।

इणरौ अेक सजोरौ कारण हो। अजमेर, जयपुर, कोटा-बूंदी कानी सावण री बडी तीज़ ऊपर "ढोला मारु" री सवारी निकळती। इण सवारी में ढोलो ऊंठ रै अगलै आसण में बैठतौ अर लारलै आसण ऊपर बैठती गैणां-गाभां सूं लड़ालूब मारवणी। आ मारवणी आपरै हाथ में आपरी अेक जूती पकड़ियां राखती अर मेळै में बैवतै ऊंठ ऊपर सवार ढोलैजी रै माथै में फड़ाफड़ मेलती जावती। इण देठावनै ने देखर मेळातिया खूब जोर सूं ताळयां बजा-बजार हंसता अर ढोलैजी री सवारी रौ आनन्द लेवता। इण तरै रै देठाव (दृश्य) सूं ढोलैजी री इज्जत में कितरौक इजाफो हुवतौ ! आ वात आप खुद जाण सकौ हो। इणी खातर "दूला मरद" रौ तानौ लोगां में चाल्यौ। "दूलो" "मनै" गयो वीत्यौ आदमी", जिकौ आप री लुगाई री जूत्यां खायर भी मुळकतौ रैवै।

पण "ढोला-मारू-रा-दूहा" ऊपरली घटना सूं न्यारौ काव्य है। इण काव्य रौ नायक ढोलोजी एक राजकुमार है। इणरौ पैलड़ौ ब्याव बाळक पणै (पीळै पोतड़ां) में हुयग्यौ हो, पूगळगढ़ री राजकुमारी "मारवणी" रै साथै, इण ब्याव री खोज-खबर ढोलैजी नै ही नहीं। भुंय अळगी जाणर ढोलैरा माईत भी इण ब्याव नै छानै ही राखण में हा। ढोलौ मोटयार-जवान हुयौ। इणरै माईतां माळवै री राजकुमारी माळवणी रै साथै ब्याव कर दियौ। दोनू जणा जवान-मोटयार हा हीज, राग-रंग में रमता-खेलता रैया।

अठीनै मारवाणी भी जवान हुई। उण अेक दिन सुपनै में आपरै धणी ढोलैजी नै देख्या। दिनूंगै इण सपनै री बात आपरी सांइणी-साथण्यां रै आगै प्रकासी। उणां कैयौ सुपनै में तैं जिकै मर्द नै देख्यौ है, बो हीज थारौ धणी है। खोज-बीण करणै सूं बाळक-विवाह री खबर भी पड़ी। मारवणी रात दिन विलखी रैवण लागी। अेक दिन अेक सौदागर पूगळ ढूक्यौ, उण सूं जाणकारी मिली कै-ढौलै तो दूसरौ ब्याव माळवणी रै साथै कर लियो है अर उणांरा दिन सुख सूं गळ रैया है।

सौदागर री वात सुणर मारवणी रै माता-पिता ने भी चिंता हुई। उणां अनेक बामणां अर नायां नै कागद देयर ढोलैजी नै बुलावणै सारू नरवर भेज्या। पण, न ही कागद लेयर जावणियौ कासिद पाछौ धिरर आयौ अर न ही ढोलोजी आया। हुई आ कै माळवणी बहुत चतर अर हुसियार लुगाई ही। उणनै ढोलैजी रै बाळ-पणै में हुयै ब्याव रौ पतौ चालग्यौ। उण मनमें सोच्यो कै मारवणी रै जवान हुयां जरूर ढोलैजी नै तेड़ण सारू कासिद आसी। मालवणी पूगळ रै मारग ऊपर आपरा भेदिया थरप दिया। उण भेदियों नै अठीनलो कोई भी आदमी मिळतौ, उण सूं हेत घालर बात रौ मरम जाण लेवता अर माळवणी रै हुकम मुजब मारर खाडा बूज कर देवता।

मारवणी भी कम हुसियार नहीं ही। बै इण बात रो अंदाजौ लगाय लियो कै संदेशौ लेयर जावणियौ खेमे-कुसळै ढोलैजी तांई नहीं पहुंचै। मारवणी आपरै माता-पिता नै सलाह दी कै-आप बामण, नाई अर महाजन इत्यादि नै छोडर आपांरा मांगणियार ढाढयां नै संदेशौ देयर मेलौ। भगवान महाराज करियौ तो आपां रौ काम सिद्ध हुय जासी। कारण कै ढाढी गावण-बजावण आळी मंगती जात है अर साथै ही हुसियार भी। अै लोग बीजोड़ां आळै दांई कुड़कै में को पजैनीं।

मारवणी री वात सगळां रै हाडोहाड ढूकगी। ढाढयां नै तेड़र सगळी वात समझाई। मारवणी खुद संदेशां आळा दूहा मारू-राग में बणायर ढाढयां रै कंठै करवाय दिया। ढाढी पूगळ-गढ सूं सीख करी। बै गावता-बजावता नरवर गढ रै ओळा-दोळा जाय बाज्या। माळवणीरै आदमियां रै धकै भी चढिया, पण बै आपरै हुन्नर सूं उणां नै रिझायर साफ कोरा निकळग्या।

ढाढी नरवरगढ पहुच्या। बिना जाण-पहैचाण उणांनै गढ में कुण जावण देवतौ। बां गढ रै नीचै ही आपरौ आसण थरप लियौ। सियाळै री रात ही। उणां कनै ही धूंवी चेताय ली। रोटी-टुक्कर खाय-पीर निरवाळा हुया। सारंग्यां उणांरै कनै हुत्यां ही। धूवीं रै ओळा-दोळा बैठर गावणो पैळाय दियौ। उणांरा आछा-मधरा साद सुणर केई लोग सुणण नै भी आय बैठा। गावणौ जोर ऊपर जोर चड़तौ गयौ। लोग वाह-वाह करर रूपिया बरसावण लाग्या। ढोलैजी भी मौहल रै चौबारै में सूतां-सूतां ढाढयां री गायकी सुणी। उणांरी नींद औजकगी। सारी रात आख्यां मांयकर निकळी। सूरज री ऊगाळी ढोलोजी उठिया, कुरला-दांतण करिया अर मौहल रै नीचलै गायब्यां नै बुलाया। ढाढयां जायर जुगत सूं मुजरौ करियौ। ढोलैजी पूछयौ रे भायां! रातै थां सारी रात ढोलै अर मरवरण रा गीत गाया। आ तो बतावो कै है कुण, जिकांरा थे अेहेडा, फूठरा गीत गावता फिरौ ?

ढाढी तो इतरी वात नै हीज उडीकता हा। हाथ जोड़र ऊभा हुयग्या अर धूर-पेड सूं जितरी बात हुई बा सगळी प्रकाशी। मारवणी रौ नख-शिख रौ वर्णन तो बै रात रा सुण ही चुक्या हा। अब ढोलैजी नै माळवणी री करतूत रौ पतौ चाल्यो।

ढोलोजी पूंगळ जावण सारू संभिया। माळवणी उणांनै सियाळै, ऊन्हाळै अर बरसात रा दुख बतावतां घरै ही रैवण री सलाह दी। पण, ढोलैजी आपरो हठ नहीं छोडियौ तद मालवणी कैयौ कै थांनै जावणौ ही है तो जद हूं नींद में सूती हुषूं तद बूहा जाया। अब माळवणी दिन रात जागरण करै। अेक दिन नींद बाहर कर फिरी तद सूयग्या। ढालेजी नै मौकौ मिलग्यौ अर बै आपरै करहै नै पिलाणर चढ बूहा। करहै री करक सुणर माळवणी नै चेत हुयौ। बै गया, बै गया कैवती उठी तद तांई करहो केई कोसां रौ आंतरौ करग्यौ।

माळवणी बहुत दुखी हुई। उण आपरै सूवै नै सीखाय पढायर ढोलैजीनै पाछो लावण नै मेल्यौ। सूवै लारै जायर बैवतै ढोलै नै सूचना दी कै माळवणीजी तो थांरै चढतां ही फौत हुयग्या, हमें थे चालर हलावौ-चलावौ करौ। ढोलैजी उथलौ दियौ। हुंतो मारग बैवतो बटावू हूं। थे जिका घरै हो बै हीज माळवणी रा सगा-संबंधी हो। थे पाछा जायर माळवणी रौ हलावौ-चलावौ करौ। पईसै टक्कै री ओछ-सांध रैवै तो दीवानजी कनै सूं लेय लीजौ। चोखा बारै दिन कर दीजौ।

सूवै पाछै जायर समाचार दिया। माळवणी रै मन रा चाया नहीं हुया। बा रात-दिन ढोलैजी री ओळू में रोवती रैई।

ढोलोजी धर कूचां-धर मजलां बैवता रैया। दिन रै ढळिया रै मारग में ऊमर-सूमरै रो अेक चारण मिलियो। बै कैयौ-ढोलाजी ! हमें पूगळ जायर फोड़ौ ही देखणौ है। थे जिकी मारवणी खातर उमाद्या हो, बा तों बूढी-झंखर हुयगी। आ बात सुणर ढोलोजी चिंता-मगन हुयग्या। उणां नै उदास देखर करहलै कैयौ-ढोलाजी !

थे जद परणीज्या तद थांरी ऊमर ही तीन बरसां री अर मारवणी री ही डयोढ बरस। अब थे ही बिचार करो कै जद मारवणी बूढी हुयगी तो थे जवान किंया रैया। आ बात ढोलैजी रै समझ में आयगी अर आगै टुर बहीर हुया। मारग में अेक अेवाड़ियौ भळै मिलियौ जिकै बतायो कै मारवणी तो म्हांरी साथण ही, हमें बा बूढायगी। पण ढोलैजी अैवाड़ियै री बात ऊपर ध्यान नहीं दियौ।

हमें पूगळ घणौ अळगौ नहीं हो। मारग बैवतां ढोलै जी नै पूगळ रौ एक चारण वीसू नांव रौ मिळियौ। उण मारवणी रै बारै में सगळी हकीकत बताई अर उणरै रूप-सरूप रौ भी वर्णन करियौ। आ बात सुणर ढोलैजी रै मन में थ्यावस आयौ अर उणां ऊंठ नै तड़काय दियौ।

दिन रै बधाण ढोलोजी पूगळ रै कूवै ऊपर पहुंच्या। उणां रै आवण री खबर रावळै में पहुँची। पिंगळ रै आदमियां आयर ढोलैजी री अगवाणी करी अर बधाय मौहलां में लेय गया।

ढोलैजी री खूब मान-मनवारां हुई। रावळै रा सगळा लोग राजी हुया। मारवणी तो ढोलैजी रो आवणौ सुणर इतरी राजी हुई कै बरसां तांई विरह में अूकळर सूखी काया तुरंत हरी हुयगी। दस-बीस दिनां तांई ढोलैजी रा लाड-कोड करीज्या, पछै आछो दत्त-दायजौ, घोड़ां, ऊँठ, दास, दासियां देयर उणां नै बहीर करिया।

मारग में पैलड़ो पियाणौ करियौ। सगळा लोग जीम-जूठर सूय रैया। ढोलैजी रै दुर्भाग सूं अेक पीवणौ सरप आयर सूती मारवणी नै पी गयौ। भखावटै रा ढोलैजी मारवणी नै संभाळी तो उणां रौ होस उडग्यौ उण रो डील साव ठंडौ अर सास विहूणी काया। मारवणी री आगत देखर सगळा लोग हाका-बाका रैयग्या। पण, हूणी नै कुण टाळै ! ढोलै जी साथै जितरा भी लोग आया हा, उणां नै ऊँठ-घोड़ां समेत पाछा पूगळ मेल दिया। खुद अठीनै-उठीनै सूं चुगर लकड़यां भेळी करी अर चिता बणाई। चिता ऊपर मारवणी नै सुवाणर खुद आप भी उण रै साथै बळणै नै संभिया, इतरै अेक जोगी अर जोगण उठै आयग्या। ढोलैजी नै चिता ऊपर चढतां देखर बोल्या-"बच्चा ! मिनख के पीछै औरत कूं तो बळती देख्या है, पण यहां तो उळटी रीत हुय रैई है औरत कै साथ मरद जळणा चावता है"।

ढोलैजी कैयो "बाबा ! हूं मारवणी बिना एक पल-भर भी नहीं जी सकूं"।

ता पछै जोगी दया करर झाड़ै अर मंत्रां सूं मारवणी नै पाछी सरजीत कर दी। आ देखर ढोलोजी बहुत राजी हुया। जोगी अर जोगण नै कंई देवणौ चावता हा, पण बै तो रमता राम हा, रमग्या।

ढोलोजी पाछा चढिया। मारग में ऊमर-सूमरै रै आदम्यां मारवणी नै खोसणै री तजबीज करी। पण, मारवणी री चतराई सूं बै बुच-निकळया। ऊमर-सूमरै रै

115859

आदम्यां लारौ भी करियो, पण ढोलैजी रो करहलौ तो पवन-वेग हालणियो हो। बै उणरी खेह में रैया, जितरै करहलौ आडै-वळै रौ घाटो लांघग्यौ।

ढोलोजी नरवरगढ पहुंच्या। धूम-धाम सूं पैसारौ हुयो। माळवणी नै मारवणी रौ रंग-रूप अर बुद्धिमानी देखर आपरी हार मानली। ढोलोजी बहुत ही समझदार हा, मारवणी री सलाह सूं एक रात माळवणी नै अर दोय रातां मारवणी नै देवणी तय राखीजी। सगळा जणां रळ-मिळर राग-रंग करियौ अर संपत रै साथै दिन बौळाया।

ऊपरली विगत सूं "ढोला-मारू रा दूहा" अेक सुद्ध भारतीय प्रेम काव्य है। इण में संयोग-सिंणगार अर वियोग सिंणगार रा दोनूं पख सांगो पांग ऊभरर सामा आया है। औ काव्य बरसां तांई कंठो प कंठ चालतौ रैयौ। राजस्थान रै गायकां इण नै राग-रागणियां में बांधर गायौ। औ काव्य इतरौ जग-चावौ हुयो कै इणरा केई दूहा सुभाषित आळै दांई ओठा-उदाहरणां में आवण लागा।

"ढोला-मारू रा दूहा" रै सम्पादन में स्वामी नरोत्तमदासजी रौ सहयोग मिलग्यौ। पारीकजी अर ठा. रामसिंहजी तो बहुत-पैला सूं ही इण रै संपादन में लाग्योड़ा ही हा। इण काव्य रै सम्पादन में २१५ पृष्ठां री बहुत-लांबी अर खोजपूर्ण अेतिहासिक विवेचना अर साहित्यक आलोचना दिरीजी है। अनेक रूपांतरां रै साथै मूल दूहा अर उणरै साथै हिन्दी भावार्थ दिरीज्यो है। परिशिष्ट में ढोला मारू री चौपई, अनेक रूपांतरां रा दूहा, ढोलामारू री वात, टिप्पणियां अर ता बाद शब्द-कोष देयर काव्य नै सांगोपांग बणावणै रौ प्रयत्न करीज्यौ है, जिणमें आ संपादक-त्रयी (श्री सूर्यकरणजी पारीक, ठा. रामसिंहजी अर स्वामी नरोत्तमदासजी) नै पूर्ण सफलता मिळी है।

इतरौ फूठरौ काव्य अर उणरै जोगतौ संपादन हुवतां थकां भी लोगां में फैल्योड़ै भ्रम रै कारण प्रकाशन री समस्या उठ खड़ी हुई। अै लोग वेलि आळी दांई। ढोला मारू नै भी हिन्दुस्तानी अकादमी, प्रयाग सूं छपवावणौ चावता। पण इण में ओझाजी महाराज री सहमति जरूरी ही अर बै ढोला रै चरित्र सूं चिड़ियौड़ा हा। छेवट राह निकळ आई। अजमेर रा ही—कर्नल श्री महेशचन्द्रशर्मा, अेम. अे., अेल-अेल बी. पुराणी मंडी, अजमेर सूं मुलाकात हुयगी। अै श्री ओझाजी महाराज रा अंतरंग हा अर बै उणांरी कैयोड़ी बात नै पाछी नहीं नांखता। दोनूं मित्रा नै औ एक बहुत-बडौ सहारौ मिलग्यो। अब ओझाजी महाराज कोई समस्या नहीं रैया।

ढोला-मारू रै प्रकाशन रै प्रयत्न में अेकवार ठा. रामसिंह जी पारीकजी नै लिख्यौ ---- दिनांक १०-११-३० "इसके साथ महेश चन्द्र की (स्व. महेश चन्द्र शर्मा, अजमेर हमारै B.H.U. के सहपाठी वा अनन्य मित्र हा।) चिट्ठी भेज रहा हूं , जिणसूं थांनै "वेलि" रै छपणै रौ राज मालूम हुय जासी। हमकै ओझाजी

"ढोलै" रै विरूद्ध है। इण खातर मुश्किल पड़सी। म्हां उणांरै प्रत्युत्तर में एक ८-१० पेजारी अपील ओझाजी नै मेली है अर स्वीकृत पाठ री अेक पड़त भी। किणी तरै सूं इण बूढियै नै राजी करणौ है, नहीं तो बण्यौ-बणायौ खेल बिगड़ जासी। उठै सूं थे भी ओझाजी ऊपर कोई प्रभाव घला सकौ तो आछौ है—उणांसूं औ प्रण करवा लेवणौ है कै अकादमी रै पूछयां बै "ढोला" नै अेक आछो काव्य बतासी—जे सरावै नहीं तो निन्दा भी नहीं करै—उणांसूं एक सर्टिफिकेट ले लेवणौ ठीक रैसी। महेश नै तो लिख ही दियौ है, बो प्रयत्न करसी (सू. पा. पु. गा. सूं)

कर्नल महेशचन्द्रजी रौ कागद ठा. रामसिंहजी रै नांव आयौ। उणां लिख्यौ "प्रियवर ठाकुर साहिब ! ता. ३१ नै श्री ओझाजी महाराज सूं मिलियौ उण वखत कोई विशेष वात-चीत नहीं हुय सकी। क्यूं कै पंडितजी एक अठवाड़ियै खातर बारै जावण री तैयारी कर रैया हा। पंडितजी आपरै, स्वामीजी अर पारीकजी रै नांव सूं परिचित है अर आपरी "वेलि" री प्रशंसा कर रैया हा। "वेलि" जद अकादमी छापणी सिकारी तद ओझाजी लिख्यौ कै "जे ठीक इणही तरै आ पोथी निकळै तो साहित्य री बडी सेवा हुसी अर अकेडमी अर लेखकां रो परिश्रम सफल हुसी अर अकेडमी रौ नांव हुय जासी, इत्यादि।" मतलब औ है कै "वेलि" री बडी प्रशंसा करी ही अर छापण खातर बडी जोर सूं सिफारस करी ही।

"ढोला-मारू" खातर ओझाजी री राय आछी कोनी। अै इण ग्रंथ नै कोई महत्वपूर्ण नहीं समझै है, बल्कै इण नै हेठी दीठ सूं देखै है। उणांरै विचार सूं इणमें जिकै समाज रो चरित-चित्रण हुयौ है। बो बहुत भद्दो है अर कदापि आदर्श तथा अनुकरणीय नहीं कैयौ जा सकै। इणरै प्रकाशन सूं साहित्य नै कोई फायदौ नहीं हुसी, अपितु बडी हाण हुसी। बै एहेड़ै साहित्य नै उन्नति देवणी नहीं चावै। उणांरी राय में जे आप इणनै छोडर केई बीजै विशेष उपयोगी पोथी ऊपर परिश्रम करौ तो बडौ लाभ हुसी ..... तो ओझाजी सूं जरूर मिलीजौ अर इण पोथी रै बारै में आपरा बिचार उणां ऊपर प्रकट करीजौ, क्यूं कें औ निश्चै मानो कै अकादमी इण पोथी नै स्वीकार करणै सूं पैला ओझाजी सूं राय जरूर लेसी अर इणांरो माइंड इण कदर prejudiced रैयौ, जैहड़ौ अबार है तो जरूर इणनै अस्वीकार करणै खातर लिखसी। इणा सूं संभवतया आपनै नुकसाण हुसी। आस है आप इण बात ऊपर विचार करौला"। (सू. पा. पु. सूं)

"ढोला-मारू" रै पख में ओझाजी री आछी राय बणै, इण खातर पारीकजी आपरौ प्रयत्न चालू राखियौ। ओझाजी नै मूळ-पाठ रौ वाचन करर सुणायौ। पुरोहित हरिनारायणजी सूं अर ठा. रामसिंहजी सूं इण ग्रंथ रै पख में राय देवण खातर अपील करवाई। कर्नल महेशचन्द्रजी शर्मा रौ सक्रिय सहयोग तो हो ही। इणांरो प्रयत्न रंग लायौ। ओझाजी "ढोला-मारू" रै पख में हुयग्या अर अकादमी सूं प्रकाशित करवाणै री सिफारस खातर संभग्या। पारीकजी रै ठा. रामासिंहजी

रै नांव लिख्यै दि. ४-१२-३१ रै कागद में उणां लिख्यो कै "ओझाजी री राय आपां रै पख में हुय जासी, इणरो तो म्हनै पैला ही पक्कौ भरोसौ हो। आपरी तरफ सूं अपील तथा महेश रै कैवणै रौ जोर पड़यौ अर उठीनै सूं पु. हरिनारायणजी री अपील रौ।" (सू. क. पा. पु.)

पण बाबू श्यामसुन्दरदासजी बी. अे "ढोला-मारू" रै प्रकाशित करणै रौ सगळौ झझंट समाप्त कर दियौ। उणां पारीकजी नै सूचित करियो कै उणांनै ओझाजी री सिफारिस री जरूरत ही कोनी। बै इणनै "काशी नागरी प्रचारिणी सभा" सूं प्रकाशित करवा देसी। इण समाचार सूं पारीकजी बहुत प्रसन्न हुया। उणां आपरै अेक कागद में ठा. रामसिंहजी नै लिखियौ कै "बाबू सा. आपां रै प्रति बहुत ही सहानुभूति राखै है।"

"ढोला-मारू" रौ काम सिध चढग्यौ। पारीकजी सिचला कद बैठा रैवणिया हा। इण समय में बां लोक-गीता रै संग्रह अर संपादन रौ काम शुरू करियौ।

उणां दिनां राजस्थानी रै लोक-गीतां रै नांव सूं जिकी चौपड़यां बाजार में मिलती, उणां में राजस्थानी रा अश्लील अर भूंडी गाळयां आळा गीत हुया करता। राजस्थानी-समाज अर बीजा विद्वान राजस्थान रै अेहड़ै गीतां नै लेयर मजाकां किया करता। दूहा-पाली-संग्रह, साळी-जीजा, उमराव, टप्पा अर तरै-तरै रा अश्लील अर बेतुका ख्याल पढर भलै आदमी रो खून खोळण लग जावतौ।

पारीकजी गीत भेळा करणा शुरू करिया। छुट्टी-छपाटी रै दिन वै ऊंठ री सवारी करर पसवाड़लै गावां में जावता अर सुण-सुणर गीतां नै लिखता। लोगां नै पईसा देयर भी गीत भेळा कराया करता। पण गीतां सूं पारीकजी नै संतोष नहीं हुयौ तो उणां आपरै शिष्यां श्री गणपति स्वामी अर पतरामजी गौड़ नै इण काम में लगाया। पारीकजी रै रात-दिन रै अथक परिश्रम सूं च्यार-पांच हजार गीत भेळा हुयग्या। उणांनै पक्की जिल्दां बंधवायर सुरक्षित करिया। अब योजना बणी गीतां रै सम्पादन अर प्रकाशन री।

राजस्थानी लोक-गीतां रै संपादन अर प्रकाशन री जिकी रूप-रेखा बणी उण रौ पतो ठा. रामसिंहजी रै दि. २३-१-३६ नै लिख्यै कागद सूं चालै है। उणां लिख्या हो - "प्रियवर पारीक, इण रै साथै ३५ ग्राम-गीत भेजूं हूं। जल्दी ही फूटरौ सीक अनुवाद करर पाछौ मेल दीजौ। हमां अर स्वामीजी आपू आपरै गीतां रै अनुवाद रौ काम चालू कर दियौ है। म्हांरौ बिचार ग्राम-गीतां नै ४ भागां में छपवावणै रौ है। प्रत्येक भाग में लगभग ६० गीत अर लगभग २२५-२५० पृष्ठ रैसी। अबार तो दोय भाग तैयार करां हां, जिण में थारै हिस्सै रा गीत थनै भेज्या जावै है। इण च्यार भागां रा नांव कुछ इण तरै राखणै रो बिचार है- भा. १–श्रम अर जीवण, भा. २–आशा अर आणंद, भा. ३ –दाम्पत्य अर प्रेम, भा. ४– वात्सल्य अर हास्य। औ भी बिचार है कै प्रत्येक भाग रै कवर ऊपर या पैलै पेज ऊपर

सिलोटा अथवा रेखचित्र रैवै, जियां भाग एक ऊपर बाळधौ अर थोड़ौ अळगौ ओठो हळ चालै, एक दरखत रै नीचै जवान लुगाई (छकियार) बैठी हुवै, उणरौ टाबर दरखत री डाळी सूं लटकतै हींडै -पालणै में सूतौ हुवै अर उणरै कनै ही एक पांणी रौ घड़ौ। अर खारी में सूं काढर सजायोड़ौ छाक रौ सामान राख्यौ हुवै, एक बीजी छकियार आपरै माथै ऊपर बडो सो छाक रो खारियो ऊचायां अळगै सूं आवती दीसै। इण चित्र में आधै पात्रां सूं भी काम चलायौ जा सके है ज्यूं कै अेक हळ अर अेक ही छकियार। भाग दोय रै ऊपर गैरी कळायण हुवै अर थांरली बलाका भी ! (पारीकजी बलाका ऊपर फिदा हा) अर कृषक अर कृषक पत्नी आशापूर्ण अर उमंग तथा लालसा भरी मींट सूं उणनै देख रैया हुवै अर उण रा अेक-दोय टाबर उमंग सूं उछळ-कूद मचावता हुवै। कांई औ चित्र थारौ चित्रकार तैयार कर देसी ? चित्र भाव-पूर्ण हुवणा चाहीजै। औ ग्राम-गीत बडै ही महत्व रा है। म्हां इणां रै बारै में बिचार बांध्या है। सब सूं आछौ तो औ हुवै कै अकादमी नै इणां रै छापण खातर तैयार करी जावै। चावै थनै डा. ताराचन्द सूं मिलणै खातर इलाहाबाद जावणौ पड़ै। म्हैं कठै ही पढियौ हो कै अकादमी पं रामनरेश त्रिपाठी नै १०००० रूपिया देयर उणांरै गीतां रौ संग्रह लेवणौ चायौ हो, पण उणां देवण सूं इनकार कर दियौ। स्वामीजी अर म्हारी राय में आंपारा गीत त्रिपाठीजी रै गीतां सूं ज्यादा आछा है- अेहड़ा गीत किण ई भारतीय भाषा में छपियौड़ा देखण में नहीं आया। राजस्थानी, हिन्दी री ई प्रांतीय भाषा है, ज्यूं अवधी आदि, फेरू अकादमी नै औ गीत छापणै सूं कांई आना-कानी हुय सकै है ! जे अकादमी राजी हुय जावै तो फेर कैवणौ ही कांई ! दूसरौ विचार औ है कै तू दोनूं बडै बिड़ला बधुवां नै इणां मांय सूं आछा-आछा गीत सुणायर, उणां सूं ही सस्ता साहित्य मंडल सूं इणां नै छापणै रौ प्रबंध कराय। इण सूं ग्राम-संगठन अर तत्संबंधी कामां मे बहुत-बडी सहायता मिलसी"। (सू.का.पु. सूं)

इण कागद रो पडू.तर पारीकजी दि. १-२-३६ नै पिलाणी सूं दियौ। (उणांरो आखरी कागद) लिख्यौ- "प्रियवर ठाकुर साहिब, ३५ ग्राम-गीत आपरौ कागद मिल गया। अवकाश १५ फरवरी सूं मिळवां (१६ फरवरी, १६३६ ई. नै पारीकजी रामशरण हुयग्या) अनुवाद रौ काम शुरू कर सूं अर जल्दी ही वापस भेज देसूं। आपरी स्कीम म्हनै पसन्द है। च्यार भागां में ग्राम-गीत छपसी। विभागां रौ वर्गीकरण अर नावकरण म्हनै पसंद है। इण भागां रै ऊपर रा सिलूर चित्रां खातर म्हैं भूरसिंहजी शेखावत वा म्हारै ड्राइंग मास्टर नै सम्झाय दिया है। वो बणाय रैयौ है। मेघमाळा अर ज्योत्सना रा चित्र उण बणाय लिया है, कंई सुधार मैं ई बताया है, उणां रै हुय जावणै सूं आपरै कनै अपरूवल खातर भेज सूं। अबार तांई तो सस्ता साहित्य मंडळ सूं ही सगळा संग्रह छपवावण रौ इरादौ है। म्हैं घनश्यामदासजी नै स्कीम देय दी है। फेर आपांरा सगळा ग्रंथ बै ही छापसी।

सस्ता साहित्य मंडळ सूं अबार तांईं जवाब नहीं आयौ है। शायद हूं दिल्ली बलायौ जाऊ अथवा मार्तंड मंत्री म्हारै कनै आवै" (सू. पा. पु.)।

इण स्कीम सूं पैला ही "ढोला मारू रा दूहा" काशी नागरी प्रचारिणी सभा सूं छपर प्रकाशित हुयग्यौ। ६१६ पृष्ठां (डिमाई) रो भारी-भरकम ग्रंथ। इणरौ प्रवचन रायबहादुर गौरीशंकर हीराचंदजी ओझा, पुरोहित हरिनारायण शर्मा बी. अे., विद्या भूषण अर श्री घनश्यामदासजी बिड़ला लिख्यौ। प्रवचन में पोथी रै रूप-स्वरूप री चोखी, प्रशंसा करीजी। ग्रन्थ रै प्रकाशित हुवतां ही भारतीय अर विदेशी विद्वानां दिल खोलर प्रशंसा करी। पण केई अेहड़ा भी आदमी हा, जिकां नै औ प्रकाशन नहीं भायो। उणां में ठा. किशोरसिंह बार्हस्पत्य प्रमुख हा। उणां कळकता सूं प्रकाशित हुवण आळै "राजस्थान" त्रैमासिक, वर्ष १, संख्या २ में "डिंगळ भाषा के प्राचीन ऐतिहास" सिरैनांव सूं अेक लेख छपायौ। जिण में ".... ढोला मारू रा दूहां नै प्रकाशित करर बहुत निंदनीय काम कियौ है तथा अकर्मण्य अर भीरू आदमी ने आपरो चरित्र-नायक चुण्यौ है .... आदि, आदि।"

इण आक्षेप सूं पारीक रै मन में मार्मिक ठेस पहुंची। उणां ठा. रामसिंहजी नै लिख्यौ कै ठा. किशोरसिंह बर्हस्पत्य रै लेख रौ जबाब देवणौ चाहिजै। पण ठाकर साहब इण मुद्दे नै ढील में घाल दियौ। पण पारीकजी चुप-चाप बैठण आळा आदमी नहीं हा। बै धोकळसिंह, पंचेरी बणग्या। उणां पंचेरी-फोर्ट, शेखावाटी सूं दि. १६-६-३५ नै कागद लिख्यौ "श्री मन्माननीय श्रद्धेय पारीक जी, आपनै अभिवादन! आगै आपरी सेवा में औ "चारण संपादकरी भारी भूल" लेख भेजू हूं। हूं न तो कोई आछौ लेखक हूं अर न कोई पूर्ण विद्वान ही हूं। म्हैं "राजस्थान" नांव रै त्रैमासिक पत्र जिकौ कळकत्तै सूं हाल ही में निकळयौ है -एक लेख किशोरसिंह सम्पादक रौ पढयौ। उणनै पढर म्हारै हिड़दे में जिकी भावनावां ऊपनी, उणां नै ही लेख रै रूप में बणायर आपरी सेवा में अर्पण करियो है। हमें आपसूं निवेदन है कै, आप इणरौ परिशोधन कर परोर, कमियां नै दूर कर, रोचक बणायर, सुघा, माधुरी, सरस्वती, विशाल-भारत आद मासिक-पत्रां में तथा अर्जुन आद दैनिक पत्रां में म्हारै नांव सूं प्रकाशित करवाय दीजौ। हुय सकै तो आप इणरौ अंग्रेजी अनुवाद करर कई अंग्रेजी पत्र में भी कढवाय देवौ। क्ययूं कै औ किशोर सिंह इणी तरै रौ गलीच मिनख है। इणरी जितरी भद्द उडै, थोड़ी है। इण कागद अर लेख रै पहुंचणै अर इण नै प्रकाशित करवाणै री आप म्हनै खबर जरूर दीज्यौ। म्हारै योग्य काम हुवै तो लिखजो। इण काम नै करियां हूं आपरौ आभारी हुईस। अभिवादक-ठा. धोंकळ सिह, पंचेरी (जैपुर)।" (वैचारिकी, भा. २ अंक ३-४ रै आधार ऊपर)।

इणी रै बिचाळै पारीकजी रौ भैरूं कवि रै बाबत जसरापुर जावणौ हुयौ अर उठै वयोवृद्ध साहित्यकार पंडित झाबरमलजी शर्मा सूं मिलणौ हुयौ। उणां ठा.

किशोर सिंहजी वार्हस्पत्य आळै। लेख ऊपर बहुत आपत्ति करी। अर पारीकजी री सलाह सूं बां खुद उण लेख रौ पडुत्तर लिखर "राजस्थान" त्रैमासिक पत्रिका में ही संपादक जी रै करड़ै विरोध रै बावजूद पृष्ठ २३-३० ऊपर "ढोला-मारू" सिरै नांव सूं छपवायौ ! बां लिख्यौ-"आप (श्री किशोर सिंह बार्हस्पत्य) भलां अपणै आपनै "पुरातत्ववागीश" समझौ, किंतु देश रै सामी आपनै आपरी पुरातत्त्वान्वेषण संबंधी योग्यता रौ निर्देशक कोई ग्रन्थ नहीं है। अेहड़ी थिति मै पं. ओझा जी रै अभीमत रै सामी आपरै मत रौ तद तांई कोई मोल नहीं हुय सकै, जद तांई कै आप आपरै पख नै मजबूत करणै आळौ उणांसूं भी प्रबल प्रमाण उपस्थित नहीं करौ।"

दूसरी बात "ढोला मारू रा दूहा" नांव रौ राजस्थानी रौ अेक प्रसिद्ध प्राचीन लोक गीत, पाठान्तर, हिन्दी टिप्पणी, शब्द-कोष परिशिष्ट अर विस्तृत प्रस्तावना रै साथै संपादित करर सुयोग्य संपादक धन्यवादार्ह काम कियौ है। औ ग्रन्थ काशी नागरी प्रचारिणी सभा सूं प्रकाशित हुयर विद्वनां रौ आदर प्राप्त कर चुक्यौ है"। (राजस्थान, भा. २, अंक २)

साचाणी ही पं. ओझाजी सुणी-सुणाई वातां रै आधार ऊपर "ढोला-मारू" रौ विरोध करता हा। जद उणां इण काव्य नै धीरज सूं सुण्यौ अर आमी-सामी बैठर विचार करियौ तो उणांरा पैलड़ा विचार बदळग्या अर प्रवचन में उणां लिखियो है कै-"ढोला मारू रा दूहा" राजस्थानी भाषा रौ अेक प्रसिद्ध काव्य है। इण काव्य रा दोय रूप मिळै-पैलौ केवळ दूहां में है, जिको प्राचीन है अर दूसरौ दूहां अर चौपाइयां में है। संवत १६०० रै अड़ै गड़ै जैसलमेर में कुशळलाभ नाम रा अेक जैन कवि हा। उणां रै जमानै में ढोला-मारू काव्य प्रसिद्ध हो, परंतु संभवतः बो आपरै संपूर्ण रूप में नहीं मिळतौ जितरौ कीं मिळ सक्यौ, उतरौ बां भेळो करियौ अर कथा-सूत्र मिलावण खातर उणमें आपरी तरफ सूं चौपाइयां बणायर जोड़ दी। इण चौपाइयां रै अंत में उणां लिख्यौ है कै "दूहा घणा पुराणां अछै" अर्थात् दूहा बहुत पुराणां है, अनुमान सूं "घणा पुराणां" रौ अरथाव सौ वरस पुराणां तो हुसीज ! इण अनुमान सूं असली काव्य रौ समय सं. १५०० विक्रमी रै अड़ै गड़ै हुसी। इण री भाषा नै देखण सूं भी प्राय : इणी अनुमान री पुष्टी हुवै है। अतः ओ काव्य अड़ै गड़ै ५०० वरस पुराणौं तो जरूर है। इण रै संपादकां परिश्रम -पूर्वक इण काव्यरै प्राचीन रूप अर्थात् केवल दोहां आळै रूप–रौ पतौ लगायर उण रौ सुचारू रूप सूं संपादन कियौ है। दूहै-चौपाइयों आळै रूपरी तो हस्तलिखित पड़तां में भी मोकळायत मिलै, पण केवळ दूहां आळौ प्राचीन रूप अबार तांई अप्राप्य सो ही हो।

औ काव्य भाषा अेवं भाव दोनूं दृष्टि सूं महत्वपूर्ण प्रतीत हुवै है। इणरी भाषा कृत्रिम डिंगळ (राजस्थानी) नहीं है; जिका साहित्य में प्रसिद्ध है। औ तत्कालीन

बोलचाल री राजस्थानी-भाषा में लिखीज्यौ है। भाषा रै इतिहास रै अध्ययन खातर औ काव्य उपयोगी निवड़ सी। कविता री दीठ सूं भी औ काव्य महत्वपूर्ण हैं। आ अेक विचित्र (रोमेंटिक) प्रेम-गाथा है अर इण में मानव-हिड़दै रै कोमल मनोभावां अेवं बाह्य प्रकृति रा मनोहारी चित्र अंकित करीज्या है।

काव्य रौ नायक ऐतिहासिक व्यक्ति है, परंतु घटनावां अर वर्णनां मै कल्पना रौ बहुत बडौ पुट है, जिकौ अेहड़ी रचनावां में प्रायःस्वाभाविक है। काव्य रो मूळ रूप तो प्राचीन है, पणं बाद में समय-समय ऊपर इण में नूंवां दूहा भी मिलाइजता रैया है। संपादकां प्रायः १६-१७ हस्तलिखित पड़तां भेळी करर इण रौ संपादन कियो है। अर सं. १६६७ री लिखी अेक पड़त तथा सं. १७२० रै अड़े-गड़ै लिखी दूसरी पड़त संपादन रै आधारस्वरूप ग्रहण की है। नुंवी मिलावट विशेषकर इण समय रै पछै ही हुई है। इणसूं पैला जिकी मिलावट हुई है बा नगण्य है, फिर भी संपादकां सावधानी सूं काम लियौ है।

इणां ही संपादकां राजस्थानी भाषा रै अेक सुप्रसिद्ध काव्य पृथ्वीराज कृत "क्रिसन-रुकमिणी री वेलि" रौ उत्तम संपादन करियौ है, जिको प्रयाग री हिन्दुस्तानी अेकेडमी सूं प्रकाशित हुय रैयो है। औ इणंरौ दूसरौ प्रयत्न है। इण ग्रंथ रै साथै भी "वेलि" आळै दांई विस्तृत भूमिका, अर्थ, पाठान्तर, शब्द-कोष एवं विस्तृत टिप्पणियां रैसी। ग्रंथ प्रकाशित हुयां राजस्थानी वा हिन्दी-साहित्य खातर उपयोगी हुसी, इण में संदेह नहीं। इणरौ प्रकाशन किणी भी प्रकाशन संस्था खातर गौरव री बात हुसी। हूं इण काव्य नै वेगौ ही प्रकाशित रूप में देखेणौ चाऊं हूं।---गौरीशंकर हीरांचंद ओझा, ताः १३-७-३१ (प्रथमसंस्करण सूं)।

ओझाजी रै इतरै महताऊ प्रवचन रै साथै छपियै ग्रंथ नै कुण नहीं अंगेजतौ। भारतीय साहित्यकारां ही नहीं विदेशी विद्वानां भी इण ग्रंथ री भरपूर प्रशंसा करी। केई-केई विद्वानां तो अठै तांई लिख दियौ कै--इणरै जोड़ रो संपादन भारतीय-भाषावां में तो कांईं विदेशी साहित्य में भी कम ही मिळसी।

नाटककार अर रंगमंचीय रुचि आळा पारीकजी

ठा. रामसिंहजी आपरै अेक लेख में पारीकजी रै बारै में लिख्यौ कै–बै (पारीकजी) मन, कर्म अर वचन सूं तपिया योगी पुरुष हा। जो भी सपनौ बै देखता, उणनै साकार करण री उणां में विलक्षण शक्ति ही। (वैचारिकी, भा. २, अंक ३-४)

धुन रा धणी पारीकजी राजस्थानी-भाषा नै प्रदेश रै जन-जन री भाषा बणावणी चावता।राजस्थान प्रदेश री भाषा जद कै राजस्थानी ही, पण उण नै बोलण आळा। अपणै-आपनै उज्जड अर गंवार समझता। किणी सभा-सोसाइटी में कोई वक्ता आप री बात राजस्थानी में कैवतौ तो श्रोता-गण एक-दूसरै रै सामी भेदभरी मींट सूं देखर हंसता थका कैवता "औ तो आपां आळै दांई सोळै मुट्‌ठी रौ दीसै है"। इतरो ही नहीं आपसरी में बोलता बतळावतां भी हिन्दी अथवा अंग्रेजी री टांग तोड़ता अपारै प्रदेश में, आपरै ही आदम्यां रै जरियै, आप री फजीहत देखर सहृदयां नै रोवणौ आय जावतौ। इण ही सम्पादक-त्रयी रा अेक सदस्य स्वामी नरोत्तमदासजी बतावता कै" म्हे लोग जद राजस्थानी लोक-गीत, वातां, कहावतां, पहेलियां, कहमुकरण्यां आद रै खातर लोगां सूं संपर्क साधता तो लोग टट्ठा करता कैवता–स्वामीजी ! क्यूं खोटी हुवौ हो। राजस्थानी भी कोई भाषा है। आ तो उज्जड अर गंवार लोगां री बोली है।–उणांनै इण वात रौ कांई पतो कै राजस्थानी-साहित्य भंडारां में इसा-इसा ग्रंथ-रत्न भरिया पड़िया है, जिकां रै प्रकाश में आयां, प्रदेश सौंचन्दण हुय जासी। पण आ वात जन-सामान्य रै समझ में आवण आळी नहीं ही।

पारीकजी संग्रह अर संपादन रै काम में तो जोर-सोर सूं लाग्योड़ा हा, पण इण रौ प्रभाव तो लोगां ऊपर पड़ तो सो पड़ै। बै चावता कै लोग वेगै सूं वेगा आपरी मातृ-भाषा रौ महत्व समझै अर उणरो मान-सम्मान बधावै। रंग-मंच रै प्रयोग सूं सीधौ जनता सूं जुड़यौ जा सकै है। बस नूंवै विचार री मन में आवणै री देर ही, आयां पछै उणां इण काम कांनी पूरौ ध्यान दियौ अर "समाज सुधार प्रहसन" लिख्यौ। औ प्रहसन मोहता मूलचंद विद्यालय रै आंगणै में बीकानेर रा दीवान सर

मनुभाई मोहता अर आगन्तुक सज्जनां रै सामी १६२७ में सफलता पूर्वक खेलीज्यौ। (पारीकमासिक, अजमेर जन. व. फर. १६२८)

मोहता मूलचंद विद्यालय, बीकानेर सूं पारीकजी बाकीनेर रै राजस्व मंत्री रै कार्यालय में अधीक्षक पद ऊपर गया परा। अठै उणांरौ स्वास्थ्य खराब रैवण लगग्यौ। प. मालवीयजी रै कैवणसूं उणां आ नौकरी छोड़ दी अर स्वतन्त्र रूप सूं साहित्य-सेवामें लागग्या सन् १६२६ ई. में बै बिड़ला कालेज, पिलाणी में प्राध्यापक नियुक्त हुयर बीकानेर सूं गया परा।

पारीकजी रै नाटकां में वीररस अर लोक संसकृति

बिड़ला कालेज, पिलाणी में पारीकजी अेकाकी हुयग्या। मित्र-मंडळी लारै रैयगी। फेर भी उणां आपरी लगन नहीं छोडी अर साहित्य-सेवा अर राजस्थानी रै उत्कर्ष खातर लाग्यौड़ा रैया। छुट्टी-छपाट्यां में बै बीकानेर आयर मित्र-मंडळी सूं मिळता नींतर पत्रव्यवहार सूं काम चालतौ।

पिलाणी में बिड़ला-परिवार सूं मेळ-मिलाप हुयौ। श्रीघनश्यामदासजी खुद साहित्य में रुचि राखता, उणांरी प्रेरणा अर कथानक सूं "बौळावण" नाटिकारौ सिरजण हुयौ। इणरौ दूसरो नांव प्रतिज्ञापूर्ति राखीज्यो। औ छव देखावां (दृश्यां) रौ अेकांकी है। उण दिनां राजस्थानी तो कांई, हिन्दी में भी अेहड़ै नाटकां री कमी ही। "संकलन-त्रय" री धारणा बहुत बाद में प्रकट हुई, पण पारीकजी बौळावण में वस्तु, काल अर देश री चर्चा करता थकां, अेहड़ै अेकांकियां री सफलता री कूंची बताई है।

बौळावण रौ पैलौ मंचन पिलाणी में पारीकजी रै निर्देशन में हुयौ, जिकौ सगळी भांत सूं सफल रैयौ। इण छोटीसी नाटिका, दर्शकां रै साथै-साथै देश रै नेतावा नै भी राजस्थानी रै प्रति प्रेम जगायौ। इणरौ दूसरो प्रदर्शन भी पिलाणी में ही दि. २६-३-३४ नै श्री ठक्कर बापा आद बडै आदम्यां रै सामी हुयौ। इण में पिलाणी रै असवाड़ला-पसवाड़ला गांव अर ढाण्यां रै मिनख-लुगायां भाग लियो, ३००० रै अड़ै-गड़ै दर्शक हा। नाटिका रै माध्यम (अळाव) सूं इतरी बडी जनता नै आकर्षित करर पारीकजी इण बात नै आछी तरै सिद्ध कर दी कै राजस्थानी रै प्रति लोगां री मोह-ममता कम नहीं है अर शिक्षा रौ सही आधार राजस्थानी-भाषा ही बण सकै है। आज जिकी उदासीनता शिक्षा रै प्रति है, उण रौ कारण मातृभाषा में शिक्षा रौ नहीं मिलणौ है। बंगला, असमी, मराठी, गुजराती आद भाषावां आळै दाईं जे राजस्थान में भी मातृभाषा रै जरियै शिक्षा दी जावै तो कोई कारण नहीं है कै विद्यार्थी सफल नहीं हुवै अर बिचाळै ही स्कूल छोडर बूहा जावै।

"बौळावण या प्रतिज्ञापूर्ति" री कथावस्तु ठेठ राजस्थान री है, जद कै इण में मध्यकालीन राजपूती सभ्यता ऊपर बहुत जोर दिरीज्यौ है, जिकौ वर्तमान नै देखतां सवा सोळह आना ठीक है। राजस्थान अर राजस्थानियां री पूछ

राजपूती-सभ्यता रै कारण ही है। आपरी आण-बाण ऊपर दृढ रैयर काम पड़ियां शरीर नै होमणियै आदम्यां अर पळपळाट करती आग री लपटां में आपरी काची काया नै होमण आळी लुगायां रै पाण ही राजस्थान जग-चावौ है। राजपूत रै घरै जलमणियो टाबर राजपूत नहीं हुवै, राजपूती नै कायम राखणियौ मिनख ही राजपूत बाजें। अेहडै राजपूत रा लक्षण नाटिका में दिरीज्या है–

एह विरद रजपूत प्रिथम मुख झुठ न बोलै।
एह विरद रजपूत पर त्रिय काछन खोलै।
एह विरद रजपूत आथ बांटैकर जोरैं।
एह विरद रजपूत एक लाखां बिच ओरै।
जमराण पाय पाछा धरै, देखि मतौ अवधूत रौ।
करतार हाथ दीधी करद, एह विरद रजपूत रौ।

–बोळावण, ११-१२

इण तर रै काछ-वाचरापक्का राजपूती धरम रौ मरम जाणणियै परिवार नै पारीकजी आपरी नाटिकारौ नायक बणायौ। पारीकजी भारतीय वैदिक धर्म उपर आस्था राखता अर राजपूती सभ्यता अर संस्कृति रा प्रबल पोषक हा। वर्तमानकाल में सभ्यता अर संस्कृति में जिका उथल-पुथल मचियोड़ी ही अर लोगड़ा पिछमी चका चूंध में फसर आंधा हुयोड़ा सा मन रे मतै चालता उणां ने देखर पारीकजी रै मन में ठेस लागती। इण हीज कारण पुराणै आदर्शा ने सामी राखर लोगां ने आपरौ असली रूप देख्यावणौ चावता हा। राजपूती फकत रजपूतां री ही नहीं, जिके लोग उणरै गुणां नै धारण करै बै ही साचा राजपूत। साथै ही राजपूत रै घर में जलम लेयर राजपूती गुणां नै धारण करै, उणांरौ तो कैवणौ ही कांईं। पीढियां सूं आपरी आण-बाण ऊपर न्यौछावर हुवण आळै परिवार री साख-शोभा हजार गुणी बधती हुया करती। नाटिका रा नायक जवाहर सिंह जी अेहड़ा ही कुली क्षत्रिय हा।

नाटिका री कथा-वस्तु भी क्षत्रियोचि गुणां सूं भरी पूरी है "बौळावू" राजस्थान में प्रचलित प्रथा रौ नांव है। मध्यकालीन राजपूत सभ्यता में ही नहीं वर्तमान रै लारलै च्यार-पांच दसकां पैली। बौळावू लेवणो आजकाल री बीमा आळै दांई सुरक्षा री गारंटी ही, पैलड़े जमानै में यातायात रा साधन घोड़ा, ऊंट, बळद, खच्चर आदि ही हा। रेल अर मोटरां तो बहुत बाद में चालू हुई। आथुणै राजस्थान में आज भी अेहड़ा बुढ़ा-बडैरा मिल जासी, जिका बिना पशुवां रै खांचीजण आळै डब्बारी बात सुणर इचरज करै। उणां आपरी जिन्दगी में रेल नहीं देखी।

यातायात रा साधन फकत पशू हुवणै सूं यात्रा में टाईम बेसी लागतौ। अळगी भुंय हुवती तो रात-बिरात मारग में बासौ लेवणौ पड़तौ। दिन रा भी झाड़ झंखाड़ आळै मारग बैवतां डर लागतौ अर औ डर हो भी सांचौ। डाकू, चोर, बारोठिया

अर पास पड़ोस रै राजआळा बैवतै बटावुवां नै मार-कूट'र लूट लेवता। उणां दिनां दाद-पुकार कोई सुणणियौ हो नहीं। केई-केई लांठा भोमिया अर जागीरदार डाकू वांसू चौथ वसूलता अर उणांनै लूटण री खुली छूट देवता। अेहड़ै समय में आ बौळावू राजपूती प्रथा रै रूप में जलमी अर गरीब-अमीर यात्रियां री सुरक्षा रौ भार आपरै कांधां ऊपर लियौ। बौळवू रै हुवतां थकां जे कोई यात्री लूटीज जावतौ तो उणरौ सगळौ हर्जानो बौळावू भरतौ। बौळावू इण सुरक्षा रै बदळै में यात्रियां सूं उणांरी हैसियत सारू रोकड़ी रुपिया लेवता।

यात्रियां री रिछया करण आळा, बौळावू राजपूत हुवता तो उणां नै मार-कूट'र लूंटणिया भी राजपूत ही हा। पण अेहड़ै खोटै काम नै अंगेजणियै राजपूतां नै लोग आछी निजर सूं नहीं देखता। अेहड़ै बदनाम राजपूती रै खातर पारीकजी नाटिका में ठाकुर अर राजपूत रै वार्तालाप रै मिस उणांरी बखिया अुधेड़ी हैः–

ठाकुर– अरे, आज कौ जमानो भी कोई जमानो है। राजपूताई तो जमानै में रही नहीं। सिंह सगळा गादड़ा होण लागग्या।

राजपूत– ठाकरां राज! या तो मती कहो। संसार में भला भली छैः। पिरथवी निछतरी हुई कोनी। राज रै कानां डूंगजी जुहारजी री वीरता रा परवाडा पडया कोनी।

ठाकुर– जाण द्यौ उणांरी वात के राख्यौ है। या भी कोई शूरवीरता है। धाड़ा कर कै मरता आक चाबै है। रजपूताई लूट खसोट कर चोरी को धन मारणै में नहीं छैः। काम पड़या रिणखेत में धारातीरथ लेय नै जीव छोडै तिणरौ नांव रजपूत वैरियांरा धड मोडै देश-गढ री रिछया करै, सतरी पैज पाळै, गरीबां री ओट आवै, मिंदर-देवरां री आंण राखै, प्रांण रहतां बचन परमाण राखै, सो तो रजपूत, बाकी झख मारणो रजपूती नहीं कैवावे।

एह विरद रजपूत...............इत्यादि

राजपूत– हां, इसी रजपूताई तो राठौड़ अमर सिंह आगरै-किलै री वेढ में दिखाई, कै मैवाड़ राणै परताप सतधर्म री पाळणा करी, कै कमधजु दुर्गादासजी पातसाही धड़ रा नेस निकाळया जद कीन्हीं।

चारण बारठजी– सांची कही सिरदारां। साची रजपूती दिन-दिन लोप होती जावै छैः। शूरवीरता तो इण कळजुग में बड़ली ठाकरां जबरी कीधी—

दळ मिळसी दिखणाधरा, तोपां पड़सी ताव।
आ बड़ली भिळसी जदिन; घलसी मो सिरधाव।।
सेल बंदूक तीर खग साधन, अस चढणौ रमणौ आखेट।
इतरी बात हाथ जद आवै, नर नरवाह कहावै नेट।।

वायक सांम सांच ध्रम बरतै, रिधिखरचै दृढ काछ रहै।
सो रजपूत सही सरसातौ, लाखां ही वातां सुजस लहै।।

ठाकुर– पिण बारठजी, इसा रजपूत आज दिन आंख फाड़यां देस में दीसै नहीं।

इणही वात-चीत रै प्रसंग में बारठजी ठाकुर सां. नै बलूजी चांपावत री बात कैयी, जिकी साख्यात् सूरा पणैरी तस्वीर है–

–राठौड़ गोपाळजी कै आठ बेटा। अेक अेक सूं चढता सूरवीर जोधा। पिण बळूजी सांरा सिरै। बलूजी नागौर रा महारावजी अमरसिंहजी राठौड़ री चाकरी करै। रावजी नै मींढा राखणै रौ घणौ सौख। नैं मीढां री चराई में मोट्या-मोट्या ताजीमी सिरदार बारी बंद जावै। अेक दिन बलूजी री बारी आई। तद कह्यौ--"म्हारौ औ काम नहीं"। सुण कर महारावजी घणा खिज्या, नै माथा में सळवट घात नै डयोढ में बोल्या "तो पतसाही घड़ां नै मोड़ोगा जद देखांगा।" बलूजी घणां रीसाणा होय नै उठा सूं वीर हुया। जाती वेळा कह्यौ–"पतसाही घड़ मोड़ नै रजपूती परमाण करां जद जाण ज्यौ।" आय नै पतसाही फौज में घणां कुरब कायदा सूं रह्या। अबै देव रा संजोग सूं अरजान गौड़ रा हाथसूं महारावजी रो शरीर पड़ियौ, नै बादशाह छळ करनै मिरतक शरीर री दुर्दशा करणी मांडी। यो अखियात कानां भणक पड़ता पाण बलूजी वचन सांभळ नै चाल्या। सो पातसाही फौजां नै चीरता आगरा गढ़ मांय सूं रावजी रौ शरीर काढ नै लाया ; नै कळजुग में वचन परमाण कीधा। जिणरी साख रो गीत–

अह आगम वचन जसाहर राखै,
पह जागै धू मेरु परमाण।
मोनै अस रीझै मोकाळियौ,
देस्यूं तद बदळौ दीवाण।। (बौळावण)

इण तरै पारीकजी राजपूती संस्कृति अर सभ्यता रै प्रति जिकी आपरी श्रद्धा ही उण नै विभिन्न पात्रां रै मुंहडै सूं कैवायर लौक चावी करी। बात भी ठीक है–खरबूजै नै देखर खरबूजौ रंग पकड़ै। ठीक इणी तरै लोगां रै मुंहडै सूं आछी वातां सुण्यां अर उणां चरितां नै देख्यां सुणण आळां अर देखण आळां रै मन में वीर-भाव मजबूत हुवै, जिकै री आज रै जुग में घणी जरूरत है।

सूरवीराई रै अलावा भी राजस्थान रा रीति-रिवाज पारीकजी नै घणां प्यारा हा। वर्तमान काळरै भूंडै चाल चलण रै विचाळै जिकी रीतां आछी अर उपादेय हुंती उणांरौ चलण समाज में देखणौ चावता। बौलावण में सैं पैलड़ै देखाव में वर-वधू रै विदाई रौ दृश्य राखर अेहड़ै मौकै में काम में लिरीजण आळी रीतां नै दरसाई है। वर-वधू री विदाई री बेळा जिकै जिकै फूठरा गीत गाईजै, नाई अर बामण जिकै नेगचार करै, बेटी वहीर हुवती वेळा आपरै मां, बाप अर भायां रै

गळै मिलर रोवै। मां बाप उणनै थ्यावस देवता थका सीख देवै अै सगळा दृश्य इण अंक में दरसा इज्या है। इणां गीतां अर रीतां रै व्यवहार सूं पारीकजी री लोक-साहित्य रै प्रति जिकी दीठ है, उणरौ साफ पतौ चालै है। पारीकजी जिण दिनां बौळावण री रचना करी उणसूं घणा दिन पैला बै लोक-साहित्य रै संग्रह में लाग्यौड़ा हा। प्राचीन डिंगळ-गीत, दूहा, वातां अर वर्तमान में गाईजण आळै रौ गीतां रौ बहुत-बडौ संग्रह कर चुक्या हा। कोयलड़ी जैहड़ै मधरै विदाई-गीत नै पैलड़ै ही दृश्य में देयर लोगां रौ मन जीत लियौ हो अर बै दर्शक आगै री कथा भी उत्साह रै साथै देखता रैया।

बेटी री बिदाई रौ दृश्य बडो ही करुणा आळौ हुवै। बूढी-बडेरण्यां कोयलड़ी गावै अर बाई सगळां रै गळै मिलर रौवै, इण नै देखर भाठै जैहड़ै काठै मिनख री आख्यां मै भी पाणी आय जावै। मां तो बेटी रै समझण लाग्यां पछै विदा करै उणरै विचाळै घर-भिद री सीख देवती ही रैवै। अेहड़ी बेटयां सासरै जायर आपरै माइतां रो नांव ऊंचो करै अर सुबस बसै। औ सब मांरी सीख रो ही परताप है। बाप भी बिदा हुवती बेटी रै सिर ऊपर हाथ फेरर सीख देवै–" म्हारी अनमोल लाडली, थारो सुहाग अटल अखी रैवै। थारै नूंवै परिवार में जाय कर घणी सुखी रैईजो, म्हारी आ आसीष है। सुसराजी सा नै बाप अर सासूजी सा नै मां सूं बढकर मानजै और उणरी सेवा-चाकरी घणी बजावजै। धणी री सेवा तन मन सूं करीजै और सासरै रा सारा लोगां सूं घणो अदब शिष्टाचार बरतजै। इणी में दोनो कुळांरी परतिष्ठा अर जस छै :

तूं पति की आदरवती, हुजौ तिणघर जाय।
जैसै शर्मिष्ठा हुई, नृप ययाति वर पाय।।
सुश्रुषा गुरुजण की कीजौ, सखीभाव सौत्यण में लीजौ।
भरता जदपि करै अपमान, कुपित होय गह ज्यौ मत मान।।
मिठबोली दास्यां संग रहज्यौ, बडा भाग पर गरबन करज्यौ।
इण विध त्रिया गेहिणी पद पावै, उळटि चलि कुळ दोष लगावै।।

इण तरै बाई नै शिक्षा री वातां बतायर बाण उणनै बहीर करै। जंवाईसा नै भी टाबर री भोळावण देवैता पछै टीकै अर नारियल रो दस्तूर करर उणांनै बिदा देवै। लुगायां बधावो गावती पाछी आपरै घरै जावै।

राजस्थान ही नहीं, पूरै भारत रो साचो सरूप गांवां में देखण नै मिळै। पारीकजी नै गांवाड़ सभ्यता अर संस्कृति घणी मनभावती। इण खातर इण छोटी सी नाटिका में गांवांरो सै चडूड वर्णन करियो है।

ऊंठ री सवारी दोरी सवारी हुवै, पण धोरां-टीबां आळौ मारग ऊंठां बिना तय नहीं हुवै। इण हीज कारण ऊंठ नै धोरां रौ करोत कैयो है। ऊंठ सवार चालता-चालता थक भी जावै, जद बै आपरौ आळस उडावण नै कोई न कोई

गीत उगैरे। उण सूं गावणियै रौ तो आळस उडै ही, पण सुण्सणियां में भी आळस अर नींद रो नांव नहीं रैवै। इण तरै मारग कटै। पारीकजी मुकळावै रै अेक ओठ कनै सूं बिणजारौ गीत गवायौ है। औ गीत राजस्थान रै गीतां में घणौ चावौ है–

बिणजारा रे लोभी, और तो दिसावर जाय,
तनै बैठयां कियां सरै, बिणजारा रे !
बिणजारी अे लोभण, औरां कै पल्लै छै दाम,
म्हारै कनै कौडी नहीं, बिणजारी अे !
बिणजारा रे लोभी, लेज्या गळा रो हार,
बांवै तो पगरौ लेज्या टोडरौ। बिणजारा रे...........!
बिणजारी अे लोभण, किण तौ घड़ायौ थारौ नौलख हार,
किण तौ घड़ायौ थारौ टोडरौ। बिणजारी अे...........!
बिणजारा रे लोभी, सुसरै जी घड़ायौ म्हारौ हार,
बाप तो घड़ायौ म्हारौ टोडरौ। बिणजारा रे...........!
बिणजारा रे लोभी, और तो भरै है गुड़ खांड,
तूं तो भरीजै करड़ा खोपरा। बिणजारा रे...........!
बिणजारी अे लोभण, गुड़ डळियां में जाय,
चूंटयां तो चूंटयां जावै खांडड़ी। बिणजारी अे...........!
बिणजारी अे लोभण, औरां रै साथी है साथ,
गोडो तो देय लदायदे। बिणजारी अे...........!
बिणजारा रे लोभी, चालूंगी बाळद रै साथ,
गोडो तो देय लदाय द्यूं। बिणजारा रे...........!
बिणजारी अे लोभण, खोटो छै परदेसां रो काम,
रात तो अंधेरी लागै डरावणी। बिणजारी अे...........!
बिणजारा रे लोभी, ल्याजै पीपळ रौ फूल,
फळड़ौ तो ल्याजै फिरांसरो। बिणजारा रे...........!
बिणजारी अे लोभण, जुग में हुवै सो मांग,
बिना होयो कठै सूं ल्याय द्यूं। बिणजारी अे...........!
बिणजारा रे लोभी, ल्याजै धूंवा केरी पोट,
बेटो तो ल्याजै तूं बांझ रौ। बिणजारा रे...........!
बिणजारी अे लोभण, जुग में हुवै सो मांग,
अण होयो कठै सूं ल्याय द्यूं। बिणजारी अे...........!

राजस्थान-प्रदेश री शोभा गांव अर गावां री शोभा हरिया-भरिया खेत। खेतां में बटाउवां नै झाला देवती बाजरी। बाजरी रै बिचाळै डूं चौ अर उणरै ऊपर बैठी बाळी-भोळी कन्या गोफणियौ चलावती चिड़ियां-पंखेरुआं नै उडावै अर काबरियौ- काबरियौ करै। गांव रै कनारै कूओ। कूवैरै ऊपर ऊभौ गोसी तीखी राग में खुडकारा करै। कूवै री आडकी खेळी में गांव रौ पशु-धन पीवै। गैणै-गाभै सूं लड़ालूंब कोडयाळी इंढूणी ऊपर घड़ौ मेल्यां, पणिहारयां रौ झंबको। औ दरसाव देखणियै रो मन-मोह लेवै। पारीक जी आपरी इण नाटिका में बाट वैवतै वटा उवारै पशुवां नै पावण अर मिनखारै छागळ-दैड़ी भरण रै मिस कूवै अर पणिहारियां रै झूलरै रौ सांगोपांग वर्णन करियो है। पारीकजी कूवै रै ऊपर बारा न्हांखतै गोसी रा लयात्मक खुड़कारा सुणर मगन हुय जावता। ढोला-मारू रै दूहां में इण तरै रै खुड़कारां री घणी शोभा करी है। माळव देश नै भूंडौ बतांवती मारवणी कैवै है–

बाळूं बाबा, देसड़उ, जहां पाणी सेवार।
ना पणिहारी झूलरउ, ना कवड़ लैकार।–६६४

पारीकजी फकत पणिहारयां रै झूलरै रो ही वर्णन नहीं करियौ है। राजस्थान में चावौ नै ठावौ लोकगीत "पणिहारी" कूवै ऊपरली पणिहारयां रै कोयल-कंठां सूं गवायौ।

आपरै जमानै रा आदर्श ठाकर अर उणांरी कोटड़ी रौ वर्णन नाटिका रै दूसरै दृश्य में हुयो है– "राह में गांवरै ठाकर री कोटड़ी। पोळ रै आगै चारपाई रै ऊपर बैठौ बूढौ ठाकुर होकौ गुड़गुड़ावै है। अफीम री पीनक में झूमता झामता कदै-कदै लड़खड़ावती जबान सूं कंई कैय देवै।

खनै ही दूसरी चारपाई ऊपर अेक अधखड़सो राजपूत बैठो है, जिकेरै अेक हाथ में ढेरियौ (बटियो) है, जिकै ऊपर ऊंठ री जट रौ सीड़ कातै है। बीच-बीच में बूढियै ठाकुर री बातांरौ जबाब भी देवतो जावै। कनै ही अेक बूढौ चारण बैठो है।"

पारीकजी ऊपर जिकै ठाकर री कोटड़ी रो वर्णन करियो है। अेहड़ो कोटड़ी-दावौ आज भी मौजीज राजपूतां में मिलै। अेहड़ी कोटड़ी आळा राजपूत प्रायःजागीरदार अथवा भोमिया हुवै। कोटड़ी आळौ आसरौ कठै-कठै तो तिबारी हुअे अर कठै-कठै बहुत बडो झूंपड़ौ अथवा गडाळ। आसराम में अेकै कानी मांचा ढाळियोड़ा रैवै अर अेकें कानी जाजम। आसराम रै बीचों बीच धूंई, जिकै में हर वखत छाणा ओटियौड़ा रैवै। उणरै कनै अेक-दोय सुलफै आळी चिलमां अर अेक-दोय होकै आळी चिलमां पड़ी रैवै। ठाकर जाजम ऊपर गीदी ऊपर बैठै, बीजा लोग जाजम ऊपर। छभा में जे होको चालतो हुवै तो खवास अथवा नाई होकै नै आपरै हाथां सूं ठाकरां अर बीजोड़े सिरदारां नै पावै। ठाकरां रै कनै अमल रौ पोतौ अर खार भजणा पड़िया रैवै। जे अमल रौ वखत हुय जावै तो

लकड़ी री खरळ में अमल घोटर गळनी चाढै। जद नीथर र कसूंबौ बणजावै तद ठाकर आपरै खोबै में अमल लेवै। उण हीज वखत चारण, भाट अथवा दूसरौ कोई कवि अमल नै रंग देवै। रंग में देवी-देवता अर शूरवीर, झुझार, सतवादियां रा दूहा बोलै। रंग दियां पछै पैलड़ी मनवार रंग देवणियो ही लेवै। ता पछै ऊमर अर पद रै मुताबिक मनवारां हुवै। ठुंगार-खार भंजणा दिरीजै। बैठोड़ कै आदम्यां में हथाई चालती रैवै। जीमणरी वखत थाळ आवै। कोई भाई गिनायत अथवा अटाऊ-बटाऊ भी जे कोटड़ी में आयौडो हुवै तो उणरै खातर भी थाळी लाईजै। इण तरै दिन अर रात धामा-ऊधमा चालता रैवै। पण आज रै जमानै में अेहडो कोटड़ी दावो कठै-कठै ही देखण नै मिलै। अै रीत-रायता जागीरदारी रै वखता रा है। होळी-दीवाळी, वार तिवार ठाकरां रै निजर-निछरावळ भी हुवती।

थोड़ा दिनां पैली बाणियै-वक्काल रै अेकलौ मारग चालणौ मुश्किल हो। रजवाड़ां में राजपूत बौळाऊ भेजता अर आदिवासी भीलां में भील हीज बौळावू हुवतौ। भीलां में बौळाऊ रा दोय भेद हुया करता—कच्चो अर पक्को। कच्चै बौळाऊ रै रूप में साथै जावणियौ जवान मोटियार मिनख अर लुगाई हुया करता अर पक्के बैळाउ खातर साथै भेजीजती सगाई करियोड़ी कंवारी छोकरी। इणरौ अरथाव औ हो कै मिनख रै रूप में जिकौ बोळाऊ जावतौ, काम पड़ियां बो खुद अर उणरौ परिवार ही झालै रो झालू हो, पण जिका छोकरी बोळाऊ जावती काम पड़ियां उणरै दादाणै, नानाणै अर सासरै आळा मिलर सामलै री मदत करता।

बोळावै खातर मदत मांगणै अर बोळबू मेलण री रीत-रिवाज रौ वर्णन पारीकजी आपरी नाटिका में करियौ है, जिकौ वर्णन बहुत ही सजीव अर प्रभावित करणियौ है। थोड़ी सी वानगी देखौ---"दोनूं सवारा नै साथै लेयर वर रौ काकौ बतायौड़ा कै मारग ऊपर चालर ठाकुरां री पोळ रै सामनै जा पहुंच्या"

महाजन–(बूढै ठाकुर नै देखर) जै रुघनाथजी की ठाकर साहब!

ठाकुर–जै रुघनाथजी की ! बोलौ, साहजी ! कठां सूं आवणौ हुयौ ? आगै कठै जावोगा? मेह-पाणी किसोक छैः, रिजक किसोक चालै छै। राजी तो छोक। बैठो, अमल-पाणी करौ।

महाजन–(हथाळी में रुपियो राखर निजर पेश करतौ थकौ) सरदारां कै चाकरी नजर छै।

ठाकुर–(कंई सोच-विचार करर निजर आळौ रुपयौ लेवतां) आछौ ! श्री परमात्माजी सहाय करसी कोई तकलीफ हुवै अर म्हारै डील सूं मदत बण पड़ै तो संकोच मती करीजौ।

महाजन–सरदारां ! अठै सूं कोस दसेक रै आंतरै धूपटै नांव रौ म्हारो गांव छै। जात को माहेसरी वैस छूं। टाबर को मुकळावौ करवानै मारवाड़ कै रईवास गांव

गयौ छो। टाबर को मुकलावौ करवाय नै बाहुड़यो छूं। आगै दसकोस धरती उजाड़ पड़ै और रस्तै चलतां मुसाफरां सूं सुणी छै कै उंजाड़ में रातीवासै धाड़ै को डर छै। इण वास्तै राजरी शरण आयौ छूं। राज रौ कोई रजपूत "बौंळाइ" साथै कर द्यौ तो रस्तै रौ डर मिटै।

ठाकुर–(गैरै विचार में पड़र) साहजी, आपको कहणौ दुरुस्त छै'–पिण ......।

महाजन–महाराज, आप रजपूत छो। खितवटरी ओट आसा लगाय कर राज रै पास आयो छूं। राज ही प्रतिपाल नहीं करसी तो दूसरो कुण करसी !

ठाकुर–और तो सोच नहीं, पिण सोच जमानै को छै। बखत घणौ पोचौ आय गयो। रजपूताई की परख और कांण रही नहीं। पिण तन रहतां साहजी, थांरौ आंटौ तो निकाळस्यूं। रातवासै वींद-वींदणी नै सारै साथ सूं म्हारी कोटड़ी में बासौ करावौ, तड़काऊ बिदा कर देस्यां।

महाजन–हुकम राजरौ !

ऊपरलै ब्यौरै सूं पतौ चालै कै लोग बौळावू क्यूं लेवता ! अर बौळावू मेलण आळै नै भी खासौ जोर आवतौ। ठाकुर रौ सोच राजपूती री कांण–मरजाद कांनी हो। पैलड़ै जमानै आळै दांई लोग काण-मरजाद ऊपर पक्का नहीं रैवता। फेर भी शरणै आयोड़ै री रिछया करणी तो राजपूत धरम है।

पारीकजी राजस्थान री धोरा-धरती अर उणरै ऊपर लैरावती बाजरी री फसल नै कियां आख्यां अदीठ कर देता। तीसरै दृश्य री शुरुआत ही खेत सूं करी है। खेत मै डूंचै ऊपर बैठा टाबर रुखाळै। पड़ती जमीन में राइका अर अेवाड़िया आपरौ धन चरावै। अलगोजै ऊपर गीत गावै। गीत भी भाला आळै पाबू धणी रौ आगलै पासी खेतरौ घणी भारोटी बांधतो थकौ गावै–

बाल्हो लागै छै म्हांको देसड़ो अेलो।,
किम कर जावूं परदेस वाल्हा जो।
बादळ आया काळा-काळा देसड़ै अेलो।
भीजै म्हारी हिवड़े री कोर बाल्हा जो।

दूहो– बाजरियां हरियाळियां, बिच बिच बेलां फूल।
जउभरि बूठइ भादवइ, मारू देस अमूल।।

ठाकर जोरावरासिंहजी रौ पोतौ (१६-१७ बरसां रो) "बौळाई" रै रूप में रथ रै साथै बैवै। हरिया-भरिया खेत अर टीबा मारगुवां रौ मन मोवै। ठंडी-ठंडी हवा चालै इतरै में ही खेतां रै बिचाळै सूं भूरजी-जूहारजी नांवरा डकैतां री धाड़ आवै। बै आवता ही--थांमल्यो, कुण है, थांमल्यौ। अेक पांवडौ आगै चालोगा तो डील का दोय टूक कर द्यांगा।

महाजन बोल्यौ–भाई थे कुण छो। किण मतलब सूं आडा फिर रैया छो। मैं गरीब बाणियो, टाबर रौ मुकलावौ कर नै गांव जाऊं छूं। थांरो बुरौ भलौ कीनौ नहीं, फेर क्यूं रोकौ छो।

भूरजी–म्हे धाड़ैत छां। धन माल सारौ दियां ही पिंड छूटसी। लुकाव छिपाव करसी तो जान सूं मारयो जासी। चूं चपड़ मतना करे बावळा! वींद-वींदणी नै आघा उतार, पुरोहितजी महाराज नै दूरा राख। इणां रै तन पर हाथ घाल नै रजपूताई नै कलंक लगावां नहीं।

बोळाइराजपूत–राजपूताई रै नांव नै लाजौ मती। रजपूतां को यो काम नहीं छै। देश की रिछया करणी, सत धरम री परतंज्ञा राखणी, दीन दुखियां रौ टाळौ करणौ–रजपूती रौ तो यो विरद छै :

रण खेती रजपूतरी, वीर न भूलै बांण।
बारह वरसां बापरौ, लहै वैर लंकाळ।।,

जुहारजी–(हंसर) भोळौ टाबर ! अरे तो कांई भूखां मरणौ रजपूत रो धरम छै। शेर शिकार करनै पेट भरे छै, मांग कर घास नहीं खावै। इण जमाने में रजपूती दिखावण रौ वख्त गयौ। रिण खेत में बेढ करण रा औसर अलोप हुवा। धरती पगां सू छूटी। धाड़ा नहीं करा तो कांई कुतां की मौत सिड़-सिड़ कर मरां।

पिरोहितजी–आछी मत भ्रष्ट हुई रजपूतां ! राव दुर्गादास अर अनमी राणै परताप रौ उत्तम छत्रीकुल इण तरां सू माथै में धूड़ घालसी, इणरी आशा नहीं थी। धरती तो मोटा-मोटा राजव्यां सूं छूटी, पिण उणां देश में धाड़ा-डकैती, चोरी कर नै माजनौ डुबोयौ तो नहीं। मेवाड़ों राणौ\चितौड़ सूं छूटयौ, बरसां तांई जगळां-भाखरां में भूखो-त्रिसायो भटक्यौ, पिण आपरै सत-धरम सूं डिग्यौ नहीं। दुर्गादासजी सूं मारवाड़ छूटी, पिण धाड़ा तो नहीं मारया। धन्न है उणांरै मात-पितानै। रजपूती नांव रा लाजण हारां थांनै लाज आवणी चाहीजै।

भूरजी–पिरोहतजी महाराज, उपदेश उणांनै सुणावौ चायै जिणनै उपदेश में लगन हुवै। भूखौ पेट उपदेश सूं भरै नहीं। अब धन माल छोड कर सारा जणा आघा हुय जावौ, नहीं तो अेक-अेकरौ माथौ बाढ नै धन लेस्यां। राजी-खुशी सूं देद्यौ तो थांरी भलाई छै। (तरवार काढर झपटै। दूसरा धाड़ैत भी तरवारां काढर रथ नै घेर लेवै)

महाजन–आछौ भाई ! परमात्मा थांनै देखसी। धन-माल जीव सूं प्यारौ नहीं छै। मिनख मतना मारौ, जो कंईं टूम छल्लो म्हारै कनै छै सो आघा ल्यौ।

राजपूत बौळाई–बोला रैवो सेठजी ! धरती निछत्री नहीं हुई। मैं भी रजपूताणी का चूंग्या छै। शरीर रहतां चोरां रो कांई माजनौ, जो हाथ घालै। पहला म्हारो डील पड़सी, पछां इणारै अर थांरै मन में होवै सो करज्यौ। (तरवार खांचर धाड़ैत्यां सूं) पग मांडौ कायरां, देखूं थांरी रजपूताई किसीक छै।

(बौळाई घमासान जुद्ध करै। धाड़ैत्यां रै झुंड मांय सूं दोयेक नै मारर केयां नै घायल कर देवै। अंत में सगळा रळर उण नै गिराय देवे।)

राजपूत बौळाई–(तड़फर मरतां) अरे, कोई जीवतौ पाछौ जावै तो बाबासा नै कहजौ, थांरौ बाल्हो गीगलौ छत्री धरम पाळतौ खेत रैयो, धारा तीरथ लेय नै रजपूत रो जमारौ सुधारयौ। थे जीव रहतां म्हारा खून रौ बदळौ लीजौ, राजपूत कुळ रा कळंकी इणां चंडाल चोरा रै लोहूं सूं म्हारी आतमा रो तिरपण करीजौ। हे - - राम - - (मरजावै)।

(धाड़वी बर-वधू अर पुरोहित नै छोड़र सगळा रै शरीर ऊपर सूं अर कनै रौ माल खोस लेवै। जाती वेळा आपरै कनै सूं वधू नै एक चूंदड़ी ओढायर रुपिया पांच हाथ में देयर बूहा जावै।)

ठाकर जोरावर सिंहजी आपरी कोटड़ी में जाजम ढाळयां बैठा। कनै ही गांव रा पांच-सात आदमी बैठा होकै-चिलम री तजबीज करै। बारठजी शुरवीरां री बात चावळै। बलूजी चांपावत रावअमरसिंहजी री चाकरी में रैवै। रावजी नै मींढा पाळणै रो सौख। मींढा री चराई खातर बडै-बडै ताजीम दारां नै बारीसूं मेलै। अेक दिन बलूजी री बारी आई। राव अमरसिंह जी उणांनै मीढा चरावण खातर जावण रौ कैयो। उणां जबाब दियो औ म्हांरौ काम कोनी। तद रावजी डयोढ में कैयो–"आप तो बादशाह री फौज नै ढाबसौ"

बलूजी बोल्या-इण में कांई फरक है।

बलूजी अमरसिंहजी री नौकरी छोड़र गया परा। दिल्ली जायर बादशाह री चाकरी कबूल करी। संजोगरी वात राव अमरसिंहजी अर्जुन गौड़ रै हाथां काम आयग्या। बादशाह उणांरै शरीर री दुर्गत करण सारू आगरै रै किलै ऊपर न्हख्वाय दियौ। कागलां, चील्हां मिट्टी विरान करै। बलूजी रै कानां में आ बात पड़ी। बै तुरंत फुर्त किलै में पहुंच्या अर बादशाह री फौज सूं मुकाबलौ करनै राव अमरसिंहजी री लाश नै ले आया। उणां आपरै वचन नै परमाण कीधौ दूहो–

बलू कैवै गोपळ रौ, सतियां हाथ संदेस।
पतसाही घड़ मोड़कर, आवां छां अमरेस।।

वात पूरी हुई अर नहीं हुई महाजन रोवतौ-कळपतौ कोटड़ी ढूक्यौ। ठाकरां समाचार बूझया। महाजन हुई जिका घटना मांडर बताई। कंवरजी मरती वेळा जिको धाड़ेत्यां सूं बदळौ लेवण रौ संदेशौ दियौ, उणनै बतायो। ठाकरां रै शरीर में लाय-पलीता लागग्या। कंवर रै मरणै री फिकर ठाकरां नै नहीं, उण तो छत्री धरम निभायौ। पण धाड़ैत्या सगळां रळर जिकि घात करी उण ऊपर ठाकर रीसाया। उणां आपरा भायां नै भेळा करिया। सोच-विचार रै बाद केशरिया करणै रौ मतौ उपायौ।

केशरिया व्रत मध्यकालीन राजपूती सभ्यता रौ ऐ बहुत-बडौ व्रत हो। जिकै काम करणै री धार परीर केशरिया करीजता, उणरै पार पडियां पाछा घरै ढूकता, नींतर घर सूं बहीर हूवतां ही आपरै शरीर नै श्रीकृष्णार्पण करर ही निकळता।

ठाकरां न्हाय-धोयर पूजा-पाठ करियौ। तुलछी रै मौड़ा री माळा गळै में पैरी। श्रीसलगरामजी नै आपरे माथै ऊपर धारण करिया अर कमर-कसर तैयार हुयग्या। जितरै उणांरा भाई-बंध भी केशरिया करर आयग्या। ढोली किड़ (वाहर) रौ ढोल बजायौ। सगळा जणा हर-हर महादेव करता चाल पड़या।

धाड़ैत्यां री गढी ऊपर पहूंचर ठाकरां उणांनै ललकारया। भूरजी अर जुहारजी बीजै डाकुवां समेत गढी सूं बाहर आया। ठाकरां रै आगै हाथा-जोड़ी करी अर बाणियै रौ सगळौ माल राई-रत्ती हो जिकौ ठाकरां रै पगां में लाय न्हांख्यौ।

ठाकरां कैयौ इण खौड़ में प्राणां रै रैवतां राजीपौ नहीं हुवै। थां फकत उण कंवर नै नहीं मारयो है, राजपूती आण-बाण री हत्या करी है।

धाड़ैत्यां कैयौ-म्हां कंवर जी नै घणां ही बरजिया, पण बै मान्या ही नहीं। म्हांरा दोय-च्यार आदमी ज्यान सूं मार न्हांख्या अर पांच-सात घायल कर दीना तद म्हानै भी हाथ उठावणौ पड़ियौ। इण में म्हारौ कोई दोष कोनी।

ठाकरां कैयो अब दीन-बचन बोल्या सूं छूटैपो को हुवैनी। लड़ण खातर तैयार हुय जावौ। धाड़ैती सांमा सरियौ करियौ जितरै ठाकुर अर उणांरा भाई बंद काटकर पड़िया सू उणां पाप्यां नै गाजर-मूळी आळी दांई काट बगाया। भूरजी अर जवाहरजी ठाकरां रै हाथ खेत रैया।

धाड़ैत्यां नै मार-कूटर ठाकरां आपरै कंवर रौ बदलौ चुकायौ। महाजन रो माल लेय नै पाछा कुशलै खेमै कोटड़ी ढूका। महाजन नै कोटड़ी में बुलायर सगळो माल संभळायो। ठाकुर बोल्या-साहजी, जो श्रीपरमेसर जी नै मंजूर थी सो हुई। धन्यवाद श्री नारायणजी रौ छै। जिण म्हारै सत री लाज राखी, नहीं तो मैं किण लायक छूं। अब सेठजी, आप वींद-वींदणी नै लेय नै निशंक गांव नै पधारौ। चालो मै आपनै पूंचाय आंऊ।

महाजन–धन्न है, राजरी ठकुराई। राज रौ निर्मलजस जुगांन जुग में अटल रहसी।

(इणरै बाद ठाकुर बूढापौ भोगर रामशरण हुय जावै) इण तरै आ छव दृश्यां री छोटी सी नाटिका राजपूती सभ्यता अर संसकृति नै उजाळती थकी वीर-रस रौ साकार प्रतिबिंब खड़ौ करै। साथै ही राजस्थान रै गावां री दृश्यावली अर रीत-रिवाजां री विगत पण मिलै। पैलड़ै दृश्य में बेटी री बिदागी रौ दरसाव, लुगायां अर ढोली गीत गावै। पंडितजी पूजा करावै। नायण अर कुंभारी सुगनां री हरी डाळी अर बेवड़ौ लियां शुभ सुगन करै। बळधां नै टीकर जौरा पिंडा देवणा आदि बिना भूल्यां चीतरया है। दूसरै दृश्य मै गांव रौ कुवौ, पिणहारयां, गोसी

(माळी) अर गांव में ठाकरां री कोटड़ी रौ हू-बहू चित्रण करीज्यौ है। तीसरै दृश्य में रोही अर खेत। खेत में ऊभी डावड़की पंखेरुवां नै उडावै। खेत रो धणी भारोटी बांधै। रोई में चरतौ पशुधन अर उणरा चारवाळ राईका अर अेवाळिया अलगूजा ऊपर पाबूजी रौ परवाडौ गावता दीसै। महाजन रै साथै ठाकर जोरावर सिंहजी रो बेटो बौळाई रै रूप में बैवै। मारग में धाड़ैत मिळै। बोळाऊ अर धाड़ैतां रा सवाल-जबाब सुणर राजपूती री साची ओळखाँणं हुवै। लूंट रौ दरसाव अर बौळाबू रौ जुद्ध प्रत्यक्ष सा दीसै चौथै दरसाव में ठाकरां री कोटड़ी चारण री वीरता-पूर्ण बलूजी चांपावत री कहाणी कैवणौ। लूंटिजियोड़ै महाजन रौ रोवतै-कुकतै रो प्रवेश। ठाकरां में वीर-भावरो संचार। भाई बधुवां समेत केशरिया करर धाड़ैत्यां सूं मुकाबलौ करण नै ढोल रै ढमकै प्रस्थान। पांचवें दृश्य में धाडैत्यां अर ठाकरां रो वीरोचित संवाद। ठाकरां अर साथियां रौ धाड़ैत्यां ऊपर आक्रमण। धाड़ैत्यां रा मुखिया भूरजी जुहारजी रौ ठाकरां रै हाथ खेत रैवणो। बीजा भी दस पंद्रह डकैतां रौ मारीजणो। ठाकरां री पखरा भी पांच आदमी खेत रैवणा। महाजन रो राई-रत्ती माल लायर पाछौ देवणौ अर उण नै उणरै गांव तांई सुरक्षित पहूंचावणौ। छट्ठै दृश्य में ठाकर री वृद्धावस्था रो वर्णन। चारण रौ आत्मज्ञान रौ कथन। ठाकुरां रौ अंतिम समय। बेटां री याद में प्राणत्याग। अै सब जीवता-जागता चित्राम है। वर्णन में कठै ही अपरोगी वात नहीं लखावै। इण नाटक नै देखणिया तो रस में सराबोर हुय जावै, पण पढ़णिया भी लारै नहीं रैवै। इण नाटक नै देखर श्री मान बिड़लाजी "बिड़ला कालेज राजस्थानी पुस्तक माळारी" थरपणा करी, जिकै प्रथम-पुष्प रै रूप में 'बोळावण' रौ प्रकाशन हुयौ। आ सन् १९३३ री घटना है। इणरै प्रकाशित रूप ऊपर पं विश्वेश्वरनाथ जी रेऊ री समति इण तरै है–

"प्रिय महोदय, "बौळावण" नामक अेकांकी नाटक मिल्यौ। धन्यवाद ! आपरौ औ प्रयत्न राजस्थान में इण तरै रो पैलो प्रयत्न है अर साथै-साथै सराहनीय भी। राजस्थानी भाषा रै लेखकां रौ मार्गदर्शक हुसी।

–भवदीय-विश्वेश्वर नाथ रे ऊता : ११-२-३४

(सू.पा.पु.)

"बोळावण" रै अलावा पारीकजी "समाजिक प्रहसन" अर "मीरां नांव रा दोय नाटक भळै लिखिया है, जिकांरी मूळ पड़तां मिळै है। बिड़ला कालेज पत्रिका रै जरियै उणारै और भी केई नाटक लिखणै रा संकेत मिळै, पण उणां रै मूळ रौ कोई पतो-ठिकाणो कोनी। दूसरा नाटक मिळै अथवा नहीं मिळै पारीकजी री फकत "बौळावण" ही उणांनै नाटककार अर रंगकर्मी रै रूप में ओळखावण में काफी है। इणरौ स्थायी अर भरौसै जोग कथानक अर उपयोगी रंग संकेत पारीकजी री इण विषय में सिद्धहस्तता प्रकट करै है।

संपादन, नाटककार, अर रंगकर्मी रै रूप रै अलावा पारीकजी रौ अेक रूप और मिळै, जिकेमें बै सफल हुआ है, बो रूप है-निबंधकार रौ। पारीकजी रो पैलो साहित्यिक निबंध श्रीसंपूर्णानन्दजी द्वारा संपादित "मर्यादा" काशी, श्रावण १६७६ में प्रकाशित हुयौ अर अंतिम मृत्यूपरांत "राजस्थानी" भाग ३, अंक १ (जुलाई, १६३६) में छप्यो। (वैचारिकी, भा. २ अं. ३-४)

पारीकजी आपरै १७-१८ बरसां रै सर्जन-काळ में हिन्दी अंग्रेजी रा ३८ रै अड़े-गड़ै साहित्यिक निबंध लिखर प्रकाशित करवाय दिया, जिकौ बहुत-बडौ महताऊ काम हो।

सुधी पाठकां अर अनुसंधित्सुआंरी सुविधा खातर पारीकजी रै निबंधां रौ विवरो अठै दियो जा रैयो है–

१. प्रकृति से संगठन का प्रथम पाठ–मर्यादा, काशी (श्रावण १६७६)
२. पराधीन सपनै हु सुख नांही–प्रेमाश्रम, बीकानेर (कार्तिक पूर्णिमा सं. १६७६ वि.)
३. शून्यग्राम–प्रेमाश्रम, बीकानेर (कार्तिक पूर्णिमा) सं. १६७६ वि.
४. आत्मांजलि (गद्य-काव्य)–प्रेमाश्रम, बीकानेर (कार्तिक पूर्णिमा) सं. १६७६ वि.
५. पारीक महासभा, सभापति भाषण–पारीक, मेड़ता (मार्गशीर्ष, १६८५)
६. राजस्थानी साहित्य और पृथ्वीराज–बिड़ला कालेज पत्रिका, पिलानी (अप्रैल, १६३० ई.)
७. राजस्थानी भाषा का एक प्राचीन प्रेमगाथात्मक गीति-काव्य–बिड़ला कालेज पत्रिका, पिलानी (बसंत, १६३२ ई. अर) नागरी प्रचारिणी पत्रिका, बाराणसी (भाग १४, १६६० ई.)
८. नल नरेश (असमाप्त)–सुधा, लखनऊ (भाद्र पद, १६६०)
६. राजस्थानी की हिन्दी कवि रानियां–अग्रवाल, कलकत्ता (नवम्बर, १६३६) तथा राजस्थान, कलकत्ता (श्रावणीतीज, १६६२)
१०. हिन्दी का एक उपेक्षित उज्वल पक्ष–नागरी प्रचारिणी पत्रिका, बनारस (१६६०)
११. राजस्थानी हिन्दी और कबीर–नागरीप्रचारिणी पत्रिका, बनारस (श्रावण, १६६२)
१२. चित्तौड़ संस्मरण–बिड़ला कालेज पत्रिका, पिलानी (दशहरा, १६३५)
१३. राजस्थान के राजाओं की हिन्दी सेवा–बिड़ला कालेज पत्रिका, पिलानी (वार्षिक अंक, १६३५)

१४. कृत्रिम डिंगळ–हिंदुस्तानी, इलाहाबाद (अक्टूबर, १६३५)
१५. वयणसगाई–हिन्दुस्तानी एकेडमी, इलाहाबाद (अप्रैल १६३७)
१६. उत्तर अपभ्रंश कालीन लोक भाषा–हिन्दुस्तानी, इलाहाबाद (जुलाई, १६३६)
१७. राजस्थान के लोकगीत–हिन्दुस्तानी, इलाहाबाद (अप्रैल, १६३७)
१८. राजस्थान के कुछ ग्रामगीत–सरस्वती, इलाहाबाद (जुलाई १६३७)
१६. राजस्थानी लोक गीतों में जीवन के मार्मिक चित्र–मारवाड़ी, कलकत्ता (अक्टूबर, १६३६)
२०. राजस्थानी लोक गीतों में जीवन के करुणाचित्र–राजस्थान, कलकत्ता (दीपावली, १६३३)
२१. कवि जटमल कृत प्रेमलता चउपई–वीणा, इंदौर (श्रावण, १६६५)
२२. हमारे शिक्षालय और धर्म शिक्षा–वीणा, इंदौर (पौष, १६६४)
२३. राजकुमार के प्रति–राजकुमार, अजमेर (जनवरी, १६३८)
२४. हमारा आंतरिक केन्द्रीकरण–मारवाड़ी, कलकत्ता (जुलाई, १६३८)
२५. राठौड़ इतिहास की सर्वोज्जवल रमणी सती शिरोमणि रानी चांपादे–शान्ति, लाहौर (सती अंक, १६३६)
२६. राजस्थान की हिन्दी सेवा–वीणा, इंदौर।
२७. आधुनिक हिन्दी नाटकों का अभिनय–हिन्दुस्तानी, इलाहाबाद (अक्टूबर, १६३८)
२८. मौन--बिड़ला कालेज पात्रिका, पिलानी, (बसंत, १६६२)
२६. राजस्थान में हिन्दी साहित्य की प्रगति–बिड़ला कालेज पत्रिका, पिलानी (दिवाली, १६३७)
३०. हमारी शिक्षा का प्रवाह किस ओर–बिड़ला कालेज पत्रिका, पिलानी (वार्षिक अंक, १६३७)
३१. बाललीला–बिड़ला कालेज पत्रिका पिलानी (बसंत, १६३८)
32. The Indian Muse in English Garb, Pp. 76-78, Premashram-Bikaner.
33. A marriage letter, Pp. 85-86, Premashram–Bikaner, 1922.
34. Bernard Shaw: Man and Dramastist, Pp. 59-72, BHU-Mag Jan. 1926.
35. Ballad in Early Rajasthani Poetry, Pp. 8-12, Birla College, Mag. Dashera Number October, 1933.

36. Rajasthanti Publications Pp. 46-49 (A review of "Veli Krishan Rokhamni Ri Rathor Raj Prithviraj Ri Kahi" edited by Pt. Surya Karan Pareek , M.A. & Thakur Ram Singh, M.A., Royal 8 Vo. size 620 pages, cloth bound, gilt, price Rs. 6/- by: H.R. Bhatia.
37. A group photo of Natak Mandli (Beni Sambar) Pp. 24. Ann. No. 1944.
38. "Bolawan" A Rahsthanti One act play, Pp. 31-32, staged before 3000 Audience on 2.9.34, Re:staged on 29.9.34, before Shri G.D. Birla and Thakkar Bappa, B.C. Mag. Dashera No. 1934.

Compiled by Shri K.S. Pareek, Sursagar Tank, Bikanar.

इणां निबंधां माय सूं चुनिंदा निबंधां नै राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर रै निर्णय रै मुताबिक डां. मदन केवलिया, बीकानेर संपादित करर "सूर्यकरण पारीक निबन्धावली" नांव दियौ। इणरो प्रकाशन "राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर सन् १६८१ ई. में करियौ इण निबंधावली मै पारीकजी रा २४ हिन्दी निबंध सामल करीज्या है अर डा. केवलिया छब्बीस पृष्ठांरी ओपती भूमिका लिखी है, जिण में पारीकजी रै निबंधां री विशेषतावां बताईजी है।

"सूर्यकरण पारीक निबंधावली" में पारीकजी रा जिका-जिका निबंध सामल करीज्या है, उणांरी विगत वार पानावळी इणभांत है–

अनुक्रम	लेखरो नांव	पेज-संख्या
१.	राजस्थान की हिन्दी सेवा	२८
२.	राजस्थानी हिन्दी और कबीर	८३
३.	हिन्दी का एक उपेक्षित उज्जवल पक्ष	८६
४.	मेड़ता निवासी स्वर्गीय महाकवि "वृन्द"	६६
५.	कवि जटमल कृत प्रेमलता चउपई	१०८
६.	भैरुं कवि और उसकी कविता	११६
७.	"ढोला मारू रा दूहा" की समीक्षा	१२४
८.	सती शिरोमणि रानी चाम्पादे	१३१
६.	आधुनिक हिन्दी नाटकों का अभिनय	१३६
१०.	बीसवीं सदी में जयपुर की साहित्य साधना	१४३
११.	वैदिक साहित्य में जीवन के आदर्श	१४८
१२.	वैदिक धर्म में शक्ति-उपार्जन का उपदेश	१५७
१३.	प्रकृति से संगठन का प्रथम पाठ	१६२
१४.	हमारा आंतरिक केन्द्रीकरण	१७०

१५. हमारी शिक्षा का प्रवाह किस ओर ? १७५
१६. हमारे विद्यालय और धर्मशिक्षा १८२
१७. हमारा राष्ट्रीय कर्त्तव्य १८६
१८. स्त्री समाज के प्रति हमारा कर्त्तव्य १६१
१६. पराधीन सपनेहु सुख नाहीं १६६
२०. शून्यग्राम २०६
२१. आगे बढ़ो २११
२२. मौन २१६
२३. बाललीला २२३
२४. चित्तौड़ के संस्मरण २२६

पारीकजी रै ऊपर लिख्यै निबन्धां में घण करासा साहित्यिक निबंध अथवा लेख है। सांस्कृतिक निबंधां री गिणती बहुत कम है। पारीकजी रै जमानै में साहित्यिक निबंधां री मांग ही अर आ मांग जरूरी भी ही। राजस्थानी-साहित्य री तो बात ही छोडौ, हिन्दी-साहित्य रौ भी बहुत बडो भाग अज्ञात अथवा अप्रकाशित हो। हिन्दी भाषा रो नुंवौ उत्थान-काल शुरु हुयो हीज हो। इण खातर आचार्य द्विवेदी-जुग में "ज्ञान री संचयात्मकता" ही निबंध रौ विषय मानीजतौ। पारीकजी भी जुग री धारा रै अनुरूप लिखता दीसै है।

पैलड़ै-दिनां में प्रेस री सुविधा नहीं ही। जिकै लोग साहित्य मै रुचि राखता बै विभिन्न विद्वानां कनै सूं साहित्यक-सामग्री लिखवायर आपरी इंच्छया री पूर्ति करता। अेक ही चौपड़ै में अनेक कवियां री रचनावां संकलित हुया करती। अेहड़ा चौपड़ा (गुटका) उण परिवार री संपति मानीजता। उण चौपड़ै री सामग्री मांय सूं जिकी सामग्री केई बीजै नै पसन्द आ जावती तो बो इण चौपड़ै सूं उणरी नकल (प्रतिलिपि) कराय लेवतौ। उण रै अंत में (पुष्पिकारूप) जिको विवरौ दिरीजतो, उण में उण चौपड़ै री विगत भी हुया करती। इण तरै साहित्य रो सौख उण जमानै में काफी महंगो हुया करतो। गीता, भागवत, रामायण, धर्मग्रन्थ, पुराण आदि पोथ्यां राजा-महाराजा, जागीरदारां जंमीदार अर सेठ-साहूकारां रै अठै हीज देखण नै मिळती अथवा केई पंडित घराणां में अेहड़ी पोथ्यां (हस्तलिखित रूप में) मिळती।

साहित्य रै पुनर्जागरण-काळ में प्रेसरी सुविधा मिलण लागगी प्रेस रै माध्यम सूं पत्र-पत्रिकावां भी निकळणी शुरु हुई। इणां पत्र-पत्रिकावां रौ खास उद्देश्य हो, बस्तां अर बुगचियां में बंधी पड़ी साहित्य सामग्री नै प्रकाशित करर लोगां रै सामनै राखणौ। आचार्य महावीर प्रसादजी द्विवेदी सूं इण युग री शरुआत हुई अर इण ही जमानै में हिन्दी अर प्रादेशिक भाषावां रौ साहित्य उघाड़ में आयौ। द्विवेदी-कालीन लेखकां अर विद्वानां में–आचार्य रामचन्द्रशुक्ल, पं. माधवप्रसाद

मिश्र, पं. चन्द्रधरशर्मा गुलेरी, अध्यापक पूर्णसिंह, बाबू श्यामसुन्दर दास बी.अे,पं. पद्मसिंह शर्मा, बेचन शर्मा, कुं रघुवीर सिंह आद-प्रमुख हा।

इण क्षेत्र में राजस्थान भी लारै नहीं हो। राजस्थान रै निबंधकारां में श्री सूर्यकरणजी पारीक रै अलावा पुरोहित हरिनारायण बी.अे., पं.गिरधर शर्मा चतुर्वेदी, श्री शंभुदयाल सक्सेना, पं. नरोत्तमदासजी स्वामी, श्री पुरुषोत्तमदासजी स्वामी, ठा. रामसिंहजी, पं. हरिभाऊजी उपाध्याय, पं. हीरालालजी शास्त्री आद-सक्रिय हा।

निबंधावळी रै संपादक डा. मदन केवाळिया भूमिका में लिख्यो है–"स्वर्गीय पारीकजी रा निबंध अेक तरफ द्विवेदी-युगीन "ज्ञानकी संचयात्मकता", उपदेशा-त्मकता अर गंभीरता रौ पाळण करता दीसै है तो दूसरी तरफ उणां में आत्मीयता, स्वच्छंदता, भावात्मकता वा व्यंग्यात्मकता रो आग्रह भी दीसै है। विषय री गंभीरता नै उणां निजी अनुभूतियां री तरळता सूं सींची है। विश्लेषण री बारीकी अर भावां री सघनता, भाषारी अकृत्रिमता सूं और भी घणी निखरी है। (भूमिका, ५)

पारीकजी रै जीवन-निर्माण में–हिन्दू विश्वविद्यालय, काशी रौ महत्वपूर्ण योगदान हो। महामना पं. मदन मोहन जी मालवीय जैहड़ै आदर्श-वादी विचारां रै धणी रै सत्संग रौ लाभ उणां नै मिळ्यो। बां पारीकजी री मौलिक प्रतिभा नै ओळख ली ही, इण हीज कारण बै इणां ऊपर आपरौ स्नेह बरसावता। हिन्दू विश्वविद्यालय रै अध्यापकां रै रूप में हिन्दी रै महारथियां-'-आचार्य पूज्यपाद श्रीश्यामसुन्दरजी, श्रीरामचन्द्रजी शुक्ल तथा पं. श्री अयोध्या सिंहजी उपाध्याय "हरि ओध" अर अंग्रेजी में ख्यातिप्राप्त श्री पी. शेषाद्रि–महानुभावां रौ पारीक जी नै आशीर्वाद मिल्यौ। वैदिक-साहित्य में अभिरुचि सनातन-धर्म री मान्यता, देश-भक्ति रौ ममत्व अर मातृ-भाषा रै प्रतिनिष्ठा रौ उदय पारीक रै जीवन में "हिन्दू विश्वविद्यालय, काशी" रै परताप सूं ही हुयौ।

पारीकजी में मौलिक-प्रतिभा री कमी नहीं ही। उणांनै मित्र बणावणा अर उणां री मित्रता नै निभावण री महारत हासिल ही। ग्रन्थां नै संपादन में पारीक खुद बहुत बडौ परिश्रम करता, पण उण रौ श्रेय कदै ही अेकला नहीं लेवता, मित्रां रौ बराबर हिस्सौ राखता। इण हीज गुण रै कारण उणां थोड़ै सैक दिनां में "वेलि" अर "ढोला-मारू रा दूहा" जैहड़ा भारी भरकम ग्रन्थ तैयार करनै बडी-बड़ी ऊंची संस्थावां सूं छपवाय दिया। जदकै अे संस्थावां हिन्दी रा ग्रंथ भी छापण नै सोरी-सोरी तैयार नहीं हुया करती। हिन्दुस्तानी अकेडमी अर काशी नागरी प्रचारिणी सभा सूं तो राजस्थानी-भाषा रा ग्रंथ छापण रौ पैलौ मौको हो। पारीकजी पिलाणी में रैवतां थकां बिड़ला-परिवार सूं जुड़िया। श्रीधनश्यामदासजी नै पारीकजी राजस्थानी भाषा अर साहित्य कांनी अेहड़ा मोड़या कै उणां पिलाणी में ही"बिड़ला कालेज राजस्थानी पुस्तक माळा" री थरपणा करी। जिकैरै पैलड़ै पुष्प रै रूप में

"बौळावण" छपी। पारीकजी रै जीवन-काल में उणांरी दूसरी पोथ्यां भी इण पुस्तक माळा में छपी अर चोखी ख्याति प्राप्त करी।

पारीकजी रो निबंध-साहित्य काफी बड़ी मात्रा में है। उण जमानै री ठावकी-ठावकी पत्रिकावां में पारीकजी रा निबंध छप्या। पारीकजी आपरै निबंधां में जिकै मुद्दां (विषयां) ऊपर विचार करियो है, उणांनै आपां इण तरै बांट (विभाजित) सकां हां–

१. राजस्थान, राजस्थानी-भाषा एवं साहित्य की महता
२. हिन्दी साहित्य की गौरवशाली परंपरा
३. हिन्दी-राजस्थानी संबंध
४. राष्ट्रप्रेम
५. प्रकृति प्रेम
६. नाटय कला के प्रति आसक्ति
७. सच्ची शिक्षा
८. आध्यात्मिकता

राजस्थान-प्रदेश रै बारै में पारीकजी रा विचार बहुत ऊंचा हा। राजस्थान में महाराणप्रताप, जयमल, पत्ता, वीरदुर्गादास राठौड़ आद स्वनाम धन्य वीर राजस्थान री धरती ऊपर हीज ऊपन्या, जिकां आपरी आण-बाण अर स्यान राखण खातर बहुत बडौ दुख सहयो। सेठ भामाशाह जैहड़ा दान-वीर भी इण हीज धरती ऊपर जलम्या, जिकां आपरै देश री रिछया खातर पीढियां रौ अर्जित धन, महाराणां रै श्रीचरणां में अर्पित कर दियौ। राणी पदमनी भी इण ही धरा-धाम ऊपर उपनी, जिकी हजारां लुगायां रै साथै आपरौ तन होम दियौ। राजकुंवरी कृष्णा, जिकै आपरै प्रदेश में खून-खराबौ नहीं हुवै अर सुख-शांति बणी रैवै, इण खातर भरी जवानी में जहर री प्यालो पी लियौ। मीरां बाई जैहड़ा भक्त अठै ही जलम्या। बाबारामदेवजी, जांभोजी अर सिद्ध जसनाथजी जैहड़ा अवतारी पुरुष अठै हुया। संत दादूदयालजी, हरीरामजी, श्रीरामचरणजी, श्रीभीखणजी (जिकां तैरै-पंथचलायौ) आद संता री विचरण-थळी भी आ राजस्थान री धरती ही रैई। इण धरती ऊपर अनेकं शूरवीरां, सत्यां, संतां, भक्तां, अर आचार्यां आपू आपरी विशेषतावां प्रकट करता थकां इण प्रदेश रौ नांव ऊंचौ करियौ। खनिज-संपदावां री दीठ सूं भी राजस्थान लारै कोनी। अठै तेल अर कोयलै जैहड़ी बेस कीमती जिन्सां रा भंडार मिळै। तांबौ, सीसौ, जसदो आद धातुवां री खांणां अठै है। इण तरै राजस्थान री धरती रौ नांव भारत में सिरै गिणिजै। अठैरी रेत रै कणुकै-कणुकै में अठैरै शूरवीरां रो लोही सींचिजियोड़ो है अर गांव-गांव में सत्यां अर झूझारां री देवळयां ऊभी आपरै जमानै रो परचौ देवै।

राजस्थानी भाषा रै प्रति पारीकजी रा विचार दोय तरे रा मिलै है। विद्यार्थी काल में जद उणां लिखणौ शुरु करियो, अै राजस्थानी नै हिन्दी री अेक उपभाषा मानता। उणां आपरै आरंभिक लेखां में राजस्थानी भाषा नै हिन्दी री दूसरी भाषावां–ब्रज, बुंदेलखंडी, अवधी आद है–आळी पंगत में राखता, पण पारीकजी राजस्थानी-साहित्य अर लोक-साहित्य री शोध-खोज में लाग्या अर उणारै सामने श्रीकृष्ण रुक्मिणी री बेलि, ढोला मारू रा दूहा माधवान काम कंदला रा दूहा, कान्हड़दे प्रबंध, वचनिका राव रतनसिंहजी महेशदासोत री, राजरूपक, गजगुणरूपक, दयालदास सिंढायचरी ख्यात, नैणसी मुंहता री ख्यात, सूरजप्रकाश जैहड़ा ग्रंथ आया तो राजस्थानी-भाषा रै प्रति उणां रा विचार बदल गया। उणां बाद में इण भाषा नै अेक स्वतंत्र भाषा रै रूप में सिकारी।

सचमुच ही आ अेक घणै अचंभै री बात है कै हिन्दी रै चोंटी रै विद्वानां अर कोशकारां राजस्थानी-भाषा नै हिन्दी री एक उपभाषा (अवधी, ब्रज, बुंदेली आळै दांई) तो मानली, पण हिन्दी रै कोश में अेक भी शब्द राजस्थानी-भाषा रौ नहीं सिकारीज्यौ। बडैसूं बडै कोश नै उठायर देखलो उण में राजस्थानी ग्रंथ रौ अेक भी उदाहरण नहीं मिळै। इण ही घपलै रै कारण अनेक हिन्दी रै नामी-धामी विद्वानां राजस्थानी-ग्रंथां री टीका रै नांव ऊपर मजाक करी है। जद कै राजस्थानी-भाषा रौ साहित्य, कोश, व्याकरण अर छंदशास्त्र तकात न्यारा है तो बा हिन्दी री अेक बोली किंयां हुई ! राजस्थानी-भाषा खुद अेक सबळी भाषा है। इणरौ व्यवहार-क्षेत्र बहुत लंबौ-चवड़ौ हो ! वर्तमान में जिको राजस्थान प्रदेश गिणीजै, इण रो निर्माण राजनैतिक कारणां सूं हुयौ है, जिकैरौ क्षेत्रफल बहुत छोटौ है।

जिकै दिनां दिल्ली ऊपर हिन्दू बादशाही ही बै बादशाह राजस्थान रा ही हा। महाराज पृथ्वीराज चौहान अंतिम हिन्दू-सम्राट हा। इणां रै जमानै में जिकी सभ्यता अर संस्कृति पनपी, उण रौ मूळ राजस्थानी हो।

वर्तमान रौ गुजरात प्रदेश, महाराष्ट्र रौ थोड़ौ भूभाग, दिल्ली-प्रदेश, हरियाणो, ब्रज-प्रदेश औं सगळौ र सगळौ भू-भाग राजस्थान रै अन्तर्गत हो। इण प्रदेश में जिकी भाषा बोलीजती, उणनै मरूभाषा, मरूभूम-भाषा, पुराणी (जूनी) गुजराती आद नांवां सूं ओळखता इण लंबे-चौड़े प्रदेश में बोलीजण आळी भाषा अेक ही अपभ्रंश, जिकै नै केई नागरी अपभ्रंश अर केई गुर्जरी अपभ्रंश कैवै, सूं विकसित हुई ही। इण रौ राजस्थानी अथवा गुजराती नांवकरण घणा पछैरा है।

मरू-भाषा (राजस्थानी) रौ क्षेत्र बहुत-बडौ हो, इण खातर इण में विभिन्न शैलियां रो विकास हुयौ। इण तरफ खोज-बीण बहुत कम हुई है। राजस्थान में राजा-महाराजा, ठाकुर-सरदार, सेठ-साहूकार सदा सूं ही विद्याव्यसनी रैया है। अै लोग खुद भी साहित्य रौ सर्जन करता अर ख्यातिप्राप्त साहित्यकारां नै आश्रय भी देवता। राजपूती रै शौर्य रो वखाण करण आळी दोय जातियां अठै प्रमुख रैई

है—चारण अर भाट। इणां दोनुवां री शैली भी अलग-अलग पनपी। चारण शैली आगै चालर "डिगंळ" रै नांव मूं प्रचलित हुई अर भाटांरी भाषा "पिगंळ" रै नांव सूं। पृथ्वीराज रासौ नै लोग इणरी शैली रै कारण ही भट्ट-भणंत कैवै। इण रै साथै-साथै लोक-शैली भी चाली। ढोला-मारू रा दूहा, माधवानळकामकंदळा जैहड़ी लोक-प्रिय रचनावां इण शैली री बानगी है। सगळौ जैन-साहित्य राजस्थानी री इण ही लोक-शैली में सिरजीजियौ। अनेक जैन मुनियां तो राजस्थान रै लोक-गीतां नै आधार बणायर आपरै साहित्य री सर्जना करी। तेरै पंथ नै चालू करणिया आचार्य भीखणजी रौ सगळौ साहित्य उण दिनां रै चलगत री राजस्थानी में लिखिज्यौ है, जिकै नै परिनिष्ठ राजस्थानी रौ नांव दियो जा सकै है। राजस्थानी-साहित्य में साधु-सन्यासी अर मुसलमानां रै मुंहडै सूं जिकी भाषा बोलायीजी है आगै चालर बा ही खड़ी बोली रै रूप में विकसित हुई। उत्तरी भारत रा महान संत कबीर, गुरु गोरखनाथजी तथा अन्य सिद्धां-सन्यासियां री रचनवां में उण ही खड़ी-बोली रा दर्शन हुवै। जिकी नै उण दिनां तो नहीं, बाद रै विद्वानां सधुक्कड़ी भाषा रौ नांव दियौ। कुतब-शतक अर राहब-साहब री वात (उपन्यास) में इण ही भाषा रौ प्रयोग हुयो है। तथा राजस्थानी-साहित्य में जठै-कठै ही साधु-सन्यासियां, पीर-फकीरां अर मुसलमान पात्रां रौ जिकरो आयो है, उठै बै खड़ी बोली ही बोलै।

इण तरै राजस्थानी-भाषा रै साहित्य री-चारण-शैली (डिंगळ), भाट-शैली (पिगंळ), लोक-शैली (जिकी में सगळौ लोक साहित्य अर जैन-साहित्य आवै) अर सधुक्कड़ी-शैली-अै च्यार प्रमुख रैई है। इण विषय सूं अणजाण लोगां राजस्थावी-भाषा रै बारै में अनेक कपोलकल्पनावां प्रकट करी है अर भ्रमजाळ फैलायो है।

राजस्थानी-भाषा में भी बीजी भाषावां आळै दांई विकास हुवतौ गयौ। बारै कोसै बोली पळटै रै हिसाब सूं राजस्थानी री सइ कडूं बोलियां है, पण आधुनिक विद्वानां इण भाषा नै च्यार भागां में बांटी है-१ मारवाड़ी, २ ढूंढाड़ी, ३ माळवी अर ४ मेवाती। पण औ वर्गीकरण वर्तमान-काळ री थिति रौ है। प्राचीन-काळ में जिकौ साहित्य रचीज्यो उण में बौळायत मारवाड़ी-भाषा री हीज है। कोटा, बूंदी, भरतपुर, अजमेर, जयपुर, जोधपुर, जैसलमेर, बीकानेर इत्यादि बहुत लंबै-चवडै प्रदेश में सर्जित साहित्य अेक ही भाषा में मिळै। क्षेत्रीयता रौ कठै ही नांव-निसाण भी नहीं हो। वर्तमान-काळरै साहित्यकारां आज-काल आपूआपरी मातृभाषा नै आधार मान र साहित्य-सर्जना करै। फेर भी राजस्थानी-भाषा रा घणकरा साहित्यकार आज भी परिनिष्ठित राजस्थानी में ही रचना करै अर अै रचनावां ही राजस्थानी री रचनावां गिणीजै।

पारीकजी राजस्थानी-भाषा नै आपरै उचित स्थान दिरावण में सक्रिय रैया। उणां आपरै लेख-निबंधा में इण वात रौ जिकरो करियो है। उणांरी मान्यता ही

कै-काशी नागरीप्रचारिणी सभा अर हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग जैहड़ी संस्थावां ज्यूं हिन्दी रै खातर काम करै, उणहीज तरै राजस्थानी-भाषा अर साहित्य रै प्रचार-प्रसार सारू अेक मजबूत संस्था री जरूरत है। राजस्थान में उदारमना धनिकां री कोई कमी कोनी। धन रै खातर काम नहीं अड़ै, पण संगठनात्मक प्रवृति रै अभाव रै कारण औ काम पार नहीं पड़ियौ। उणांरी मान्यता ही कै छोटै रूप में शुरु करियोड़ौ काम आगै जाय नै ठप्प हुय जावै। उणां में कदै ही धन री कमी आजावै अर कदै ही संचालन रै मसलै नै लेयर आपोपरी में तणाव ऊपज जावै, जिणसूं संस्था रौ भट्ठो बैठ जावै। इण काम नै मजबूती रै साथै शुरु करियो जावै तो कोई कारण नहीं है कै राजस्थानी नै आपरी ओपती जागा नहीं मिळै।

पारीकजी राजस्थान-प्रदेश में जिकौ हिन्दी-साहित्य सरजीजियौ अर जिकै साहित्य री रक्षा हुई, इण रौ लेखौ-जोखौ आपरै निबंधां में कियो है। सन् १९३५ ई. में इंदौर में अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य (२४ वां) सम्मेलन रौ आयोजन हुयौ। इण सम्मेलन री अध्यक्षता राष्ट्रपिता गांधीजी खुद करी। इण में पारीकजी नै "राजस्थान की हिन्दी सेवा" विषय ऊपर निबंध-पाठ करणै रो मौकौ मिल्यौ। इण निबंध री सामग्री भेळी करण खातर पारीकजी राजस्थान भर में घूम्या फिरिया। इण रै बाद १९३५ ई. में ही इलाहाबाद में हिन्दुस्तानी अकादमी री तरफ सूं आयोजित "हिन्दी साहित्य परिषद" में पारीकजी" उत्तर अपभ्रंश कालीन लोक-भाषा" विषय ऊपर अेक खोज-पूर्ण निबंध लिखित भाषण रै रूप में पढ़ियौ। "राजस्थान के राजाओं की हिन्दी सेवा" अर "हमारा आतंरिक केन्द्रीकरण" निबंधां में राजस्थान रै जरियै जिकी हिन्दी-सेवा करीजी उणरो लेखौ-जोखौ प्रकट करीज्यौ। इणरै अलावा पारीकजी–"कवि जटमल कृत प्रेमलता चउपई", भैरू कवि और उनकी कविता", "मेड़ता, निवासी महाकवि वृंद" आद निबंधां में राजस्थान रै अज्ञात अथवा अल्पज्ञात कवियां रौ परिचय हिन्दी-जगत रै सामनै राख्यौ। उणां रै जरयै राजस्थानी ग्रंथां ऊपर करीज्यौ काम भी हिन्दी-साहित्य री उन्नति करणै सारू मील रौ पत्थर है।

हिन्दी अर राजस्थानी रै संबंध में पारीकजी रा विचार स्पष्ट हा। उत्तर अपभ्रंश कालीन लोक-भाषा सूं जिकी-जिकी भाषावां रौ जलम हुयौ, उणां में राजस्थानी मोभी बेटी ही। इण खातर राजस्थानी हिन्दी री बडी बहिन हुई। उणां आपरै, उत्तर अपभ्रंश कालीन लोक-भाषा" निबंध में लिख्यौ कै–इणी (राजस्थानी) भाषा अतीत काल में आपरो सर्वस्व गमायर हिन्दी रै स्वत्व री रिछया करी अर उणरै स्वरूप रौ निर्माण करियौ। इण बीज आपरौ आपौ मिटायर हरियै-भरियै हिन्दी-रुंख नै जलम दियो।"

हिन्दी अर राजस्थानी रै विचाळै भेद री भीत खड़ी करणियै मिनखां नै पारीकजी रा अै शब्द देखणा चाहीजै–"केई विद्वानां री आ धारणा भी है कै राजस्थानी अेक प्रांतीय भाषा है अर हिन्दी सूं बहुत-कुछ स्वतंत्र अस्तित्व राखणै आळी है। इणरै साहित्यरी बढोतरी हुवणै सूं हिन्दी री उन्नति नहीं हुयर हिन्दी री अेक होड करण आळी भाषा री प्रतिष्ठा हुसी, जिणसूं हिन्दी री वर्तमान गति में अवरोध आवण री आशंका करीजै। आ आशंका ही निर्मूळ है। पैला तो साहित्यिक दृष्टि सूं राजस्थानी नै हिन्दी सूं स्वतंत्र भाषा मानणो ही भूल है। अेहड़ौ विचार करियां तो अवधी, ब्रजभाषा, बिहारी आद हिन्दी री अंगीभूत भाषावां अर उणांरौ साहित्य भी स्वतंत्र भाषा अर साहित्य समझियौ जासी। राजस्थानी अर हिन्दी रो चोळी-दामण रौ साथ रैयो है। अर हिन्दी साहित्य रै इतिहास में राजस्थानी रो महत्वपूर्ण हाथ है। राजस्थानी रो हिन्दी रै साथै "अंगां गि-संबंध" है।

राष्ट्र-प्रेम रौ हेतु पारीकजी रौ काशी प्रवास अर "हिन्दू विश्वविद्यालयीय शिक्षा" रैयो है। हिन्दू विश्वविद्यालय री थरपणा ही देश में राष्ट्र-वादी विचार-धारा रै प्रचार-प्रसार नै ध्यान में राखर करीजी ही। इणरा संस्थापक पं. मदनमोहनजी मालवीय राष्ट्र-प्रेम री साकार मूर्ति हा। विश्वविद्यालय में अध्यापन करण खातर जिकै महानुभावां नै अध्यापक बणाया, बै सगळा र सगळा राष्ट्र-प्रेमी, सनातन धर्म रा पोषक अर स्वतन्त्रता रा हामी हा। उणां रै दिशा-निर्देशन में पारीकजी री शिक्षा-दीक्षा हुई। विद्याव्यसन तो उणांनै विरासत में मिल्यौ हो। वैदिक-साहित्य रै अध्ययन सूं उणांमें स्वदेश-प्रेम, राष्ट्रभाषा री उन्नति, स्वतंत्रता प्राप्ति रा उपाय आदि सराहनीय गुणां रौ विकास हुयौ। उणां दि. १६ दिसंबर, १६२२ सूं ४ जनवरी १६२३ तक जिको" अखिल भारतीय कांग्रेस महासम्मेलन गया में हुयौ, उण में पारीकजी आपरै बीजै साथियां रै साथै निर्भीकता पूर्वक स्वयं सेवक रौ काम कियौ। उण दिनां अेहड़ौ साहसिक काम करणौ हरेक रै बळ-बूतै री बात नहीं ही। "पराधीन सपनेहु सुख नाहीं" निबंध में पारीकजी जिकै बिचार प्रकट करिया है, उणांमें राष्ट्र-प्रेम मुंहडै बोलै है। उण जमानै में पारीकजी जैहड़ा निर्भीक युवक ही अेहड़ा विचार प्रकट कर सकता हा।

भारतीय नाट्य-शास्त्र में पारीकजी री गहरी अभिरुचि ही। उणांरी मान्यता ही कै–संसार रै कूणै कूणै में जिकी नाट्य-धारा बैई, उणरौ जलमदाता भारत हो। भारत में नाट्य-कला आपरी चर्म-स्थिति में ही। अठै रै नाट्य-शास्त्रां में नाटक रै प्रति जिकौ सूक्ष्म विवेचन मिळै, दूसरै देशां में दुर्लभ है।

पण वर्तमान में पारसी थियेट्रिक कम्पन्यां नाटक री जिकी दुर्गति करी, बा सैवण जोग नहीं है। नाटकां रै जरियै नाटककार आपरै हिंयै रा भाव सीधा देखण आळां ताई पहुंचावणै री खिमता राखै। इण हीज भावना नै मुख्य आधार बणायर पारीकजी अनेक नाटक लिख्या, अर अनेक नाटकां नै मंचित करणै में आपरौ

सहयोग दियौ। बिड़ला कालेज पत्रिका, पिलाणी रै लेखां सूं संकेत मिळै है कै--बिड़ला कालेज नाटक मंडळी" रै तहत पारीकजी "कृष्ण-सुदामा", "जयद्रथ-वध", "भक्त प्रहलाद" नाटक प्रस्तुत करिया। पिलाणी रै रंगमंच सूं ही उणां "बौळावण" नाटिका नै प्रस्तुत करी। इण नाटिका देखण आळां ऊपर आपरी छाप मांड दी। सुप्रसिद्ध दलितोद्धारक श्रीठक्कर बापारी अध्यक्षता में "बोळावणं नै दुबारा अभिनीत करी। कैवै है कै इण में पिलाणी तथा इण रै असवाड़लै-पसवाड़लै गावां अर ढाण्यां सूं ३००० रै अड़ै-गड़ै दर्शकां भाग लिया। इणरै पछै पारीकजी ७ सितंबर, १६३५ नै "चन्द्रगुप्त" वा "ईश्वर भक्ति", २८ अगस्त, १६३७ नै "कृष्णार्जुनयुद्ध" अर १८-१६ अप्रेल, १६३८ नै "मीरांबाई" नांव रा नाटक खेल्या। "वीर दुर्गादास" नाटक री भी पड़त मिळै है। सगळां सूं पैलड़ै प्रहसन "समाज सुधार" नै भेळर पारीकजी काफी नाटक लिख्या। पण प्रकाशित फकत अेक "बौळावण" ही हुयौ। "मीरां" अर "वीर दुर्गादास" रा हस्तलेख मिळै, बाद बाकी नाटकां री फकत सूचना हीज मिळै है, नाटक नहीं।

पारीकजी नाटकां में स्वभाविकता ऊपर बहुत बड़ौ जोर देवता। उणां लिखियो है कै-पारसी कंपनियां रै नाटकां रै भूंडै प्रदर्शन अर उछळ-कूद सूं तो नटां अर कंजरां रा ख्याल घणा आछा है, जिकां में कम मूं कम आपरी स्वभाविकता तो कायम रैवै। नाटक री कथा-वस्तु जिण प्रदेश री हुवै, संवादां री भाषा भी उण ही प्रदेश री हुवणी चाहीजै। बौळावण रै प्राक्कथन में उणां लिखियौ कै आ (बौळावण) नाटिका हिन्दी में भी लिखीज सकती ही, पण तद इण री गत देश री गधी अर पूरबी चाल आळी हुवती।

पारीकजी "आधुनिक हिन्दी नाटकों का अभिनय" सिरै नांव सूं अेक बहुत-बडो उपयोगी लेख लिख्यौ। औ लेख हिन्दुस्तानी (भा.२ अंक ४) जैहड़ी प्रतिष्ठित पत्रिका में छप्यौ। वर्तमान रै नाटक करणियै लोगां नै इण लेख सूं सीख लेवणी चाहीजती, जिकै कानी ध्यान कमही दिरीज्यो। बै नाटकां रै अभिनय में जिण तरै रा सुधार चावता उणां नै इण तरै बांट्या जा सकै है-

1. लोक धर्मी अभिनय रै ऊपर आधारित स्वाभाविक अभिनय हुवै अर कृत्रिम उपकरणां नै काम में लाया जावै।
2. मानवीय अवस्थावां रौ स्वाभाविक अनुकरण करणौ नाट्यकळा रौ आधार-तत्व है।
3. जठै तांई ताबै आवै लोक-धर्म री बढोतरी अर नाटय धर्म री कमी हुवै।
4. अभिनय-कळा रै हितोषियां नै सिनामें रै नूंवै आयोजनां सूं सहायता लेवणी चाहीजै, किन्तु असम्भव कल्पना सूं बंचणौ भी चाहीजै।
5. नाटक में लोक-रुचि रौ बहुत-बड़ौ आकर्षण रैवै।

वर्तमान काळ री शिक्षा-नीति सूं पारीकजी राजी नहीं हा। शिक्षा-संबंधी लेखां में उणां लिख्यो कै–शिक्षक आपरै विद्यार्थियां नै आछी शिक्षा नहीं देय सकै तो कोई बात नहीं, पण कम सूं कम उणां नै कुशिक्षा तो नहींज देवणी चाहिजै। पारीकजी री शिक्षा-दीक्षा जिकै विद्यालय में हुई बो अेक तरै सूं प्राचीन गुरुकुल आळै दांईं चालतौ। उठै शिक्षा रै साथै-साथै धर्म, कर्त्तव्य, राजनीति, सदाचार, देश-प्रेम आदि बिषयां री शिक्षा दिरीजती, उणं सू विद्यार्थी रौ सर्वांगीण विकास हुवतो, जदकै दूसरी शिक्षण संस्थावां में शिक्षा लेयर आया विद्यार्थी-वर्तमान काळ रै समाज रै साथै रळ-मिळर नहीं बैठ सकता अर नहीं कोई उद्योग-धंधो करर आपरो तथा आपरै परिवार रो पेट पाळ सकता। पारीकजी लिखियो कै अेक अपढ़ मूर्ख री तुलना में अेक पढयौ-लिख्यौ मूर्ख ज्यादा खत्तरनाक हुवै।

कंपनी राजरै जमानै में मैकालै जिकी शिक्षा नीति बणाई उण रौ खास उद्देश्य कंपनी खातर कलर्क तैयार करणै रौ हो। आज कंपनी रो राज भी कोनी अर अंग्रेज भी अठै सूं कूच करग्या, पण शिक्षा-नीति आज भी थोड़ै-बहुत बदळाव रै साथै बा हीज रैई। पारीकजी री मान्यता ही कै-शिक्षा रै साथै-साथै धर्म री शिक्षा भी दी जावै। इण तरै री शिक्षा लेवणियौ छात्र कमसूं कम अधर्म कानी तो नहीं मुड़ै। वर्तमान में जिकी उछल-कूद अर हिंसा रो वातावरण बण रैयो है, इण में आज री अधकचरी शिक्षा रौ बहुत-बडौ हाथ है :

का तो तिल कोरा भला, का लीजे तेल कढाय।
अधबिचली कूलर बुरी, दोनूं दीन सूं जाय।।

आज रै शिक्षा-विदां नै भारत री आवश्यकतावां नै देखर उणरै अनुरूप ही शिक्षा नीति बणाणी जोईजै। भाषा कोई भी सीखणी बुरी कोनी, पण आज आजादी रै च्यार दशक बीत्यां बाद भी राष्ट्रभाषा रै पद ऊपर हिन्दी नहीं थरपीजी, बै ही दोय फीसदी अंग्रेजी जाणणिया अट्ठाणवै फीसदी लोगां ऊपर राज करै। भारत रा व्यापारी सगळी जागां व्यापार में सफल हुवै। बै किसै भी परदेश में जायर ठगीज़ै नहीं, खुद ही ठग भलां ही लेवौ। इणरी सिद्धि रै मूळ में उणांरी भाषा-मुडिया है, जिकै नै व्यवसायी टाळर बीजौ कोई समझ ही नहीं सकै। बै काम पड़ियां तेल नै तिल बणाय देवै अर सामलै नै भ्रमजाळ में फसाय देवै। कैवण रौ मतलब औ कै देश रौ मूल आधार उणरी भाषा है। आज जे "हिन्दी" भाषा रो वर्चस्व कायम हुय जावै तो देश री आधी सूं ज्यादा गरीबी अपणै आप खतम हुय जावै।

जिकी भाषा में आपां रै देश री सभ्यता अर संस्कृति रो जिकरौ तक नहीं है, उण में शिक्षा लेयर आपांरा छात्र कियां भारतीय हुय सकै है। पारीकजी रै जमानै में तो शिक्षा री बड़ी दुर्गत ही। लोग शिक्षा रै नांव ऊपर जागा-जागा दूकानां

लगायां बैठा हा। पारीकजी वर्तमान री शिक्षा पद्धति में जिण तरै रा सुधार चावता, थोड़ै में इयां प्रकट करीज सकै है–

१. शिक्षा रो संबंध नैतिक-जीवण, सदाचरण, स्वावलंबन, आत्मगौरव वा विवेक सूं है।
२. शिक्षा अर धर्म रो घनिष्ठ संबंध है। जिण में मानव री सर्वांगीण उन्नति अर मुक्ति मिळै, बोही धर्म है। धर्म भावना रै साथै आचरण अर विवेक रो हुवणो अनिवार्य है।
३. पाठयक्रम देश री आबोहवा रै मुताबिक हुवै।
४. कोरो पोथी-ज्ञान ही शिक्षा नहीं हुवै है।

सनातन-धर्मी हुवणै रै कारण पारीकजी रो भगवान में अटूट विश्वास हो। सगळी चराचर री सृष्टि भगवान री बणायौड़ी है। बो भगवान नहीं तो जलमै, नहीं बूढो हुवै अर नहीं मरै। उणरी भक्ति कदै ही अेहळी नहीं जावै। जीवांरा जिकै कर्म-बंध खुदरा बांधियोड़ा है, उणांनै तो भुगतणा ही पड़ै, पण भगवदभक्त रै नूंवै कर्मा रो बंध नहीं है। भगवान री सृष्टि में मानव देही सगळां सूं उत्तम है। देवता तकात इण देही री आश करै। कारण कै मानव-देही पायर जीव आपरै कर्म-बंधां सूं छूटकारौ पायर मुक्त हुय सकै। इण खातर इण देही नै मुक्ति रौ दरवाजौ बतायौ है। पारीकजी ईश्वर रै प्रति समर्पित हा। उणां मौन निबंध में लिख्यो है–"हे जीवननाथ ! औ सेवक चिरकाळ सूं आपरी उडीक में बिना पलक झपायां बैठो नेपथ्य तरफ देखै है? आज संसार-सागर रै उण पार क्षितिज रै ऊपर उठती लावण्यमयी रतास री कोर झळकै है। जाणीजै है कै स्वामी आज दास रै शून्य-सदन कानी कृपा-कटाक्ष फेरयौ है।

पारीकजी री मान्यता ही कै टाबर (बाळक) ही भगवान रौ साकार-स्वरूप है। इण रै जरियै भगवान नै राजी करणौ कोई मुश्किल काम कोनी। बै भगवान नै सर्वव्यापी, सर्वज्ञ अर सर्वशक्तिमान मानता हा। पापी लोगां रै पाप करती बेळा भगवान वारै कनै रैवै अर जितरै आपरो वश चालै, वांनै पाप करणै सूं रोकै, पण कर्म करण में जीव स्वतंत्र है अर आपरै अहं भाव रै कारण भगवान री आवाज सुणर भी अणसुणी कर देवै अर पछै उण पाप रौ फळ भोगै। पारीकजी इण हीज कारण शिक्षा रै साथै-साथै धर्म नै भी जोड़ता। जाणकार आदमी जाणबूझर खाडै में नहीं पड़ै। पारीकजी चावता कै वर्तमान में पढ-लिखर समाज में आंवण आळा छात्र धार्मिक, सभ्य, देश-प्रेमी, कर्त्तव्यनिष्ठ हुवै। प्राचीन-काळ में गुरुकुळ-प्रणाळी सूं शिक्षा-प्राप्त करियोड़ा छात्र, आदर्श छात्र हुया करता। तद ही भारत सगळै संसार में सिरै गिणीजतौ।

पारीकजी स्त्री-शिक्षा रा भी हिमायती हा। उणांरी मान्यता ही कै-जठै नारी-जाति रो आदर-सन्मान हुवै, बठै सुख-शांति बणी रैवै। पारीकजी रै जमानै में लुगायां री शिक्षा-दीक्षा रौ कोई इंतजाम नहीं हो। समाज रौ आधो-आध लुगायां रौ है। जठै तांई ऊठ अर बळधां री जोड़ी मिलाई जासी, गृहस्थी रो गाडो बराबर नहीं चालै। शिक्षा-विदां री मान्यता हैं कै बेटै नै पढावणौ तो फकत उण रौ जीवन बणावणौ है अर बेटी रै पढावणै सूं अेक पूरो परिवार भण्यौ-पढयौ हुवै। पढी-लिखी मावां रा टाबर स्कूल जावण जोगा हुवै इतरै सौ तांई री गिणती अर कक्कौ-बारखड़ी जाणण आळा हुवै। इण रौ आगै जायर बहुत-आछो फळ हुवै। पढी-लिखी लुगाई आपरै परिवार री हर-तरै सूं मदद करै। कम सूं कम अण पढां आळै दांई केई रै झांसै में तो को आवैनी उणां आपरै निबंध "स्त्री समाज के प्रति हमारा कर्त्तव्य" में स्त्री-समाज नै ऊंचो उठावणै रा गुर बताया है।

अशिक्षा अर रूढियां रो चोळी-दामण रौ साथ है। अशिक्षित समाज में ही रुढियां पनपै। अै रुढियां ही कुरीतां नै जलम देवै, जिण सूं समाज कमजोर पड़ै। तत्कालीन-समाज में बाल-विवाह, वृद्ध-विवाह, बेमेळ-विवाह जैहड़ी घातक रूढियां रो चलण हो। औसर-मौसर, तीज-तिंवार अर छूछक-दायजै में भलै-भलै परिवारां रा आदमी घाटै रळ जावता, जिकै वरसां तांई करजै रै अभिषाप सूं नहीं छूटता। आर्य-समाज जैहड़ी वैदिक धर्मावलंबी संस्थावां-भारत रै कूणै-'कूणै में व्यापी रूढियां अर कुरीतियां रौ भंडाफोड़ करियौ, पण जठै शिक्षा रो प्रचार-प्रसार कम हुवै, बठै रा आदमी सहज में ही नहीं समझ सकै। भारत ही कांई प्रत्येक देश री उन्नति रौ मूळ-मंत्र शिक्षा है। शिक्षित स्त्री-पुरुष आपरो भलो-बुरो खुद ही समझण लाग जावै। अेहड़ै समाज में रूढियां नहीं पनप सकै।

पारीकजी रो ठा. रामसिंहजी सूं सन् १९१८ में परिचय हुयो तद बै नवीं क्लास में पढ़ता हा। इणां रौ परिचय घनिष्ट मित्रता में बदळतौ गयौ अर अै दोनूं साहित्य में गैरी रुचि लेवण लागा। काशी-प्रवास रै समय में इणांरी साहित्यिक अभिरुचि दिनो-दिन बधती गई। कवीन्द्र रवीन्द्र रै गद्य-गीतां नै आधार बणायर खुद भी गद्य-गीत लिखण लागा। इणां गद्य-गीतां रै बारै में श्री शंभूदयालजी सक्सेना (राजस्थानी, भा.३ अंक २) लिख्यो है–"इणां रचनावां में युवा-हृदय री उच्छ्वास है, जिका पाठक नै क्षण भर में प्राणां रै स्पंदन सूं भर देवै।"

इणां गद्य-गीतां रो अेक संकलन "मेघमाळा" रै नांव सूं श्रीपारीकजी री ४० वीं पुण्य तिथि ऊपर उणां रै सुपुत्र श्री कृष्णशंकर पारीक, बीकानेर सूं प्रकाशित करायौ, जिकै में श्री पारीकजी रा अर ठा. रामसिंहजी रा रळिया-मिळिया ४२ गद्य-गीत है। इणां मांय सूं पारीकजी रै गद्य-गीत "सौरम रौ सार" इण भांत है–

हे सौरम रा सार पंथी, कदैई इण मारग सूं मती जाया कर। थारा घणा गुगराळा बाळां में सुरग रा फूल खिलै, जद तूं अदीठ हुयर कौतकी री तरां चल्यौ

जावै, तो म्हारी बगिया रा सारा भँवरा अर म्हारा सारा परागकण कळयां रै हिड़दै सूं निकळ निकळर थारी खोज में अठी-उठी भटकण लागै अर म्हारी तितळयां रा बादळ कोई अणजाणी दिसा में उड जावै।

म्हारी नैनी बाळिकावां रोवण लागै अर उण सब सूं ऊंची चोटी खानी भागण रौ हठ करण लागै।

म्हारी कळयां काची नींद में आंख्यां खोल देवै अर टकटकी लगायर मारग सामी देखण लागै। थनै अठीनै सूं जाणौ ही है तो म्हारी बगियां में झरणै रै तट पर फूलां छाई तमाल री घणी छाया में बिसाईं लेर सब नै सुखी करतौ जा।

नहीं तो अे सौरम रा सार पंथी, सब नै बावळा, वणायर इण वाट सूं कदैई मत जाया कर। (पृ. ८)

अेकांत मिलण

कोई कीं भी कैवै, हूं तो बां सूं इणी तरां मिळूंली।

कंई अेकांत में मिलणौ पाप है ?

तो पछै भगत आपरी एकांत ध्यावनां नै छोड क्यूंनी देवै ?

कठै ई कोई उणां रौ प्रतिबिंब म्हारी पुतल्यां में और उणांरी मुसकाण री किरण म्हारै गालां पर नीं देख लै।

हूं उणां सूं रहस में मिळूंली।

मैं जद बां नै देखूं तद दूसरां नै नी देख सकूं।

दूसरां रै देखतां बै म्हारै खनै कोनी आवै।

संसार सदाई उणां नै बंदी बणावणै री टोह में रैवै। मनै चितां है कै म्हारै कारण कठैई बै पास में नीं बंध जावै। (पृ. १९)

पारीकजी भगवान में पूर्ण भरोसौ राखण आळा आदमी हा। प्रकृति नै भगवान री सहचरी मानर उणरौ वर्णन करियौ है। प्रकृति खुद तो जड़ है। भगवान रै प्रकाश सूं बा प्रकाशित हुयर आपरो खेल रचावै है। पारीकजी जिण दिनां आपरा औ गद्यगीत लिखिया, उण दिनां कवीन्द्र रवीन्द्र नाथ ठाकुर रा गद्य गीत चलण में हा। कबीर रै रहस्यवाद री चर्चा भी साहित्य-जगत में हुवणै लागगी ही। पारीकजी आपरै गद्य-गीतां में प्रकृति रै भिन्न-भिन्न अजूबां नै रूपायित करिया है। बै प्रकृति री ओट में रैवाणीयै चेतन-ब्रह्म री उपासना करर उण रै साथै अपणापौ स्थापित करण री इंछा राखता हा। भगवान रै अर आपरै बिचाळै बै किणी तरै रो व्यवधान नहीं चावता हा। मिळण री बेळा में उणांनै वाणी तकात रौ व्यवधान नहीं भावतो, बस फकत बै अर उणांरो धणी भगवान दोया दोय ही राजी-प्रसन्न।

संसार में जितरी भी दीखण आळी वस्तुवां है, अै सब नासवान है, पण इणां नै देखणियौ अखी है। पारीकजी इण देखणियै अर भगवान में कोई अंतर नहीं

मानता हा। आग रौ अेक बहुत बडौ गोळौ अर अेक छोटी सी चिणगख गुण-धर्म में बराबर हुवै है, इणी तरै जीव अर ब्रह्म री थिति है। जीव उण ही ब्रह्म रो अंश है। जिकै गुण ब्रह्म में मिळै, बै ही जीव में मिळै, पण मात्रा रौ अंतर है। पारीकजी रै इणां गद्य-गीतां नै विद्वानां चोखा सराया है। जे पारीकजी रो औ लेखन आगै भी चालू रैवतो तो साहित्य खातर अेक उपलब्धि मानीजतौ।

पारीकजी रै इणां गद्य-गीतां में भाषा अर शैली री छटा देखण जोग है। संस्कृत निष्ठ हुवतां थकां भी इणांरी शैली में दुरूहता नहीं है। रहस्यवादी चिंतन नै बां जिकी सरल शैली में बांधर पाठकां रै सामनै राखियौ, बो अेक सरावण जोगौ काम है। गिणती में थोड़ा हुवता थका भी पारीकजी रा अै गद्यगीत साहित्य री अमर थाती है।

पारीकजी रो संपादक स्वरूप

पारीकजी आपरै विद्यार्थी जीवण में ही अेक सफल संपादक रै रूप में प्रसिद्ध हुयग्या हा। "प्रेमाश्रम" नांव री हस्तलिखित पत्रिका वाराणसी-कालेज रै तत्कालीन दिग्गज विद्धानां सराई ही। राजस्थान रै ख्याति प्राप्त विद्वानां भी इण पत्रिका रौ आछौ स्वागत करियौ। इण पत्रिका रै संपादन में ठा. रामसिंहजी अर स्वामी नरोत्तमदास जी रो पूरौ पूरौ सहयोग हो, पण पारीकजी री मेहनत उणासूं घणी ही। सचमुच में पारीकजी री प्रतिभा बडी विलक्षण ही। बै लिखण में कदै ही थकान रौ अनुभव नहीं करता हा। उणांरै साथ्यां बतायौ कै कई बार तो पारीकजी दोय-तीन दिनां ताईं लगातार लिखता रैवता, फेर भी थकता कोनी। औ उणां नै सरस्वती रौ वरदान हो।

कळकत्तै सूं प्रकाशित हुवण आळै "राजस्थान" नांव रै पत्र नै पारीकजी आपरौ ही पत्र मानता हा। किणी कारणां सूं उणरौ प्रकाशन बंद हुयग्यौ तो पारीकजी बहुत दुखी हुया। उण पत्र नै दुबारा चालू करणै रो भरसक प्रयत्न करियो। औ प्रयत्न सफल भी हुयो, पण संपादक री समस्या आडी आय खड़ी हुई। श्री पारीकजी इण पत्र रै संपादन रो भार खुद संभाळयौ। प्रदेश रै नामी विद्वानां नै संपादक अर परामर्श मंडळ में सामल करिया। पत्र री सामग्री प्रेस में पहुंची। छपाई शुरु हुई कोई आधा पाना छप्या हुसी कै पारीक जी नै न्यूमोनिया जकड़ लियौ अर १६ फरवरी, १६३६ री रात रा काळ करग्या। इणांरी उम्र फकत पैंतीस वर्षा री ही।

उपसंहार

श्री सूर्यकरण जी ब्राह्मणां री पारीक-न्यात में जलम्या। इणांरा दादोसा पं. श्री मनीरामजी न्यात रा चावा नै ठावा आदमी हा। न्यात री पंच-पंचायत मे बै आगीवान रैवता। घर में पइसै-टक्कैरी मुकळायता हुवणै सूं बै लैण-दैण रौ धंधौ भी करता। इणांरा पिता श्री उदयलाल भी आपरै छात्र जीवण में बडा ही प्रतिभावान छात्र रैया। बीकानेर जिलै सूं दसवीं री परीक्षा पास करणिया बै पैला छात्र हा। आप हिन्दी, अंग्रेजी रै साथै-साथै संस्कृत रा भी आछा विद्वान हा। छात्र-जीवण रै बाद आपरौ झुकाव संस्कृत कानी ज्यादा बधग्यौ। बै संस्कृत भाषा नै जन-सामान्य री भाषा बणावणी चावता हा। धर्म-शास्त्रां रौ गहरौ अध्ययन करियां पछै आपरी आपरै पिताजी साथै अण बण हुयगी। बै चावता कै ब्याज रो पईसो घर में नहीं आवणौ जोईजै, पण आपरा पिताजी ब्याज-बिसूरै रौ धंधौ छोडण नै तैयार नहीं हुया तद बै आपरै टाबरां नै लेयर अलायदा हुयग्या। दिन रात संस्कृत प्रचार-प्रसार रै काम में जुटयां रैवण सूं घर में आर्थिक-कठिनाई उत्पन्न हुयगी, पण बै इणरी परवाह करियां बिना इण काम में लाग्या रैया। आप केई संस्कृत पाठशालावां खुलवाई गुणप्रकाश सज्जनालय, नृसिंह पुस्तकालय, हिन्दी विश्वभारती जैहड़ी संस्थावां री थरपणा में आपरौ सहयोग दियो। इणांरी लगन इतरी बधी कै आप घर-बार छोडर अेक जजमान रै अठै रेवण लागग्या। श्री सूर्यकरणजी उण दिनां टाबर हा अर प्राइमरी में पढता। अै कोई पांचवी-छट्ठी जमात में पहुंच्या हा कै इणांरा पिताजी अचाचूकरा काळ करग्या। अेक छोटै सै विद्यार्थी रै कांधा ऊपर पूरी गृहस्थी रौ बोझ आ पड़यौ।

गृहस्थी रै आर्थिक बोझ नै कम करणै सारू पारीकजी रै गनायत-भायां अर हेतू मुलाकात्यां इणां नै काई छोटी-मोटी नौकरी करणै री सलाह दी। पण इणां री मां इण री हामी नहीं भरी। आप आपरै कठोर परिश्रम रै पांण पारीकजी नै आगै पढावणै रो निश्चय करियौ। पारीकजी आपरी मां री बात मानर दिन-रात पढ़ण में लाग्या रैया। पढाई में पूरी रुचि राखर रात-दिन कठोर परिश्रम कर'र इणां दसवीं री परीक्षा आछे नंबरां सूं पास करी।

बीकानेर रा तत्कालीन महाराजा श्री गंगासिंहजी अेक विद्याप्रेमी राजा हा। बै आपरे जिलै री छात्र प्रतिभावां नै छात्र वृत्ति देयर आगै पढ़ण सारू विभिन्न विद्यालयां में भेजता। श्री सूर्यकरणजी प्रतिभावान छात्र हा। दसवीं परीक्षा में उणांरै आछा नंबर हा, इण कारण राज री तरफ सूं उणांनै छात्रवृत्ति देयर हिन्दु विश्वविद्यालय, काशी में पढणै सारू चुणिया। राज री इण छात्र-वृत्ति सूं श्री सूर्यकरण जी री आर्थिक समस्या सुळझगी। सस्तीवाड़े रो जमानौ हो अै काशी में आपरो खर्च-वर्च कम सूं कम पइसां में चलायर बाकी री रकम आपरी मां नै भेज देवता इण रकम सूं उणां रै घर रौ खर्चो आराम सूं निकळ जावतौ।

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय उण दिनां अेक आदर्श विश्वविद्यालय हो। इणमें पढावणिया अध्यापक भारत रा चोटी रा विद्वान हा। बाबू श्याम सुन्दर दासजी बी.अे, शु. कृ. जी, हरिऔधजी अर इण विश्वविद्यालय रा संस्थापक महामना पं. मालवीय जी रै साथै रैयर उणांरी सीख रौ असर श्री पारीकजी ऊपर पड़ियो। अै आपरी ऊंची पढ़ाई पूरी करर पाछा बीकानेर आया जितरै अै अेक निष्ठावान आदर्श विद्वान वण चुक्या हा। राष्ट्रप्रेम इणांरै रग-रग में भरियौड़ो हो।

काशी प्रवास में ही श्रीपारीकजी री भेंट ठा.राम सिंहजी तंवर सूं हुई। अै सहपाठी तो हा ही, अभिन्न मित्र पण बणग्या। इणरै आपसरी रै पत्र-व्यवहार सूं पतो चालै कै अै दोय शरीर एक प्राण हा। उणांरी आ मित्रता पढाई रै पछै भी बराबर निभती रैई। पारीकजी रै आगलै संपादन कार्य में ठा. रामसिंहजी बराबर भागीदार रैया। स्वामी नरोत्तमदासजी भी इणांनै काशी में हीज मिलया। आगै चालर श्रीसूर्यकरणजी पारीक, ठा. रामसिहजी अर स्वामी नरोत्तमदासजी संम्पादक-त्रयी रै नांव सूं जग चावा हुया।

काशी रै आदर्श गुरुवा रो प्रभाव तो श्री पारीकजी रै जीवण में गहरौ जम चुक्यौ हो, पण उणां दिनां में सगळै भारत में महात्मा स्वामी दयानंदजी रै आर्य-समाज अर महात्मा गांधी जी रै अहिंसा रौ भी बहुत बडो प्रभाव पड़यौ।

श्री पारीकजी रै लेखां अर भाषणां में इण प्रभाव री साफ भळक दीसै। श्रीपारीकजी आपरै लेखां में वैदिक-साहित्य री उत्तमता, देश प्रेम अर स्त्री-शिक्षा रै बाबत काफी जोर दियो है। उण दिनां में व्याप्त बालविवाह, वृद्ध विवाह, अणमेल विवाह रै साथै-साथै समाज में व्याप्त औसर-मौसर, ब्याव-अेढां में दिखावौ संगां-व्यावां रै साथे गाळयां रै मिस फूहड़ बोलणै इत्यादि रो भी विरोध करियो। अफीम, चरस, भांग, दारु आदि नशा री भी उणां बुरायां बताई। शिक्षा चावै आदमी री हुवै अर चावै लुगायां री इण में ढील नहीं, आवण देवणी। जितरै तांई भारत में लुगायां री भणाई-पढाई ऊपर ध्यान नहीं दिरीजै, इण देश री उन्नति हुवणी मुश्किल है।

श्री पारीकजी जद पढ'र पाछा बीकानेर आया तद तांई बै राजस्थानी भाषा नै हिन्दी री अेक बोली मात्र मानता, पण जद उणां राजस्थानी रै पुराणै अर लोक साहित्य रो अध्ययन करियो तो उणांरी बा धारणा बदळगी अर राजस्थानी नै अेक स्वतंत्र भाषा रै रूप में मानण लागग्या। ढोला-मारू रा दूहां री प्रस्तावनां में उणां राजस्थानी भाषा रै भाषाई-स्वरूप नै उभारयौ है। बेलि श्रीकृष्ण रूक्मिणी री, ढोला-मारू रा दूहा अर राजस्थानी लोक गीत संपादित हुयर लोगां रै सामी आया तद ही उणांनै पतो चाल्यो कै राजस्थानी भाषा अेक साधारण भाषा ही नहीं, च्यार-च्यार उपभाषावां री मां पण है। इण री बोलियां तो इतरी है कै गिणती हुवणी भी मुश्किल है।

संपादकः त्रयी में श्री पारीकजी लिखणै रै मामलै में सदा आगै रैवता। ठा. रामसिंहजी जागां-जागां आपरा सुझाव देवता अर स्वामी जी तैयार करता प्रेस कापी अर शब्दकोश। श्री स्वामीजी री लिखावट मोत्यां री लड़ी सी चमक्या करती।

श्री पारीकजी काशी सूं आपरी पढाई पूरी करर पाछा बीकानेर आया तद उणां मोहता मूलचन्द विद्यालय में प्रधानाध्यापक री नौकारी सिकारी। इणरै बाद बै बीकानेर रै महकमा खास में अेक पदाधिकारी री हैसियत सूं गया। पण अठै आयां पछै उणां रौ स्वास्थ्य खराब रैवण लागग्यौ। महामना पं. मालवीयजी रै इसारै सूं उणां बा नौकरी छोड दी अर स्वतंत्र संपादन रै काम में लागग्या। केई दिनां पछै स्वास्थ्य में सुधार हुयां बाद उणांनै बिड़ला कालेज, पिलाणी में सर्विस मिळगी। बै कालेज में बाइसप्रिंसिपल रै औहदै ऊपर लाग्या अर जीवण भर इण ही पद ऊपर रैया।,

श्री पारीकजी सफल संपादक रै साथै-साथै मौलिक सर्जक भी हा। श्री बिड़लाजी रै बतायै कथानक ऊपर उणां बौळावण नांव रौ अेक नाटक लिख्यौ। इण नाटक में वर्णित विषयां नै देख्यां पारीकजी रै अथाह ज्ञान रौ पतो चालै। इण अेकांकी नाटक नै उणां दोय तीन बार अभिनीत भी कियौ। इण अभिनय ने देखण सारु दूर-दूर रै गांवां अर ढाण्यां रा लोक आवता। राजस्थानी-भाषा री गैराई नै देखर श्री बिड़लाजी राजस्थानी पुस्तक माळा री थरपणा श्रीपारीक जी री सलाह सूं करी। इण ग्रंथ-माळा में श्रीपारीकजी रा गद्य-पद्यात्मक राजस्थानी ग्रंथ छप्या।

श्री पारीकजी राजस्थानी भाषा रा प्रबल हिमायती हा। उणां आपरै अनेक निबंधां में राजस्थानी भाषा, साहित्य अर कवियां रौ सांगोपांग परिचय दियो है। आप ग्रंथा रै प्रस्तुतीकरण में जितरा उत्साही हा, उतरा ही उणांनै आछी-आछी संस्थावां सूं प्रकाशित करावण री कळा में भी माहिर हा। वेलि रो प्रकाशन हिन्दुस्तानी अकादमी, ढोला मारु रौ प्रकाशन काशी नागरी प्रचारिणी सभा अर

राजस्थानी लोक गीतां रौ प्रकाशन हिन्दी साहित्य सम्मेलन करियो। अै सगळी संस्थावां भारत री मानीजियौड़ी संस्थावां है।

कळकत्तै सूं उण दिनां राजस्थानी री साहित्यिक पत्रिका "राजस्थान" प्रकाशित हुया करती। बा केई कारणां सूं बंद हुयगी। पारीकजी इण बात सूं घणा दुखी हुया। उणां इण पत्र नै पाछौ चालू करावण रो प्रयास करियो, जिण में उणांनै सफलता मिली, पण संपादन रौ भार कुण झालै। छेवट श्री पारीकजी खुद इण भार नै आपरै कांधां ऊपर लियौ। राजस्थान रै नामी विद्वानां नै पत्र रै संपादक अर परामर्श मंडळ में सामल करिया। पूरी सज-धज रै साथै अंक प्रेस में गयौ। अंक रा आधा पाना छपग्या अर आगै री छपाई चालू ही। इणहीज टांकणै श्री सूर्यकरणजी पारीक नै न्यूमोनियारी बीमारी जकड़ लियो अर दिनांक १६ फरवरी, १९३९ ने रात रा अेक बज्यां उणांरौ हंस उडग्यौ। इण दिन विक्रम संवत १९९५ री फागण वदि प्रथम तेरस गुरुवार हो। इण वखत श्री पारीकजी री उम्र फकत पैंतीस वर्षा री ही। अै आपरै परिवार में धर्मपत्नी रै अलावा दोय बेटा अर दोय बेटियां छोडर गया।

पारीकजी अेक युगांतकारी महापुरुष हा, पण उम्र बहुत थोड़ी पाई। अै जे दस-बीस वर्ष और जीवता तो वर्तमान राजस्थानी साहित्य रौ इतिहास और तरै सूं लिखीजतौ। पण राजस्थानी रै भाग में अेहड़ा चमत्कारी महापुरुष कद मावता।

इण पोथी रै प्रस्तुत करण में स्वं श्री सूर्यकरणजी पारीक रै छोटै पुत्र श्री कृष्ण शंकर पारीक आपरी सगळी संकलित सामग्री उपलब्ध करवाई अर इणांरा ही संबंधी श्री ओंकारश्री पारीकजी रै परिवार री बहुत झीणी सूचनावां म्हनै बताई। इण खातर अै दोनूं महानुभावां रौ हूं घणो आभारी हूं।

115859
11/11/2004
SHIMLA

राजस्थानी भाषा, भारतीय आर्य भाषा परिवार री एक सबळी सदस्या है। इणरी उत्पत्ति नागर अथवा गुर्जरी अपभ्रंश सूं मानी जावै। औहीज कारण है कै राजस्थानी अर गुजराती भाषावां एक दूसरी सूं रळती-मिळती लागै। सतरहवीं सदी रै अंत तांई ऐ दोनूं भाषावां समान रूप सूं विकसत हुवती रैई। इणरै बाद, अै दोनू भाषावां आपूआपरी क्षेत्रीय विशेषतावां नै लैयर न्यारी-न्यारी हुयगी।

राजस्थानी भाषा रो औ नांव घणो पुराणो कोनी। इण भाषा नै औ नांव देश रै स्वाधीन हुयां रै बाद मिळयो। इण सूं पैला इणनै मरूभाषा, मरूभूमभाषा, मारू मारु, मारवी, मरूप्रदेशीय-अपभ्रंश आदि नांव मिल्या हा। राजस्थानी भाषा री खुद री च्यार उपभाषावां है – मारवाड़ी, ढूंढ़ाड़ी, हाड़ौती अर मेवाड़ी। पण साहित्य-सर्जन में प्रमुखता मारवाड़ी ने हीज मिली। आज तांई रो जितरो साहित्य मिळै, बो सगळो'र सगळो मारवाड़ी रो हीज है। इण भाषा नै बोलणियां री गिणती प्रवास्थां नै भेळर सात करोड़ रै अड़ै-गड़ै कूंती जावै है।

सतरहवीं-अठारहवीं सदियां राजस्थानी-साहित्य रो सुवर्णयुग कैयीजै। इणमें राजस्थानी साहित्य री च्यार शैलियां विकसित हुई। प्रथम चारण शैली (डिंगळ), दूसरी भाट शैली (पिंगळ), तीसरी जैन शैली (लोक शैली) अर चौथी सधुकड़ी शैली। इणां च्यारूं शैलियां में बहुत-बडी मात्रा में साहित्य रो सर्जन हुयो। डिंगळ-गीत तो चारण-शैली री एक अेहड़ी विशेषता है, जिकी संसार री किणी भी भाषा में नहीं मिळै।

प्राचीन राजस्थानी साहित्य रै अलावा वर्तमान में भी राजस्थानी साहित्य री सगळी विधावां में मोकळो साहित्य प्रकाशित हुयर लोगां रै सामनै आयो है, अर आज रा साहित्यकार लगातार साहित्य रै सर्जन में लाग्योड़ा है। राजस्थानी-भाषा री आपरी व्याकरण, छंदशास्त्र, लक्षणग्रंथ अर शब्द-कोश है। एक विकसित भाषा में जिकी विशेषतावां हुवणी जोईजै, बै सगळी राजस्थानी भाषा अर साहित्य में मौजूद है। राजकीय प्रश्रय मिल जावै तो राजस्थानी भाषा किणी भी भाषा सूं कम कोनी।

पन्दरां रिपिया

Library IIAS, Shimla
RJ 817.509 2 P 217 M
00115859

ISBN 81-7201-791-X